









ON NOT

গোলশনেআন্তারনামীক গাবসা গ্রন্থ হইতে সম্বলিত।

কলিকাতা।

াঙনং বলেলস্বোয়ার জীরামনর্বন্ন ভট্টার্যাল মুজিত ও প্রকাশিত।

11

.

\$\$08 ald 1





ধর্মণথে পদস্থাপনাথবি উচ্চতন লকা ভূমিতে শমুণস্থিত হওয়া পর্যন্ত সাধক্তে মানা অবস্থা ও নানাভাবের ভিতর বিরা চলিতে হয়। এ সৰল অৰুকৃদ ও প্ৰতিকৃল, হুই অবস্থা আছে। बक मिर्क ब नकन चवहात खेरहासन क्ष অশঃ দিকে অপ্রয়েজন। উক্ত লক্ষ্য ভূমি লাভ कतिवाद कता छाहाद धारतांकर, धनाचा कधा-রোজন। প্রকৃত সাধক সমুদর অবস্থার সংক পৰে সাক্ষাৎ করেন, পরে সমূদরকে অভিজ্ঞাদ করিব। সমুদ্ধ শব্দা ভূমিতে উপনীত হব। ইবার কোন একটিতে চিত্তস্থত করিয়া রাখেন

না। বেমন কেছ গৌধুনের কেতা করিল। ভাহার উচ্চতম লক্ষা কৃটি প্রস্তুক করিয়া ভক্ষ করা। বীজ বপনের পর পোধুমের অঙ্কুরোদাম হয়, তৎপর অন্তুর বুল্দ প্রাপ্ত হইরা শ্সাপুঞ্জ প্রস্ব করে। অনন্তর কর্তন করা ও বিচালি হইতে গোধ্ম -িফাশিত ক্লা, অবশেষে (शाधुमतक खक्रियक्क कविया काँठा यख निष्ण-यन शुक्त हुन कता, शहत कनमश्रवादन ऋतिका প্রায়ন্ত করা। দেখ বীল বপন অব্ধ কৃটি গ প্রস্তুত হওয়া প্রতি কত কবস্ত্রের ও ভাবারের শটিল: ইংার কোন একটি অবস্থা পরিস্তাাপ **कांब्रल कृति श्रञ्ज ह**हें एक शादाना। छेशांबर-**डेक ममुत्रः अ**वश्. : मध्यहेर व्यवशाक । . किस (महे मकत अवदार वक्ष शांका: लक्षा निक्रिक শাখাত। এইরপ ম্ধিক্কে এক ২বস্থা ইইডে **শ্ৰম্মান্ত চলিয়া মাইতে হইতে ' উন্নতিত প্র**

উন্ধাতি লাভ করিতে হইবে। তবে লক্ষ্য ক'নে উপনীত হওরা যাইবে। নচেৎ ঠাঁহার পথে পড়িয়া থাকিতে হইবে। যদি সাধক বদ্ধ চেটার হার উক্ক না করেন, সাধন কমন ও অন্তাপের হার বদ্ধ করিয়া রাধেন, কবে উচ্চ লক্ষ্য ভূমি যে ঈশ্বর বর্শন তাঁহার মত্তরে পেকাশ পাইবে না। সহস্ত্র সক্ষে ভ্যোতি ও ক্ষকার পথে প্রাপ্ত কওয়। সম্পর্কে ভাতিক্রেম করিয়া সাধক কক্ষা ভূমিতে উপনীত কন।

বিশ্বাসীর জীবনদর্পণ।

ুবিশাসী বিশাসীকৃলের স্বর্পন। প্রথম বিশাসী উপযুক্ত আচার্য্য; ছিতীয় বিশাসী প্রাকৃত সাধক। ইয়ায় উলাহত্তপ এই ;--ব্যবন কেই দর্পন ক্ষে ধারণ করিয়া নিচের অবয়ব তাহাতে অবলোকর करत ज्थन तम जाननात स्काप वा विक्रम स्मिष्ट थाक । विक्रम पूर्णन कवित्म खाशाब पुत्रीकार्य १६ छ। करता महे विक्रम चाकाविक इहेरन ত্ৰ:খিত ও পজিত হয়। এই প্ৰকাৰ প্ৰকৃত माधक यथन छेन्नड आहार्रिय महबारम श्रांकन । ভখন নিজের সমুদর ভাব গতি আচার বাৰ-ৰার আচার্য্যের ভাব গতি আচার বাবহারের মহিত তুলনা ও পরিমাণ করেন। বাহা অমুরপ প্রাপ্ত হন তাহাকে পুক্র জানিয়া ঈশ্বরকে ধনা: योग (पन, धार: योहा विभव्नी व्यवस्थान তাহাকে কুৎদিত জানিয়া আনুগড়া ও বাধাতার দারা তাহার দূরীকরণে যথাশক্তি যদ পাইরা बारकन। जाहा नित्राहुक हहेता भाजागा, यहि কলক থাকিয়া যায় যাধক ছু:খিত ও লজ্জিত হন। धरेक्र न क्: व ७ न का व चवश बहित्व साधर कत

বিরূপ স্করণে পরিণত হর। অভএখ বেমন
বাহ্নিক অবস্থা দর্শনের কারণ দর্পণ, ভজ্ঞপ
আন্তরিক অবস্থা দর্শনের কারণ উন্নত আচার্য্য।
এই যে দর্পণের দৃষ্টান্ত প্রদর্শিত হইল, তাহাতে
দুখাবলোকনে যে উপকার হর তব্যতীভ ভাহা
দারা অন্য কোন কার্য্য হর না। কিন্তু উন্নত
আচার্য্যের ও গুরুর প্রসাদে ও অনুগ্রহে বচনাতীত
কল্যাণ হয়।

शुक्रमिरशात मण्लाक ।

ধর্মপথের নেতা গুরুর সঙ্গে শিরে।র সপ্তর দেহের সঙ্গে ছারার সম্বন্ধের ন্যার। অর্থাৎ ছারা ক্ষেন অত্যাধীনা, দেহামুগাধিনী, অংধাবর্ত্তিনী, শিব্যের সম্পর্ক ও গুরুর সঙ্গে তত্ত্বপ। কথিত আহে শুই মন এক হইরা পর্বত্তকে বিচুর্ণ করিতে

भारत ।" बरे कृदे मानत बक यन एकत मन, विकीय मिरवाद यन । अर्थक भिरवाद शक्त कीवन धवः ভাষার কুভার সকল, অথবা ধর্ম পথের আব-अब श्र विश्व अकल । धारे कथात्र छार्श्या धारे (व ৰ্থন শিষ্য বিশুদ্ধ প্ৰেম সহকারে শুরুর হল্তে चार्यारमर्ग करवन । चार्यना इ क्षत्रक चम्ब উহত অদম্যের সলে মিল্রিড করিয়া রাবেন, তবন গুরু অন্তরের সহিত শিষ্যের মান্সিক অবস্থার উন্নতির দিকে দৃষ্টিপাত করেন। তদবস্থার শিষ্যের निकृष्टे जीवनक्रम शर्वां छ कृ जाव मकन हुर्ग हरेशा शात । প্ৰের বিশ্ব বিদ্বিত, আবরণ সকল ছিল कित रहं । बरे छेकित विभवील बक मन विक बुहें मन हब, (वबन क बिड बाह्ह 'बुहें मन हल्डा चनाच वाठीक महर।" चारारे हरेला बारफ। 'बहाल (म'ब्राड इब बक बन इहे बन इन्द्रा क्रिन वदर जमलका किन्द्र अने अने क्रोम হাইবার তাৎপর্যা দিবিধ ইচ্ছা প্রাপ্ত হওয়া। ইচ্ছা আত্ম প্রকাশের সময় মনের আকার ধারণ করে। হিবিধ ইচ্ছা হইলে অকাত ও অসিদ্ধি বাতীত অম্য কিছুই ফল হয় না।

শিষোর কর্তবা।

শিব্যের কর্ত্তব্য যে আপনাকে होन होन জানিরা পথ প্রশ্বক শুকুর আশ্রেরর শ্বনা আন্তঃ ক্রান্থে প্রার্থী ও অনুরামী হন। ভাষাতে ভাঁহার ছুরবস্থার প্রতি গুরুর মনে হঃথ হইকে ও ভিনি দরা করিকেন। সেই দরাতে জনেক ,কল্যাণ ও উপকার সাধিত হইকে। ইহার ছুইান্ত এই ;— একটি কলস জলপূর্ণ জন্য একটি জলশূন্য আছে। যদি কাহারও ইচ্ছা হর যে পূর্ণ কলস হইতে জলের অংশ গ্রহণ করির। শূন্য কলসকে জল পূর্ণ

करत, जर्द करतत क्या मृता कतरतत बचक ব্যবৰত করাইয়। পূর্ব কলসের নিকট স্থাপিত ও পূर्व क्वारम्ब मखक मिहे भूना क्वारम्ब प्रस्टक्त উপর নমন করিতে হইবে। তাহা হইলে পূর্ব कुछ जरने बेखर भूगा कुरखन गर्छ क्रम वर्षन করিরা তাহাকে পূর্ণ করিবে। এইরপ বে শিব্য শ্নাাথা; তাহার উচিত বে গুরুর পূর্ণ আত্মার নিকটে অবনত ভাবে অবস্থিতি করেন। তাহা क्रेटन जिनि चनीय धर्म वातिएक अर्व क्रेट्वन। এইরপ নিষম চলিয়া আসিয়াছে হে জলখামী काशांक पूर्व ७ काशांक भूना बार्यन। व्यावात्र मुनारक भूवं करतन। जिनि बहे ध्वकांत्र किना कतियां शांदकत ।

छान।

कान । दावर व्यवकृष्टे कान ७ डे०कृष्टे कान । व्यश्कृष्टे कान, यथा-मनुषा (कान विष्राप्त कान बार्य, किन्न जारांत्र मृत जन-रेश विकारन হইতেছে এবিবরে অজ্ঞান। ইহাকে জ্ঞান মাত্র বলা বার। ইহাই অপকৃষ্ট জ্ঞান। পণ্ডিত হই-রাছ, কিন্তু তোমার এই জ্ঞানটি নাই যে তুমি কে ও কোথা হইতে আদিলে, এবং কোথার आह । উৎकृष्ठे कान, रक्षा-मनुवा कान विव-रत्रत्र कान दार्थ ७ रमरे कारनत्र मूल एट्यू त्म कानी। এই कानरक कानायुकान वना बात । अरे क्रेरतन मुद्दान धामिंक र्रेरकरहा ক্ৰা. এক ৰাজি বাহািক জ্ঞানে উন্নত-ভিনি भमार्थकान त्रार्थन बदः कारनन द जामि कानी। किंद्र (मेरे कार्त्र मनक कांक नरहन (व. हेरा

कि खकात, देश अकुछ कार्यात छेनरमांनी ना व्यक्तियांगी। जाहात धरे स्त्रान वाशक हे स्त्रान। धरे बाक्ति वाननारक छात्री विवश श्रीकात करवन क काननार धरेक्न कानक (अर्ह विदा नवा कब्रिया बाटकन। किन् छिनि वथन चीत्र कारनद श्रक्ष व्यक्त व्यक्त इन त्य वह कान वाधिक कान बाज, चारुदिक कान चनाविध, वाहा क्षक्रक कार्यान्यसात्री छाहाहे चास्त्रिक खान, कथन छै। हात्र व विषयती जाना कारनव छेक ववना । देशारक स्थानायुकान क्या बाह्र। এই स्थानायू-कान (महे ब्राक्टिक चश्हादिव ज्वि हहेर्ड मृद्र गहेश शत्र । जावात वहे कानाकुकाम जल-कडे छेरक्टेल चार्छ। छाहात छेत्रस्ति चम्बा ভূষি ও বহ সোপান। বাছিকজানে ৰরং विश्ववद्भार वाधार्थिक छात्व छोहाइ जातक ৰুষ্টাত পাওয়া বার। বধা এক ব্যক্তির আধ্যা-

ত্মিক জ্ঞান আছে, আধাজ্মিক কৰ্মাভুসাৰে ভাষার তাহা লাভ ছইরাছে। বলা বাইডে পারে ভিনি জানী, কিছ বধন তিনি জানের मृत उच्च काराम मा, अदः काराम रव देशह कान, हेशहे পूर्व खान वाहा जानि नांच कदि-ब्राहि, এডमरभक्त खबिक बाद क्रेटिक शाद ना। এই जाति के कियान बात करता अक-धर लाहात धरे चाराशिक स्नानक चनकड स्नात्मत्र कृतवहीं। किस डिनि यथन मेथेड श्राप्ति चीत्र स्राप्ति मुन्डस् वर्गेड स्व (व. आयांव कान कानवानिव कविका बाव, প্রকাপ জান সমূত্রের কুরাংশ মাত্র, এইকণ ও অপরিসীম জান সমূবে বহিয়াতে, ক্রমশঃ ভাতা नीफ कतिएक ब्रेटर ज्यन बरे क्षकांत्र स्नान ভাঁখাকে উপরি উক্ত জানের ভূমি হইতে অঞ্জনর . कतात्र । अवश्वित स्नानहे ट्यार्ट स्नान : हेहादक

[32]

আনাস্থজান বলা বার। পূর্বের ভাঁহার যে জান ছিল ভাহা জান যাত, বা অণ্ডুট জান।

था अ मः छ।।

खन । मःखारक खर्डन वह रव, खन नमार्स चिकि करत. यथा मता, (कामनका, कक्रमा देकामि, भरका भरक अनार्थक वृक्षात्र। **এहेक**न (स्था উচিত বদি কোন শব্দ এরপ হয় যে তাহার अञ्च क (कान खन डेशनस इत्र ना, वदा छाहा গুণের সংগ্রাছক হয়, তবে তাহাকে মৌলিক भ्रास्त्रा वना वात्र । यदा "बाह्य" : ध्वः यनि द्वान শব্দ এই প্ৰকাৰ হয় বে তাহাৰ অৱভূতি ঋণ অমুভূত হয়, তবে তাহাকে গুণগত সংজ্ঞা লখা बाह्र। बुक्षा ;- मतानु, कुलानु हेकामि। कथन कथन खनगठ मरका मिनिक मरकार नाव ঋবদ্বত হয়, বৰা "আলার আশ্রের লইতেছি" খলে " দরাময়ের আশ্রয় গইতেছি " উক্ত হইয়া थाक। काना कर्तवा (य यथन धन स्मेनिक সংজ্ঞার সহিত মিলিত হয়, তথন সেই ওণের काव रहेरक खनगंज मःका छेननक रहा अञ्चल क्षात ভाव बाज शहन कतिक इहेरव। यथन ৰলা হইবে " আলার কুপা ও শক্তি ⁸' তথন वाध्यांक मन्दि योगिक मःका व्यवनिष्ठे नक গুণ। এই গুণ অর্থে গুণগত দংজ্ঞার ভাৰ প্রকাশ পার। বথা;—তিনি রূপালু 🖝 क्रम लामानी हेलानि। अवः यथन ७% मधानुः क्रुशान रेजानि बना दहेत्व, ज्यन छेहा स्थ-(तत्र नःका विनिश्वा व्यानित्। अहे अक अक्षि দ্জোর সভ্ত এক একটি খণও অমুভ্ত E# 1

ঐশবিক জ্ঞানের প্রকাশ ভূমি।

প্ৰত্যেক ৰাজ্যি সাধারণ ভাবে বা বিশেষ ভাবে बैचदिक श्वरनद श्रकाम ভृषि। जाशाहन ভাবের व्यर्थ को एवं केवरत्रत नत्त्वन ममुद ममूरगुत बरश কোৰ:ও ৰা বিস্তুত ৰূপে, কোৰাও বা সংখ্যা-চিছ ভাবে, কখন ও কোমলতা, কখনও তেজ, কৰন বাকভাবে কৰন গুপ্ত ভাবে প্ৰকাশ পায় ও ছিতি করে। বিশেষভাবে প্রকাশিত হইবার **অর্থ** এই যে ঐশবিক কোন বিশেষ গুণ এক विकटल वित्यस्य मांच करत्र। यथा ;-- (काम ব্যক্তিতে কোমণতা, কোন ব্যক্তিতে তেজ केक्सानि विस्पर ভাবে नांकल हर। व वाक्रि कामनजा अर्थ दिर्गक्य नाज कतिबाह्न, সর্বাদা ওাঁহা ছইতে কোমল ভাব প্রকাশ পার। ষ্ট্ৰদুশ ব্যক্তিৰ সম্বন্ধে ৰকা মাইডে পাৰে,ৰে জাঁছাৰ

[30]

দ্বীর কোমল। এই প্রকার কাহারও দ্বীর ডেক্সী।

স্বৰ্গীয় ভাবের প্ৰকাশ।

স্বরণ গণের প্রকাশ ভূমি ও গুণ ক্রিয়া ও गक्षात्व क्षेत्रां कृति। धरे मक्न मधावत्व कीवरम क्यन शहराव मीश करान कथन श्वराव मीशिक्राण कथन क्रिवाद मीशिक्राण প্রকাশ পার। স্বর্গনত দীপ্তি প্রকাশের লকণ এই যে সাধক অভিতীয় সকপের অকাশে নিজের সমূপ গুণ ক্রিয়া লকণ অভার प्तर्भन करतन। धरः खनम् मीशि'क्षकारमद लक्ष वहे रा माधक श्रावकीय श्रक्तालय **श्र**ालय ভিতৰ নিজের ও অন্যের গুণ সম্ভাকে অভার দর্শন করেন। তেজ ও কোষণতা প্রকাশিত

र्हेर्स बहे इहे अर्बर छेपत्र मिहे व्यक्तित यक्त ষ্টতে হইল বলিয়া জানেন। তিনি সেই श्वानक मर्गन ७ क्षकाण इति चक्रण मर्गन करतनः शाधक व्यापनात मर्थन अवन ७ वहन दमरे व्यक्ति ভীয় শ্বরূপে প্রতিষ্ঠিত বলিয়া বিশ্বাস করেন। कियामनक नीशि अंकारनंत्र नक्तन अहे रव সাধক অভিতীয় অরপের ক্রিয়ার মধ্যে নিজের ও অন্যের ক্রিয়াকে হারাইয়া ফেলেন। বাঁহা হইতে কোন ক্রিয়া প্রকাশ পার, তিনি দেই জিয়ার মূল অদিতীয় অরপে অবস্থিত বলিয়া ৰিখাস করেন, ক্রিয়ার কর্তাতে নয়। গুণ ও ক্রিয়ার দীপ্তির ফল এই বে লোকের প্রশংশা निका मार्थक्त्र निक्षे जुना द्या पूर्वन अवन ৰাক্ শক্তির কর্তা ঈশ্বর হন।

" आमि त्रहे भनार्थ देखेबरक नर्नन कविनाम, कारा बाकी किहूरे स्विनाम मा" धरे ऋत এই মহাবাকা প্রয়োজিত হয়। লাক্ষণিক দীপ্তি श्रकारमंत्र नक्रन धरे (य माधक नक्रनक रुष्टे বলিয়া জানেন, ক্রিয়াকে অবস্তু ও গুণকে অবস্ত দর্শন করেন, ক্রিয়া ও গুণ হ্বরূপে প্রতিষ্ঠিত দেবেন। "আমি ঈশ্বরকে দর্শন করিলাম अना किছूरे (पिराम ना" धरे शान रेश বলা হয়। উপরিউক্ত সমুদর দীপ্তির মধ্যেও माभक पर्मन छानक विलाभ करवन ना, किन्त ঈখরের একত্বজানেতে আপনার দর্শন জ্ঞান হাবাটয়া ফেলেন। একত্ব জ্ঞানের অবস্থা **बहे (य. नाधक पर्यंत ए अवगटक एएएयन ना,** অদর্শন অপ্রবণকেও জানেন না। তুমি তাঁছাতে বিলুপ্ত হও, এই একত্ব ও মিলন, বিলুপ্ত হওয়া-কেও বিলুপ্ত কর-এই পূর্ণতা।

[36]

ভাবাভাববিষয়িণী চিন্তা।

ভাব ও অভাব বিষয়ের চিন্তা দিবিধ। আয়তীভূত চিস্তা ও অনায়তীভূত চিস্তা। আহ ত্তীভূত চিস্তা এই যে প্রতিক্ষণ ঈশরাভিরেক বিষয় সকলকে দুরীক্বত ও ধ্বংস করিয়া ঈশ্বরকে প্রতিষ্ঠিত ও অবিনশ্বর বলিয়া জানা। অর্থাৎ ঈশরতে সমাক্ ভাবাত্মক 🗢 অনা বস্তু সকলকে অভাবাত্মক রূপে দর্শন করা। "প্রতিক্ষণ" এই জনা বলা ছইল যে, প্রতিক্ষণ এক জগৎ বিলুপ্ত হয়, অন্য জপৎ প্রকাশিত হইয়া থাকে। যাহা ক্ষা হয়, তাহা দুরীকৃত ও অলক্ষিত হইল। ভৎপর বাহা প্রকাশিত হয় তাহাকে ও দূরীকৃত ও ध्दश्म (मथा जाउगाक। (कनना ठाहाउ नेप-এরাতিরেক বস্তু; কেবল ঈশ্বরকেই অবিনশ্বর প্রভিষ্টি ভাষা বিধেয়। তিনিই বিচলিত ভাব ছইতে বিমুক্ত। বে পণ্যস্ত এবিষয়টি ধর্মধাতি-

কের হাদরে স্থায়ীনা হয় ও জগৎ অবস্ত হটয়া না যায়, সে পর্যান্ত এ কথার ভাবের আলোচনা করা প্রয়োজন। দিতীয় প্রকার অনায়ভীভূত চিম্বা, ইহাতে চেষ্ঠা বাঙীত সাধকের অস্তরে প্রতিক্ষণ ঈশবাতিরেক বস্ত স্বতঃ দুরীকৃত ও সবা-ভ্ৰত্য। তথনও প্ৰেণিক রূপ বস্তু সকলের আবিৰ্ক্তাব ও ভিরোভাব হইয়া থাকে, কিন্তু সেই আবিভাৰ ও তিরোভাব ঈশবেতে প্রতিষ্ঠিত। তথন ঈশ্বর অনুক্ষণ অবিচলিত ও অবিনশ্ব। অত এব যাহা ঈশরাতিরেক বস্তু, তাহা প্রতিমূহুর্তে নিজের ভাব রূপ রসনায় বলিয়া থাকে যে আমি মবায়েৰ ও আমি কিছুই নই। যাহা বস্তু ও ও অবিনশ্ব তিনি ঈশ্বর, এই উক্তি সমুদন্ন স্ষ্টিতে विषासान। এक है धृलिक ना এই ভাববিशीन নহে। এ স্থানে জানা আবশ্যক যে বিশ্বপতির গভিপ্ৰায় এই প্ৰকার প্ৰকাশ পায় যেন

পাণ্ডের লক্ষ্য সিদ্ধ হয়। ঈশ্বর বাতীত বল্ত অবাত্ব ও বিনশ্বর, কেবল ঈশ্বরই বাস্থব ও অবি-নশ্ব দর্শনীয়। আয়তীভূত ভাবাভাব চিস্তাকে এই অনায়ত্তীভূত চিন্তার সারাংশ বলা যায়। বলিতে কি এ বিষয়ের জ্ঞানোদয় হইলে ক্রমে অসতা হইতে সতা উজ্জল রূপে প্রকাশিত হইয়া পড়ে। যথন শক্তির উন্নতি সীমাবদ্ধ নত্তে ওপন প্রত্যেক ব্যক্তি স্থ স্থান্থসারে ইয়ার প্রকাশ উপলদ্ধি করিয়া থাকেন ও উন্নতি লাভ করেন।

ধর্মপথে যাতা।

ধর্মবাত্রার অর্থ জীবনের সংস্করণ ও অসলগুণ সলগুণে পরিণত হওয়া। যে পরিমাণে অসলগুণের বিশাশ হয় সেই পরিমাণে সল্গুণ লাভ হইয়া কোথ। যথন কোন যাত্রিক সল্গুণায়িত হ্ন তথন তিনি মহর্ষিদিগের গুণ প্রাণ্ঠ হন, বাত্রিক মহাধগুণ লাভ করিয়া মহাপুরুষের গুণে ভূষিত হন। মহাপুরুষের গুণ প্রাণ্ঠ হইয়া ঐশ্বরিক প্রকৃতি ধাবণ করেন, তাহাতেই যাত্রিকের আজ্বনাশ হয়। আজুবিনাশ হইলেই তিনি ঈশ্বরে অনন্ত হীবন লাভ কবেন।

ধর্ম ।

বহু লেখা পড়ায় ধর্ম হয় না, ব্রতোপাস নায় ও হয় না। ঈশ্বরবিহীন যাহা তাহাই সংসার। সেই সংসারের বিচ্ছেদ হওয়া ও তাহা হইতে নির্লিপ্তি লাভ করা এবং এই বিচ্ছেদ নির্লিপ্তিতেও নির্লিপ্ত হওয়া ধর্ম। অন্যথা ধর্মের অপরিপক অবস্থা। বিচ্ছেদ নির্লিপ্তিতে ও সংসার থাকে। যে ব্যক্তি সাংসারিক বিচ্ছেদ ও নির্লিপ্তির স্পর্জা করে প্রকৃত পক্ষে সে তাহাতে বদ্ধ। তাছাকে এই কথা বলা যাইছে পারে থে
তুমি বিচ্ছেদ ও নির্লিপ্তি লাভের গর্ক করিব।
তাহাতে কেন বদ্ধ রহিয়াছ ? ভোমার এই স্পর্দ্ধ।
লিপ্ততাকে প্রমাণ করিতেছে। যে ব্যক্তি নির্লিপ্ত
ভাহার স্পর্দ্ধার প্রয়োজন কি ? হে ঈর্মার,
আমাকে এই সমৃদ্ধ কুচিন্তা ছইতে মৃক্ত রাখ।

করুণা ও আবরণ !

লববের করণা সত্য প্রকাশের কারণ।
অন্তর ও করণাজ্যোতি এই হুইয়ের মধ্যে
আবরণ না থাকিলে সত্য লাভের অন্য অভরার
নাই। আবরণ বিদ্রিত হইবামাত্র উক্ত জ্যোতি
অবশ্য অন্তরে প্রকাশ পার ও সত্য উন্তাসিত
হইরা পড়ে। বেমন কোন বন্ধর সম্পূর্ণে দর্পণ
ভাগিত, সেই দর্পণ ও বন্ধর নধ্যে আবরণ থাকিলে
তাছাতে বন্ধর প্রতিষ্কিতি ছুইবেনা।

যধন আবরণ অপসারিত হয় তথন প্রতিবিশ্ব প্রকাশিত হইয়া থাকে : কেননা তাহার প্রকাশের প্রতিবন্ধক যে বস্তু ও দর্পণের মধ্যে ছিল তাহা **এই क्रग विमृति उ इहेश्राह्य । देखि शृर्श्व मर्श्य** সমুখীন ভাবে বস্তু ছিল, কেবল প্রতিবন্ধক ছিল विनिश वक्क लकाम भारेट भारत नारे। मर्भाग वक्क প্রকাশের নানা প্রতি বন্ধক হইতে পারে । যথা:-দর্পণ মলাযুক্ত হইতে পারে। নির্মাল পরিষ্কৃত থাকিলেও অন্য কোন আচ্চাদন সেই বস্তু ও দর্পণের মধ্যে ব্যবধান হটতে পারে। অথবা পরিক্ষত আছে আবরণও নাই, কিন্ত দর্পণের মুধ সেই বস্তুর ঠিক সমুধ ভাগে না থাকিছে পারে। এইরূপ অন্তরের আবরণ ও মলিনতা ক্রণাজ্যোতির প্রতিবন্ধক হট্যা সভাকে দূরে রাখে। কোন কোন অন্তরে অন্তরায় আচ্ছাদন সকল আছে, কোন অন্তরে তাহা নাই।

[88]

(लाकमर्भन।

ৰখন কোন ৰাজি কাহাকে দৰ্শন করে তখন তাহাতে ছুইটি ভাবের একটা ভাব থাকে, যথা দৃষ্ট ব্যক্তিকে হয় আপনা অপেকা শ্রেষ্ঠ বোধ করে, নম্ন নিকুট ; শ্রেষ্ঠ কানিলে উচিত যে অন্তরে वेद्यादक श्वान अनान ना करत, वेद्या अठाख नीठ-ভাব। बद्रः अनारक শ্রেষ্ঠ দেখিয়া সমং শ্রেষ্ঠ হইতে ও আপনাকে তদ্রপ ইচ্চ অবস্থায় আন-রন করিতে চেষ্টা করিবে, নিরুষ্ট দেখিলে গর্ব্ব করিবে না, গর্ব অংশ্ম ও শান্তির কারণ, আপনা चार्यका चनाक निकृष्टे मिथिल श्रामधंत्रक धनावान नित्त. ७ श्रीय अदः छाव मृत्त त्राथित, নিজের সমুদায় উন্নতি ঈশবের প্রসম্ভায় ও অমুগ্রহে জানিবে। তোমার বাহা আছে তাহা लब्रामधारत्व मान विनया श्रीकात कदिरव। ষদি তুমি আপনাকে লক্ষ্য কর তবে তুমি একান্ত বিমার্গচারী অবিষ্ণাকারী এরপ , জানিবে। তিনিই মহাজন যিনি আপনাকে এপ্রকাব পদে স্থাপন করিয়াছেন বে, কোন ব্যক্তিকে বা কোন বস্তুকে আপনা অপেক্ষা নিরুষ্ট মনে করেন না, বরং সকলকে প্রেষ্ঠ বলিয়া স্বীকার করেন। আপনাকে অবেষণ করিয়া প্রাপ্ত তন না; নিজে কিছুই নন এই বিশ্বাস করেন, এইরূপ হওয়াই সৌভাস্যের লক্ষণ।

मनम् हिन्छ।

মন আকাশের ন্যার; ভাহাতে স্থান্ত নকত সদৃশ; কুচিন্তা অন্ধকার; প্রেম স্থা স্থানীর; গৈর জগৎ সর্বাদা ঘূর্ণারমান। যে পর্যান্ত স্থা সম্দিত না হয়, সে পর্যান্ত আকাশে নকত সকলের উদরান্ত ও অন্ধকারের আবিভাব কইয়া থাকে। কিন্তু যখন ভ্বনপ্রকাশক বিভাব্য প্রকাশিত হয় তথন না নক্ষত্র প্রকাশ পায়, না অন্ধকার দৃষ্টিগোচর হয়। মানসিক অবস্থাও এইরূপ, যে পর্যান্ত মনে প্রেম জ্যোতি বিকীর্ণ না করে সে পর্যান্ত সদসং চিন্তায় আমাবিভাব হয়। প্রেমরবির উদয় হইলে এ সমুদায় বিল্প্থ ক্টয়া যায়, কিছুই ধাকে না।

ভাবাবেশ।

অধিকাংশ লোক কবিতা ও সঙ্গীত শ্রবণে ব্যরূপ আরুই ও মৃগ্ধ হর ঈশ্বর প্রসঙ্গ শ্রবণে সেই রূপ হয় না ইহার কারণ এই যে আকর্ষণ ও ভাবাবেশের সঞ্চরণ সম্বন্ধ ও জাতীর প্রকৃতি অসুসারে হইরা থাকে, ঐশ্বিক বাক্য অতীব শুদ্ধ ও সুক্র বাঁহাদিগের জীবন শুদ্ধ ও সুক্র সেই বাকোর সঙ্গে তাঁহাদিগের সম্বন্ধ আছে. তাঁহারা ঈশ্বর প্রসঙ্গ শ্রবণে ভাবাবিষ্ট ও আরুষ্ট इटेग्रा भरतन. (मेटे मकन लाक महाश्रुक्य ও মহর্ষি। যাহারা জীবনের নৌন্দর্যা ও পবিক্রতা नाङ करत नाहे, अना य मकन विश्वत महन তাহাদের সম্বন্ধ ও সমজাতীরত আছে কাহারা (महे नकन विषदात्र चाताहे चाक्रहे ७ मुझ दत्र। এই সময় ও সভাতীয়তার উচ্চ নীচ অবস্থা আছে, তদনুসারে আকর্ষণ ও মুগ্রতা জন্মে, পৃথি-বীতে এক এক বস্তু এক এক বস্তুকে বিশেষরপে আৰুৰ্যণ করে, শৈত্য, শৈত্য দারা, উষ্ণতা, উষ্ণতা वाता चाक्के रव।

প্ৰেম 1

শ্রেমের অর্থ আপনার ইচ্ছাও অভিস্থিত विमर्कन मित्रा मथात्र हेक्का ও অভিসন্ধিকে নিজের ইচ্ছাও অভিস্কি ব্লিয়া জানা। নানিজের ইচ্ছার বন্ধনে বন্ধ থাকা,না নিজের কোন প্রির বস্ত স্থার নিকটে আশাও আকাজ্ঞা করা। যদি তুমি স্থাত নিকটে উপকার প্রত্যা**শা** কর তবে তুমি शर्थ वक्तान वक्त, मश्रात वक्तान वक्त नछ। अत्रह প্রেম শ্বধোভকারীর হস্তন্তিত শ্বের নাায়। সে স্বকীয় ভাব অভিক্রম করিয়া যায় এবং কর্ভুত্বের রজ্জু স্থার হত্তে স্মর্পণ করে। অপিচ তিনিই প্রেমিক যিনি আপনাকে আত্মগুণ ও সভাব হইতে মুক্ত করিয়া সধার গুণ ও স্বভাবে ভৃষিত করিয়া-ছেন, মথা উল্লিখিত হইরাছে। 'ফিখরের চরিত্রের माग्र চরিত্র লাভ কর। " এই উক্তি এই ভাবের পোষকভা করিতেছে।

আন্তরিক বিকাশ।

আন্তরিক বিকাশ ছিবিধ: নির্মাণ ও অনির্মাণ ৰিকাশ, অত্যাশ্চয় ভাবের সমাগমে নির্বাণ विकास इस. एथा निमध क्रबा, खळान इहेना পড়া ও প্রেমোচ্ছাস হওয়া। অনির্বাণ বিকাশে তত্ত্তান ও সত্ত্যের দার উন্দ্রুক হয়, তদবস্থায় গুঢ়তত্ত্ব মর্শাব্রোধ হয়, সুহরহ বিষয় সকলের সিদ্ধান্ত হইয়া থাকে। কোন কোন সাধকের জীবন ভাবপ্রধান, কাহারও কাহারও জীবন জানপ্রধান। স্ব স্ব প্রকৃতি অনুসারে প্রত্যে-কের আন্তরিক বিকাশ হয়, প্রস্ত সাধনা ও जिभगा विकारणंत्र मृत कांद्रण। माधना नानांविध আছে, স্কুতরাং আন্তরিক বিকাশেরও নানাবিধ काद्रण । विश्मिष विश्मिष विकारण विश्मिष विश्मिष कांत्रराज मध्य, यथा ভारबत मह्म भवरसम्बन-

वादान विरम्य मचक, वर्शा श्रामानात छ्रामि শারণ ভাব বিকাশের কারণ, চিস্তার দঙ্গে জ্ঞানের বিশেষ দল্প, অর্থাৎ ধর্মটান্তা তর্ভিতা সত্যের भात छेन्यारेन करता हैश मार्वात्रण ভारत वना হইল, কিন্তু কখন কখন স্থারণ তত্ত্ব জ্ঞানের এবং िष्ठा ভाবোদামের কারণ হইরা থাকে, বরং অরণ চিন্তাশুন্য এবং চিন্তা অরণশূন্য অভ্যন্ত বিরল। দিশ্বকে শারণ কর এই শারণ চিতার কারণ, প্রত্যেক চিন্তা স্মরণের ফল হটবে, প্রত্যেক সাধকের উচিত যে সাধনের পথ আশ্রর করিয়া थाक्न, राम द थन ७ छ। हात मौमात बहिर्ज् छ না হন, বরং শাংদা প্রভূত যদ্ধ ও বিশেষ চেষ্টা करवन। यथन छेलारमाव नर्ध नम जानन कवि-বেন তথন তিনি যাহা পাইবার যোগা তাহা काँदात बद्धात अवाण शाहेत्व। यादा अकाण পাইবে তাহার জনা যেন তিনি কৃত্ত হন, ও

তাহাব উন্নতির নিমিত্ত যেন সাধনা করেন। বিনি কৃতজ্ঞতার অনুসরণ করিয়া অবিচ্ছেদেও অবি-লম্বে ধর্মোন্নতি দর্শন করেন ও ত্রিবন্নে সফল-কাম হন তিনিই প্রকৃত সাধক।

বাহ্ছেন্দ্রোদি স্বস্থির গুঢ় উদ্দেশ্য।

পরমেশর ছই নরন স্থান করিয়া এই ইঞ্চিত
করিয়াছেন যে সমুবাের উচিত বে এক নয়ন
আশার দিকে ও অপর নয়ন ভয়ের দিকে স্থাপন
করে। এই ছই নেত্রের মধ্যেই বিখাসের অভিমুঝে সরল পথ য়ছিয়াছে। ছই কর্ণের উদ্দেশ্য
এই যে মহুষ্য এক কর্ণে প্রেমের তত্ত্ব অপর কর্ণে
তেজের ভত্ত শ্রবণ করিবে, যেহেতু ঈশ্বর
ক্রমা ও তেজাঞ্জণ বিশিষ্ট। একমাত্র রসনায় এই
ইঞ্কিত বুঝার যে ছিবিধ উক্তি অপ্রশংসনীয়, ছই

কথা বলা কপটের স্বভাব। ইহার সঙ্গে মনের একতার সম্বন্ধ আছে, যথা ' হুই মন হওয়া অলাভ किन नरह। ' अक मन ए वक किन्ता 'वसरत अहे. ইম্বিত ব্ৰায় যে, মহুষ্যের মন ও জিহ্বার ঐক্য থাকিবে। হুই হস্ত সূজনে এই ইঞ্চিত বুঝার (य अक रुख मान ও अक रुख शहन कतिरव। পার্থিব জীবন দান করিবে ও স্বর্গীর জীবন গ্রহণ कतिरव। इटे शामत छेत्कमा धटे रव क्रेश्रतत মঞ্জির দুইপদ ভূমির অধিক দৃর নহে। একপদে সাংসারিক বাসনার পথ অন্য পদে সাংসারিক লক্ষ্যে পর্থ অভিক্রেম কর ঈশ্বের সঙ্গে মিলিত हरेता धरेक्रण व्यक्तिक वारशक्तिप्राप्तित अञ्च ভূত আধ্যাত্মিক গুঢ় তত্ত্ব সকল আছে।

मज्ञद्यभौगट्यज्ञः त्यांत्रं ७ दक्षयः।

-

THE WATER

रेशियान विकास पान के किया है। की किया है।



দরবেশদিগের স্থোগ ও প্রেম।

সঙ্গীতযোগ।

দাধারণের সংকার এই যে মুসলমান্ শাত্রে
সঙ্গীত নিষিদ্ধ। এই সংকার আন্ধিশুনা নহে।
যে সকল সকীতে লোকের চরিত্র কলুষিত হইতে
পারে তাক্স কীর্জন কি শ্রবণ করা শাস্ত্রবিকদ্ধ।
কিন্তু উচ্চ শ্রেণীর সাধকদিপের সাধনার প্রধান
অন্ত্রুল বলিয়া ধর্মসন্ধীত মহম্মদীয় শাস্ত্রে পরম
সমাদৃত হইরাছে। নিক্ট সাধকদিপের জন্য
সন্ধীত নিষিদ্ধ। স্থানী নামক দরবেশ সম্প্রদার
কলীতের বিশেষ পক্ষপাতী। মুসলমান্দিপের
ধর্ম পুত্তক আক্সির হেলারেত নামক গ্রন্থে সঙ্গী-

তের বৈধাবৈধ বিষয়ে একটা বৃহৎ অধ্যায় আছে। বৈধপ্রতিপাদক কিয়দখশ সেই অধ্যায় হইতে অনুবাদ করিয়া দেওরা গেল।

যাহার অন্তরে ঈশ্বর প্রেম প্রবল হইরা মন্ততায় পরিণত হইয়াছে, তাহার জন্য সঙ্গীত প্রয়োজন i হয়তো অন্য অনেক সতুপার অপেক্ষা এই উপায়-वित्र कार्याकात्रिका व्यक्षिक श्रेट्य। याशत कात्राम ঈশ্বর প্রেম সমধিক উদীপিত হয়, তাহার মূল্য অধিক। প্রকৃতপক্ষে এই কারণেই সঙ্গীত স্থানী-দিগের আদরের বস্তু। মন্ততার অগ্নি প্রদীপ্ত করিয়া তুলিতে সন্দীত বিশেষ সক্ষম। সন্দীত যোগে স্থফী-দিগের কাহার কাহার অন্তরে বেরূপ প্রেমমন্ততা সঞ্চারিত হয়,অন্য কিছুতেই সেত্রপ হয় না। স্থকী-গণ সঙ্গীতের প্রভাবে যে স্বর্গীয় ভাব প্রাপ্ত হয়েন তাঁহাকে তাঁহারা ওজন (প্রেমাবেশ) বলেন। অগ্নিবিশোধিত স্বর্ণের ন্যায় সঙ্গীতবোগে স্থী-

দিগৈর অন্তঃকরণ শুদ্ধ ও নির্মাণ হইয়া যাত্র, দলীত ক্লৱে অগ্নি জালিয়া দেয় ও সমুদায় মিল্-নতা নিঃসারণ করিয়া ফেলে। সঙ্গীতে যেরূপ হৃদয়ের উষ্ণতা জন্মে ও মলিনতা নিঃশেষিত হয় অনেক সাধনায় সে প্রকার হয় না। আধাাত্মিক জগতের দক্ষে আত্মার বে নিগৃঢ় সম্বন্ধ আছে, সঙ্গীত সেই সম্বৰ্ধকে এতদুর জীবস্ত করিয়া তোলে व बाबा देशलांकरहेरा धरकवारत श्रशंम करता सकी अवाकुण विरुक्तन रायन, राय देश-লোক সম্বন্ধে তাঁহার কিছুমাত্র সংজ্ঞা থাকে না। তাঁহার সমুদায় ইন্দ্রিয় অবশ হইয়া বায়, তিনি ভূতকে পত্তিত ও মৃদ্ধিত হয়েন।

ঐশবিক সদীতবোগে অফীর এরপ অবস্থা হর যে তিনি কগৎ সম্বন্ধে, মৃত ঈশর সম্বন্ধে একাত্ম-ভাব প্রাপ্ত হয়েন। আগনাকে তিনি সম্পূর্ণরূপে বিশ্বত হয়েন। এমনও হয় যে অগ্নিতে পতিত इंटेरन कें वाद कान थारक ना। धक वाद चाद-রেল হোদেন হুরী গভীর প্রেমাবেশে দৌডিয়া পিরাছিলেন। কাঠে লাগিয়া পা কাটিয়া যায়. ভাহাতে ভাঁহার বোধ ছিল না। এই সকল ব্যাপার প্রেমের পূর্ণ অবস্থার হয়। এই প্রেমা-বেশ স্থলীকে খীর অন্তিত্ব জ্ঞান হইতে সম্পূর্ণ ৰঞ্চিত করে। প্রাতঃ ! তুমি এই মৃত্যুকে অস্বী-কার করিও না.বলিও না বে ইনি কিরূপে অন্তিত্ব-শুনা আমি বে ইহাঁকে দেখিতেছি। কিন্তু আমি তাঁহার মৃত্যু এজন্য স্বীকার করি, যে তিনি আর সেই তিনি নহেন, তুমি থাঁহাকে তিনি আছেন দেখিতেছ, মরিয়া গেলেও তো দেখিতে পাও, অথচ শরীরে অন্তিত্ব থাকে না। ভাবিয়া দেখ যথন বাহুপদার্থ মাত্রেই তাঁহার চৈতন্যবিলোপ. ভ্ৰম ত্ৰিবয়ে তিনি মৃত, যথন আত্মসহস্কেও সংজ্ঞাহীন তখন আপনার বিষয়ে ও অস্তিত্ব শূনা।

যথন ঈশ্বর ও ঈশবের প্রসন্ব্রতীত তাঁহার আর কিছুই নাই, তথন তিনি ঈশ্বরে জীবিত। যাহা অসার চলিয়া গেল, সার পদার্থ ঈর্ষর রহিলেন. हेहारकहे ऋकीत अकद रयांग वरन। यथन माधक ঈশ্বর ব্যতীত কিছুই দেখেন না, তখন শুদ্ধ তিনিই আছেন আমি নাই অথবা আমি আর তিনি এক এরপ বলেন। এই সত্যটীর ব্যাখ্যার অনেক বোকে ভ্রম করেন। কেহ কেহ ঈশ্বর ও মহুবোর প্রভেদ অস্বীকার করেন, কেহ কেহ স্বয়ং ঈশ্বর रहेबा यां अब्रा अब्रथ वांचा करबन, अ इरेरे ভ্ৰান্ত। যেমন কেহ কখন পুৰ্বে দৰ্পণ দৰ্শন करत नारे, त्म नर्भाग मार्थ य तिस्कत मृर्डि ভাহাতে দেখা যায়, ভাহাতে দে মনে করিতে পারে আমি দর্শণ হইলাম, অথবা দর্শণ আমার ক্লপে পরিণত হইল। এই ছই অসত্য। কখন দৰ্পণ মূৰ্ত্তি হয় না মূৰ্ত্তিও দৰ্পণ হয় না এই প্ৰকার

দেখার মাত্র। দে উত্তমুক্রপ ব্ঝিতে পারে না, ভাহার এরপ ভ্রম হইয়া থাকে।

ইক্রিয়াববোধ তিরোহিত হওয়ার পর যে অবস্থা হয় তাহাকে প্রেমাবেশ বলে। প্রেমাবেশ বলিতে এরূপ অবস্থাকে বুঝাইবে যাহা চৈতন্যের অবস্থাতে পূর্বে ছিল না। এই প্রেমাবেশের প্রকৃতি বিষয়ে অনেক কথা আছে, প্রকৃত পকে তাহা এক প্রকার নর, নানা প্রকার। কিছ इटेंगे कातन हटेरा छेटा छेटभन हम, এक अप-ছান্তর হইতে, আর প্রত্যাদেশ হইতে। অবস্থান্তর मृतक ध्यमादिन अहे ध्यकाद हम-गर्था कान একটা আভান্তরিক ভাব উত্তেজিত হইয়া উঠে এবং প্রমত্তের ন্যায় করিয়া তোলে। এই ভাব কথন অনুরাগ, কখন ভয়, কখন আসক্তির অগ্নি, কথন লাভের জন্য ব্যাকুলতা, কখন শোক, কখন चारका इटेरा शासा देशेत अकात एक অনেক, কিন্তু সেই অগ্নিজ্যধন অন্তরে প্রবল হইয়া উঠে এবং তাহার ধূম মস্তিষ্ঠকে আশ্রয় করে তথন সংজ্ঞাকে এক্লপ বিলোপ করিয়া তোলে যে নিদ্রাগত ও মাদকবিহবল ব্যক্তির নাায় দর্শন ও শ্রবণ শক্তি থাকে না। দিতীয় প্রতাদেশ মূলক প্রেমাবেশ। স্থানীর আস্থাতে কোন স্থানীয় পদার্থ প্রকাশ পায়, সঙ্গীত এই ভাবটী আনয়ন পক্ষে অমুকৃল উপায়। জনয় মলিন দর্পণ স্বরূপ, সঙ্গীত সেই মলিনতা প্রকালন করিয়া কেলে. তাহাতে সেই দর্পণে স্বর্গের ছবি প্রতিবিশ্বিত হয়। এ বিষয় লিখিতে গেলে একটা বৃহৎ পুস্তক হইয়া छैठि। य वाक्ति वहे छेक व्यवहां व्याख हव माहे, সে ইহার নিগুড় তাৎপর্য্য হাদয়ক্ষম করিতে পারে ना. नकरनर च च नाथना असूक्र द्वार नक्रम। যিনি এই ভাবটী যত আত্তত করেন, সাধনাতে করেন। চিন্তা বারা বাহা কিছু বুঝা বাম, তাহা

শান্তগত, প্রতাক মূলক নহে। যাহাদিগের এই উচ্চ অবস্থা হয় নাই ভাঁহারা যেন ইছা বিখাস করেন অম্বীকার না করেন। যে ব্যক্তি মনে করে যে বস্তু আমার ভাণ্ডারে নাই, তাহা রাজার ভাণ্ডা-রেও নাই সে নিতাম্ভ নির্কোধ। যে জন যংকিঞ্চিৎ সম্পদ পাইয়া আপনাকে এক জন প্রধান রাজা मत्न करंत्र এবং বলে যে আমি সমুদায় উন্নতি লাভ করিয়াছি, সমস্ত পাইয়াছি, যাহা আমার নিকটে নাই ভাহার অভিত্ব ই নাই সে আরও মূর্ধ। অফীদিগের মধ্যে ভাঁহারা শ্রেষ্ট, যাঁহারা প্রেমাবে-শের সময়ে আত্মশাসনের বলে স্থির গঞ্জীর থাকিতে शाद्रिन, आंश्रनाटक तका कतिए शाद्रन। द्रापन: कन्नान, ध्वनि এসকল पूर्वनिका इरेटक द्या कि এরপ শাস্নের বল অল সাধকের থাকে। আবৃ-বেকর সঁদিক বলিয়াছেন ষে " আমার মন দৃঢ় ও সঁবল হউক, আমি বাহু বিকার হইতে আপ-

নাকে রক্ষা ক্রিতে সক্ষক হইতেছি না।" থিনি আপনাকে শাসন করিতে পারেন না, তাঁহারও যথাশক্তি চেষ্টা করা কর্ত্তব্য যে অতিরিক্ত ভাব যেন প্রকাশ না পায়।

স্কীদিগের এই স্বর্গীর ভাবকে যে সকল লোক
অন্তঃকরণের ক্রতা ও নীচতার জন্য অস্থীকার
করে ও অসত্য বলে তাহারা ক্ষমার পাত্র ও
নির্দোব। যে বিষর তাহারা উপলব্ধি করিতে
পারে না, তাহা বিশাস করা তাহাদের পক্ষে হরহ
ব্যাপার। হরিৎ ক্ষেত্র ও স্রোভস্থতী দর্শনে বে
স্থা, তাহা জন্মান্ধে কি ব্রিবে ? রাজ্যসম্পদের
যে স্থা, রাজ্যসম্পদের প্রভূই ব্রিতে সক্ষ্য,
বালকে কি ব্রিবে ? সে থেলাই ব্রিতে পারে।

নামযোগ।

. নাম যোগের চারি অবস্থা। এক শুদ্ধ মুখে নামোচ্চারণ, হাদর ভাহাতে উদাসীন ও নিপ্টেষ্ট। २ य श्रुप्तदात्र द्यांश रत्र वर्षे, किन्छ स्त्री रत्र ना, হারর নামের আলর হয় না। তাহাতে সচরাচর এক্লপ ঘটিয়া থাকে যে হাণয়কে কণ্টে স্টে নামেতে निश्व बाबिएक इत्र। यनि टिही यत्र ना कता यात्र তবে চিত্ত উদাসীন হইয়া পড়ে, অথবা বিষয় প্রবৃত্তির উত্তেজনায় স্বীয় পূর্ব্বাবহা প্রাপ্ত হয়। তৃতীয় অবস্থা এই যে নামের মধুরতা হৃদয়কে আকর্ষণ করে এবং সেই ভাব এরপ সংক্রামিত হয় যে তথন বিষয়ান্তরে অন্তরকে যত্ন ও আয়াস ব্যতীত প্রবর্ত্তিত করা বায় না। বোগের চতুর্থ অবস্থায় ঘাঁহার নাম সেই পর্মেশ্বর সাধকের छम्य जामन পরিগ্রহ করেন। अमय जात नाम উচ্চারণ করে না. ঈশ্বরের স্তাতে মগ্ন হইর। যায়। যাঁহার অন্তর সাধনার লক্ষ্য পরাৎপর পর-মেশ্বকে সম্পূর্ণ রূপে প্রেম করে, তাঁহার সঙ্গে যি কিবল নামকে প্রীতি করেন এরপ ধাক্তির অনেক প্রভেদ আছে। বস্তুতঃ নাম এবং নামের ধ্যান চতুর্থ শ্রেণীর সাধকের হৃদয় হইতে তিরো-হিত হয়। শুদ্ধ নামের লক্ষ্য ঈশ্বর অস্তরে বিরাজ করেন। নাম আরবী ভাষার বা পারদ্য ভাষার रुष्ठेकना दकन कथा वर्षे, এर कथा मन रहेए मूरन थांक ना। वद्रः अत्नक जमग्र निद्रबद्धित धरे বাকাই দাধকের অন্তরে থাকিয়া বায়। প্রকৃত নাৰ যোগ হইলে আরব্য পার্ন্য বাক্য প্রভৃতি যাহা किছ সমূদর হইতে হলর निर्मा क रत। সমগ্র হলর তবার অর্থাৎ ঈশবে পরিব্যাপ্ত হইরা যায়। অন্তরে

অন্য কোন বিষয় স্থান পাইবে না, ইহা গভীর প্রেমের ফল। নিগুড় প্রেমেই এই যোগ সংসাধিত হয়। প্রেমিক সর্বদা প্রেমাম্পদকেই আশ্রয় করিয়া থাকে এবং তাঁহাতে এরপ গাঢ় অমুরক্ত হয় যে ছদ ব্ৰদ্ধৰ স্থগভীৰ খান ও নিদিখাসন কালে তাঁহার নাম পর্যন্ত বিশ্বত হইয়া যায়। अपन সাধক এ প্রকার বিলীন ও নিমগ্ন ভাব প্রাপ্ত হয়েন যে আপনাকে ও ঈশ্বর বাতীত যাহা কিছু তৎসমু-দায় ভূলিয়া যান, তখন তিনি সমাধির উচ্চতর বোপানে আরোহণ করেন। এই অবস্থাকে অসং । विनय बना यात्र, व्यर्था द कराउठ यादा कि इ আছে জাঁহার মৃতি পথ হইতে অন্তহিত হয় এবং তিনি নিজেও অসৎ হয়েন অর্থাৎ সাধক আপনাকে সম্পূর্ণ রূপে বিশ্বত হরেন। যথা अत्नक नेपंत्रकानी जाएन, गाँशाता जामात निकर्ष অবিদিত তাঁহারা আমার সম্বন্ধে অসৎ এবং আমি

যাঁহাকে জ্ঞাত আছি ও যাহার তত্ত্ব জানি তিনি আমার নিকটে সং। এর প যথন কেছ আপনার অহংভাব ভূলিয়া যান তখন তিনি নিজেও নিজের নিকটে অসৎ হয়েন, এবং যথন ঈশ্বর বাতীত অন্য কোন পদার্থ তাঁহার সন্নিধানে থাকে না তথন পরমেশ্বই তাঁহার নিকটে সং ও সম্মুখে বিদ্যমান। ভ্রাতঃ। যজ্ঞপ তুমি নেত্র উন্মিলন क्रिया यथन ७% जूलाक शालाक नर्नन कर, अना किছ मिथिए शांक ना, उथन छमि वनित्व त्य এই বাহ্য জগতের অভিত্ব ব্যতীত অন্য কোন ्रभार्थित चल्चि नारे। এই मुनामान् विषरे সর্বস্থ। এরপ নামের উচ্চতম সাধক ও ঈশ্বর ব্যতীত অন্য কোন পদার্থ দেখেন না. বলেন যে তিনি সর্বস্থ অর্থাৎ পরমেশ্বরই আছেন তাঁহা ব্যতীত অন্য কিছুই নাই। এ হানে সাধক ও ঈশবের মধ্যে কোন ব্যবধান রহিল না, একত্ব

लांख श्रेन, खिन्नका हिना (शन, विष्कृत विस्ति-মতা সম্বন্ধে ফোন তত্ত্ব রহিল না। যেহেতু ভিন্নতা তিনিই দেখেন যিনি ছই পদার্থকে জানেন এবং আপনাকে ও ঈশ্বকে দেখেন। আর এ ব্যক্তি এ সময় আপনাকে বিশ্বৃত হইয়া যান,এক ব্যতীত বিতীয় চিনেন না, তাহা হইলে বিচ্ছেদ দুরতা किक्राप जानित्वन। यथन क्यूषा এই व्यवसाय छेन-নীত হয়েন,তথ্ন তাঁহার চক্ষে দেবস্বরূপ প্রকাশিত হয়, তিনি পবিত্রাত্মা মহর্ষি ও ধর্মপ্রবর্ত্তক প্রেরিড মহাপুরুষদিগের তুলা জীবন লাভ করেন, স্বর্গীয় পদার্থ ও অনির্বাচনীয় মহৎ ব্যাপার সকল দেখিতে পান। পুনর্কার যখন তিনি আপনার ভাবের মধ্যে উপনীত হয়েন, অন্য অন্য ব্যাপারের শ্রতি তাঁহার দৃষ্টি পড়ে তথনও সেই স্বৰ্গীয় ভাবের প্ৰভাব ভাঁহার আত্মাতে সঞ্চারিত থাকে এবং সেই পুৰা অবস্থার প্রতি একটা প্রবল অসুরাগ থাকিয়া যায়।

নাধারণ লোকে যে সকল সংসোরিক বিষয় লইয়া বাস্ত, তাঁহার নিকটে তাহা নীরদ ও অর্থশূন্য বলিয়া প্রতীতি হয়; তিনি শরীর সম্বন্ধে মমুষ্য লোকে বাস করেন কিন্তু তাঁহার আত্মা অন্য লোকে স্থিতি করে। যাহারা সংসারের জন্য নিয়ত বিত্রত, তাহাদিগকে বিশ্বয়পূর্ণ নেত্রে তিনি অবলোকন করেন, এবং এই বলিয়া আক্ষেপ ও দয়ার চক্ষে দেখেন যে এই সকল লোক কেমন মহৰুত হইতে বঞ্চিত আছে। অন্য লোকেও আবার ষ্ঠাহার প্রতি উপহাস করে ও বলে যে এ ব্যক্তি কেন বিষয় ব্যাপারে মন নিযুক্ত করে না, এবং তাহারা এরপ নীচ কল্পনাকেও মনে স্থান পানে বাধ্য হয় যে এ লোকটা নির্বোধ উন্মন্ত গ

যদি] কোন সাধক এই অসৎ ও মৃত্যুর সোপানে উপনীত নাও হইয়া থাকেন এবং এই অবস্থা

ও ধর্ম জগতের গৃঢ় তত্ত্ব সকল তাঁহার নিকটে প্রকাশিত না হইয়া থাকে কিছ পর্মেররের নাম চিক্তা তাঁহার হৃদয়কে অধিকার করিয়াছে, তাহা হইলেও নৌভাগ্যের বিষয়। কেননা যথন নামের সাধনা জীবন্ত হইয়া উঠিবে, তখন তাহার সঙ্গে সঙ্গে প্রেম প্রবর্দ্ধিত হইয়া সমুদায় হৃদয়ে मक्षांत्रिङ रहेरत এवः अङमृत हहेरत ए क्रेन्नर्रक সংসার অপেকা সভাবত: প্রিয়তর জানিবে। প্রকৃত সৌভাগা তথন, যখন ঈশরের সমুখীন হই, তাঁহার দর্শনে প্রেমানন্দ্ লাভ করি। সংসার পিশাচী বাঁহার অমুরাগ ও প্রীতির পাত্রী হইয়াছে. যে ব্যক্তি এই বৃদ্ধার প্রতি অহুরক্ত ও উন্মন্ত, সে প্রেম অংসক্তির অমুরূপ ছাথ বরণা ভোগ कतिरंद। यनि क्ट अविद्यास नास्मद नास्मत করিতেছেন, কিন্তু বোগীদিগের জীবনের উচ্চভাব ভাঁচাতে বিকাশিত হইতেছে না, স্বীয় জীবনে

তিনি দেই ভাব দর্শন করিতে পারিতেছেন না 🕰 অবস্থায় যেন নিরাশ না হয়েন। জানিবেন হ্রদ যথন নামের জ্যোতিতে জ্যোতিখান হইল, তখন তিনি পরম সৌভাগ্যের জন্য প্রস্তুত ছই-লেন, যাহা কিছু ইহ লোকে প্রকাশিত না হয় পরলোকে হইবে। তাঁহার কর্ত্তব্য যে আশারিত হইবা সর্বাদা ক্রমতে ঈশ্বরেতে সমর্পিত রাখেন। কথন তাঁহা হইতে দুরে না থাকেন, নিতা নাম যোগ ঈশবের মন্দির ও স্বর্গ নিকেতনের ছার जैनवार्धेम करत्। इक्तद्र यहत्वम वनिवास्त्रन रव रव ব্যক্তি স্বর্গীয় উদ্যানের শোড়া সন্দর্শন করিতে চাহে, তাহার উচিত বছুপূর্বক ঈর্বরের নাম माधनां करत्।

আকৃসির হেলায়েত।

शिक्टा अत्र ।

বুদ্ধিকে ছাড়িয়া প্রেমের নিকটে ধন অন্বেষণ কর, তাহা হইলে বিশোধিত স্বর্ণের ন্যায় বিশুদ্ধ হইবে।

হাফেজ প্রথমে সধার বদন রূপ কোরাণ গ্রন্থে প্রেমের অধ্যায় ওস্তোত্র অধ্যয়ন করিয়াছে।

দশ্ধহৃদর প্রেমিক যে পর্যান্ত মৃত্যুর প্রান্তরে গমন না করেন, দে পর্যান্ত তাঁহার স্বদ্যনিকেতনে নির্মাণ প্রেমের অভ্যুদ্য হয় না।

ভূবক মন্তক দানে প্রস্তত না হইলে সাগ্রর

^{*} হাফেলের জনেক কবিতা রূপক। ভছ্রিখিত কুরা শব্দে প্রেম, সুরাদাতা প্রেমোদ্দীপনকারী, স্থরালয় প্রেমনিকেতন, স্থাপাত ক্লয়, স্থা ঈশ্ব বা ধর্মপ্রবর্ত্তক মহম্মদ কিছা ধর্মগুরু অথবা ধর্মবন্ধু বুঝিতে হইবে।

হইতে কথন মৃক্তা ফল আহরণ ক্রিতে পারে না। অফ্রাগের অফ্রোধে দীপবং প্রাণকে মধ্যস্থলে স্থাপন করিয়াছি, প্রেমবশে স্বীয় দেহকে উৎসর্গ করিয়াছি।

সেই উচ্ছল প্রদীপের অনুরাগে আপনাকে দগ্ধ না করিলে তুমি প্রেমনন্ধট হইতে উত্তীর্ণ হইতে পারিবে না।

সাধারণে মহামূলা মৃক্তার মূল্য কি জানে, হাফেজ। বিশেষ ব্যক্তি ব্যকীত অন্য কাহাকে সেই মুক্তা দিবে না।

আমি উন্নত, আমার হৃদরে অগ্নি প্রঅলিত করি-যাছ, অলনশিখাস্থ ধূমের ন্যায় আমি তোমার জন্য নৃত্য করিয়া বেড়াইতেছি।

এস সেই ৰদন মণ্ডলে আমি প্রাণের গন্ধ অন্থ-ভব করিতেছি, সেই আননে স্বীন্ন হৃদ্দের অন্থ-সন্ধান পাইয়াছি। ছিব্যাক্লনাদিপের বে বর্ণনা হইদা থাকে সখাত্র দেই মুখের সৌন্দর্য্য ও কোমলভার নিকটে তছ-প্না জিজ্ঞানা কর।

তোমার বছনকান্তি দর্শন করা সকল লোকের পক্ষে উচিত, তোমার মন্দিরে প্রণাম করা সকল রাজার পক্ষে কর্ত্তব্য।

তাঁহার পদধ্লী চুম্বন করিবার অধিকার লাভ কোধার! হার্ফেজ, তোমার অনুরাগের সমা-চার কে তাঁহার নিকটে নিবেদন করিবে?

ভূমি কোথার আর তাঁহার দর্শনের আশা কোথার, হাফেজ! সকল লোক তাঁহার অঞ্চল ধারণ করিজে পারে না।

সেই প্রতাপাবিত দাবার পদগোরব ও মহিমার শপথ করিয়া বলিতেছি যে ধন মানের জন্য
কাহার সক্ষেত্রামার বিবাদ নাই।

মথে! তোমার পানপাত্তের এক বিন্দু প্রসামের

[69]

শিশাস্থ, কিন্তু বল প্রকাশ করিতেছি না বাধ্যও করিতেছিনা।

দোহাই ঈশবের, আমার এই থিকা (বৈরাগ্য বস্ত্র) স্থরা জলে ধৌত কর, আমি এই ভাবে থিকা পরিধান করিয়া কল্যাণের সৌরভ পাইতেছি না।

প্রেমিকদিগের প্রতি কিঞ্চিৎ দৃষ্টিপাত কর,
সামি ডোমার অনুগত ভূত্য, তুমি সেবনীর রাজা।
উপদেশা চলিয়া যাত উপদেশা ক্রিণ না

উপদেষ্টা। চলিয়া যাও, উপদেশ করিও না, পুনর্কার ভূমি আমাকে কোথাও নির্জন কুটীরবাসী দেখিতে পাইবেনা।

এক জন স্থা ও একটা স্থরাপাত্ত হইলে এই সংসারে আমার যথেষ্ট আনন্দ হর, এই ছুই ব্যতীত সমুদায় সামগ্রী শিরোবেদনা ও বিচ্ছেদের কারণ।

প্রেম আমাকে মন্দিন হইতে তুরা বিপণিতে পাঠাইতেছেন, প্রাণ! আমি আব্রহের সহিত যাই-তেছি, আপত্তি করিতেছি না। একালে লোকে গুণ ক্রন্ন করে না, তহাতীত আদার কিছুই নাই, এই অব্যবহার্য্য সামগ্রী শইরা আমি কোথার বাণিজ্য করিতে যাইব।

মদিরা আনয়ন কর, হর্ব্য যখন কিরণ বিকীর্ণ করিবে দীনহীনের কুর্টারেও কুপাকিরণ উপনীত হুইবে।

বিরহরজনীতে আমার নিকটে দুর্নানর অফুজা পত্র প্রেরণ কর, অন্যথা আমি বিলাপ ধ্বনিতে অয়ির ন্যায় জগৎকে দগ্ধ করিব।

চন্দ্রানন ! কোন বছনীতে দর্শন দানে আমাকে গৌরবাহিত কর, তোমার প্রকাশে আমার গৃহ দীপালোকের ন্যার উজ্জল হইবে।

সামার ধৈর্ব্যরশি তব শোকারে ছিন্ন হইনাছে, সেই তোমার বিচ্ছেদানলে স্থামি প্রদীপের ন্যায় অনিক্টেছি।

তোমার ভ্ৰনোজ্ঞল রূপের জভাবে দিবা

আমার সহকে রজনী, তোমার গভীর প্রেমে দীপ শলাকার ন্যায় আমি কয় প্রাপ্ত হইছেছে। হাকেজ! যদি স্বরা পান কর, কুসুমান্য স্থার সঙ্গে পান করিও, ইহ পরলোকে ইহাঅপেকা উত্তম সামগ্রী অন্য কিছুই নাই।

আমি দর্শনকামনার কেমন করিরা ভানা বিস্তার করিব, আমার হৃদরপক্ষী যে বিরহ কুলায়ে পালক পরিত্যাগ করিয়াছে।

ঈখর। বল, অদর্শন ও বিচ্ছেদ জগতে কে আনমন করিল, অদর্শনের মুখ, ও বিচ্ছেদের গৃহ ফুপুতি দুগ্ধ হউক।

সংধ! আমি বিচ্ছেদকে তোমার বিচ্ছেদে আনিয়া ফেলিব, বিচ্ছেদের চকু ইইতে অঞ্ কর্মন করিব।

যদি সক্ষম হই আমি বিচ্ছেদকে ব্রনিদান করিব, নেজ জলে তাহার অত্যাচারের প্রতিশোধ দিব। কোধার বাই কি করি মনের অবস্থা কাহাকে বলি, কে আমার বিচার করিবে, কে বিচ্ছেদকে প্রতিফল দান করিবে।

কণকালও অদর্শন বিচ্ছেদের যন্ত্রণা হইতে আমার মৃত্তি নাই, ঈশ্বর! বিচার কর, বিচ্ছেদকে লাস্তি প্রদান কর।

হে রূপবান্ দিগের রাজা! বিরহ যন্ত্রণা দ্র কর, হদর তোমার বিচ্ছেদে মুমুর্ হইরাছে।

যথন তোমার সঞ্চে থাকি, তথন এক বংসর
সামার এক দিন; কিন্তু যথন তোমার বিচ্ছেদে
কাল্যাপন, করি তথন সামার এক দিন এক বংসর 4

আমার প্রতি দয়া কর দেখ তোমার ক্ষর মুখের অহুরাগে আমার হর্মল শরীর নব শশাকের ন্যায় ক্ষীণ হইরাছে।

সর্বদা এই উদ্যানের পুশা সরস থাকে

না, তুমি স্বল বট, তুর্বলদিগের তথা লও।

অধুনা উচ্চ আকাশের উপর প্রেমগৃহ স্থাপন

কর, বেহেতু নিশ্চর মৃত্যু তোমাকে অকস্মাধ

অধ্বার গর্ভে লইয়া বাইবে।

আমি সহস্রবার এই কথার অনুসদ্ধান করিয়াছি যে সংসার ও সংসারের কার্য্য অসারের অসার। হার হার ! আমি একাল পর্যান্ত জানিলাম না

যে বন্ধু সৌভাগ্য বন্ধু লাভের অনুকৃল উপায়।

যদি শাস্তি ভূমি; নির্মাণ স্থরা সদর সধা সর্ক-কণ ভূমি প্রাপ্ত হও, আশুর্য্য তোমার ভাগ্য।

নিরাপদ স্থানে গমন কর, উপস্থিত সময়কে যথেষ্ট গণ্যকর যেহেতু জীবনের অন্তরালে দস্যাগণ বাস করিতেছে।

আক্ষেপ করিও না বাদ্য বাজাইয়া স্থার সঙ্গে মদিরা পান কর, যেহেতৃ কাল নির্দ্দরূপে মৃত্যু থজোর আঘাত করিবে। হে আদর পরিপালিত সরও তরু রূপ * আমার স্থা, তোমার চরণ ধ্ধীর দোহাই দিয়া বলিতেছি, মৃত্যু সময়ে আমার সমাধিভূমি হইতে চরণ উত্তো শুন করিও না।

দ্রাক্ষারীর কৌশলে আশ্রব্য রূপে বৃদ্ধির পথ বন্ধ হয়, আশীর্কাদ করি, দ্রাক্ষালতার যেন কথন কতি না হয়।

হাফেজ ! প্রেমবেদনার সন্মত হও, নীরব ধাক। প্রেমতত্ব বৃদ্ধিমান্ লোকের নিকটে ব্যক্ত করিও না।

আমি ধঞ্জ গমান্তান বছদ্রে, আমার বাছ ধর্ক, খোমা ফল উচ্চতক শাধার।

^{*} সর ও তক সরল ও হাগঠিত হর, পার্স্য কবিগণ হালর কলেবরের সঙ্গে তাহার ভূলন। বিশ্বা থাকেন।

প্রথমত: অনুরাগ ও মত্তা লাভ সলজ বোধ হইয়াছিল; কিন্তু পরিশেষে এইতা উপার্জনে আমার প্রাণ জলিয়া গিয়াছে।

জিজ্ঞানা করিলাম যে আমার চ্র্বল আত্মার প্রতি কথন কুপা করিবে, বলিলেন তথন করিব ধথন মধ্যে আত্মা আবরণ ছইবে না।

শতবার নেত্রনীরে নোরার অবগ্গাবন দেখি-রাছি, কিন্তু হাদয়ফলকস্থিত ভোষার ছবি কখন বিনষ্ট হর নাই।

যদিচ আমি নানা বিষয়ে পাপদাগরে নিমগ্ন, কিন্তু যথন প্রেমকে আত্রর করিরাছি, তথন অমু-গ্রহের পাত্র।

স্বাপানকর, শিক্ষা ও ক্ষমতাবলে প্রেমান্তরাপ হর না, ভাগ্য প্রোসাদ হইতে এই দান আমার নিকটে উপস্থিত হুইয়াছে।

পণ্ডিত ৷ তুমি সামার মন্ততা ও অপবাদের

ध्रीय ध्रतिश्व नी, श्रीमात स्नानश्रस्टकते हैराई निभि चंटि ।

হাফেজ। যথন ডুমি ত্রেমনিকেতনে" পদস্থাপন করিরাছ, স্থার অঞ্জ ধারণ কর অন্য সকর্গ ছাড়িরা দেও।

আমার জীবনে আমি গৃই ছাড়িরা দেশান্তরে ঘাই নাই, কিন্তু ভোমার দর্শনের অক্তরাগে বিদেশ যাত্রার সমুংক্লীক হইরাছি।

পথে নদী ও পর্বত, আমি ক্ষীণ ও হর্বল, হে পুনাপাদ ঋ্≉ থেজর ! সাহস দানে সাহায্য কর ।

প্রকাশ্যে যদিচ আমি স্থার প্রাসাদ হইতে দূরে পড়িয়া আছি, কিন্তু মন প্রাণে আমি তাঁহার মুম্বির নিহাসীদিবের এক জন।

লত্যক্ৰা বলিতেছি ইহা কেখিতে পারিনা বে আমি চাঁহিছা থাকিব আর বন্ধুগণ পান করিবেন। আমি বৈধ্যাবলম্বনের রীতিনীতি আনি না, দেই ভাল বে স্থরালয়কে ইদারা করিয়া লয়।

মত্তার রাজ্যে আত্মমত ও অত্মিজ্যা নাই,
এই ধর্মে আত্মদৃষ্টি ও আত্মভিমত অবৈধ।

আমি এক জন মদিরালয়ের ভিক্ক, কিন্ত মত্ত তার সময় দেখিও নভোমগুলের সঙ্গে আব্দার এ নক্তরগণের প্রতি আদেশ প্রচার করি।

আমি কাজি নই, শিক্ষক নই, শাস্ত্ৰজ্ঞ নই, ব্যবস্থাপক নই, আমার কি লাভ বে আমি স্থবা পানে কাহাকে নিষেধ করিব।

গোপনে পান করিরা হাফেজ মনে ক্লেশ পাই-রাছে, একবার বাব্যধানি সহকারে সমুদার গৃড় ব্যাপার ব্যক্ত করিয়াদি।

পানপাত্তৰাতা ! তোমার বিরহে উদ্যানে পুলোর সৌন্ধ্য বিনট হইয়াছে,এস,উদ্যানকে শোভিত কর। হাফেজ ! বিচ্ছেম্বজনীর অবসান হইল, প্রভা-তিক সৌরভ জালিভেছে। আমি কেমন করিয়া লজ্জাবনত মন্তককে স্থার নিকটে উত্তোলন করি, উপযুক্তরূপে আমা হইতে বে তাঁহার সেবা হয় নাই।

ছাড়িয়া দেও আমি মদিরাবিপণীর রাজমার্গে ধাবিত হই, একবিন্দু মদিরার জন্য আমি সম্পূর্ণ-রূপে এই ছারের ভিক্ষক।

বে ছানে সমাট্ অম্সেদের সিংহাসন বিলয় প্রাপ্ত হয়, সেথানে আমার শোক করা প্রেয়: নহে, কুরাপান করাই বিধেয়।

প্রথম দিনেই যথন আমি প্রেমণ্ড মন্ততার যোগ দান করিরাছি, সেই পথ ছাড়িরা দেওরা আমার পক্ষে উচিত নর।

উপদেষ্টা ! উপদেশ করিও না, আমি পাগল, আমি স্থায় গ্যাপথের ধ্লির তুল্য স্বর্গ লোককে নিরীক্ণ করি না।

তোমার একবিন্দু নিকেশে পৃথিবীর ধূলি পদ্ম

রাগশ্মণির কাস্তি লাভ করিয়াছে, আমি গতিহীন তোমার নিকটে গুলি অপেকাও নিক্ট।

হাফেজ! যথন ভূমি দর্শনের উচ্চ গৃহচূড়ার আরোহণের পথ পাইলেনা, তখন এই ছারের মৃত্তি-কাকে আশ্রয় করিয়া থাক।

হে প্রাণ! ইহা উচিত নয় যে আমাকে পরিত্যাগ করিয়া প্রস্থান কর; এস, পুনর্ক্কার আমার সংবাদ লও,তাহা হইলে আমি তোমার পথের ধূলি হইবে।

যে পর্যন্ত শাশান গর্ত্তে প্রবেশ না করি তামি তোমার অঞ্চল হইতে হস্ত অপসারণ করিব না, সে সময় ও বধন তুমি আমার সমাধির উপরে আগমন করিবে, আমার ধ্লিপরিণত দেহ তোমার অঞ্চল সংলগ্ধ হইবে।

সর্বান আমার প্রনিকা বিরাদ করিতেছেন, কিন্ত তাঁহার ক্রীড়া কেহ দেখিতে পাছ না, আমি দেখিতেছি। রুদি স্থা স্মীরণের নার হাকেজের স্মাণি ভূমিতে আগর্মন করেন, কুস্থম কলিকা যেমন প্রভাতসমীরণ স্পর্কে আবরণ ছিন্ন করিয়া প্রভূপ ছুদ্ধ আমিও গোরের ভিতর কোফন (শ্বাব-রণ) ছিন্ন করিয়া ফেলিব।

স্মানি কেন খদেশ গমনের উদ্যোপ করিব না, আমি কেন স্থার চরণ ধূলি ছইব না।

দেশচুতি ও দরিদ্রতার শোক যথন সহা করিতে পারিতেছি না, স্বীয় নগরে যাইব ও রাজা হইব।

সন্মিলন গৃহের স্কুধিবাদীদিগের একজন হইব, প্রভুর দাসদিসের এক জন হইরা থাকিব।

জীবনের ক্রিয়া অব্যক্ত, একবার তাহাই করা ভাল, বাহা করিবে অন্তিম কালে স্বীয় স্থার নিকটে উপস্থিত হইব।

থেৰ ও মত্তা আমার নিতা রাষ্য, পূৰ-

ৰ্কার ভাষাতে যত্ন করিব, সীয় কার্ব্যে লিও থাকিব।

চিলিশ বংসর হইতে দর্শ করিয়া বলিতেছি যে হারাবণিক গুলুর অমধ ভূতাদিপের এক জন আমি।

জ্বাবণিক গুরুর অমুগ্রহের প্রাসাদে শচ্ছ নির্মান প্রাশ্ন্য আমার স্থ্রাপাত্ত কথন হর মাই।

এই মদিরাপারীর সহকে কুজাব পোষণ করিও না, বৈরাণ্যবন্ধ মদিরাসিক্ত হইরাছে বটে; কিছ প্রবিত্ত আছি।

ছ:খ এই মাদৃশ হোল্বোল মধুর বসনা দৰে এইকণ এই পিশ্বরে মোদন কুক্ষের ন্যায় * নীরক ব্রহিণ।

 ⁽गानन भूष्णव नन वक्त किक्तावकाकातः।

কি কুশ্বম বিকাশের সমরে মদিরা ত্যাগ করি-তেছি! বৃদ্ধিমান্ বলিয়া আমি দর্প করি, এ কাৃষ কেন করিব।

দরমার শব্যার, নিরাপদ নিদ্রার, দীনতাম যে স্থা তাহা রাজার সিংহাসনে নাই।

আমি দীন ভিক্ক, আমি রাজার মুক্টকে আমার কম্বল মির্শ্নিত টুপির ভুলা গণ্য করি না।

বৃদ্ধ কৃষক স্বীয় প্তকে কি স্থান্দর কথা বলিয়া-ছিল যে হে আমার নয়নরঞ্জন! কর্ষণ না করিলে কর্তুন করিতে পারিবে না।

গারক কোথার ? আমি বৈরাগ্য ও বিদ্যালন্ধ সম্লায় বস্তু বোর্বত ও বংশিক্ষনিবোগে বর্জন ক্রিব।

কাল কৰে অস্কৃত হইরা থাকে, মদির। আন-যন কর, আনি সম্ভাট অমৃনেদ ও কাউদ্ এবং করের মনিভারে কাছিনী ধলিব। জীবন পুত্তক কলক্ষুক্ত এ জন্য জামি ভর করি না, বিচারের দিনে তাঁহার অত্তাহ ও কুপার এরপ শত্মলিন পুত্তক অতিক্রম করিব।

আমার দেহমৃত্তিক। স্থরা ছইতে উৎপন্ন ছই-দ্বাছে, বিরোধীদিগকে বল যে আমি কেন স্থরা ত্যাগ করিব।

এইকণ প্রামর্শ তাহাই দেখিতেছি বে ধন দুল্লভি স্থলালয়ে লইরা যাই এবং স্থাথে বাস ক্রি।

কপট বৈরাগ্যাবরণ ধারণ করিরা আমি অনেক সাধুতার দর্প করিরাছি, তজ্ন্য পানপাত্রদাতা পুবং সুরাস্করীর নিকটে লক্ষিত আছি।

দদিরাপাত্র গ্রহণ করিব, কণট লোক হইতে
কুরে থাকিব অর্থাৎ সংসার হইতে অন্তর্হিত হইরা
অন্তঃকরণ হইব।

भावात कृतव नहीं दात । छुक्र वि प्रीहात

त्नांदक्त चात्र, अहे श्वक चात्र दश्त इस्ति हर्नेत नक्तम नरह।

আমার দেহরপ ধূলিপুঞ্জ প্রাণস্থার বদন-মণ্ডলের আবরণ হইয়াছে; সেই শুভক্ষণ বর্ধন এই বদনের আবরণ উম্বোচন করিব।

এরপ পিঞ্জ মাদৃশ কলকণ্ঠ বিহঙ্গের উপযুক্তনার, অর্গোদ্যানে বাইব, আমি সেই উদ্যানের পক্ষী।

প্রকাশ হইব না যে কেন আসিলাম ও কোধার ছিলাম, হঃধ ও ধেদ এই, বে আমি স্বীয় কার্যো উদাসীন।

যথন আমার শরীর সংসারকারাগারে বন্ধ, তথন আমি প্রশন্ত পুণাজগতে কেমন করিরা ভ্রমণ করিব।

ক্যাপি আমার স্কুলরের শোণিত হইতে গভীন্ন বোনের সৌরত নির্গত হর আক্র্যানিত হইওলাঁ, বেংকু উৎকৃত বুগলাভিত্র সংক আনার প্রণায়। অমরনিকেতনৈ আমি নিবাস ও আত্রর পাইবার উপযুক্ত, অসৎ লোকের পরীতে কেন আমার্ক বসতি হইল।

আমার স্থবর্গথাঁচত বাহা অলাছাদনের প্রতি লক্ষ্য করিও না, অলাবরণের ভিতরে অগ্নিত্না গুপ্ত প্রদাহ রহিরাছে।

এস হাকেজের অন্তিমকৈ তাহা হইতে দ্ব কর,
তৃষি বিদ্যমানে আমাহইতে আমি আহি এই
কথা বেন কেহ শুনিতে না পার।

সেই শুভ দিন, যে দিন এই বনস্থানী হইভে চলিয়া বাইব, প্রাণের শাস্তি অবেষণ করিব, প্রাণ স্থার উদ্দেশ্যে যাইব।

ক্ষ মনে ত্র্বল শরীরে দেই স্থলার গতি সর ৬'ডফর প্রশারবদ্ধনে প্রাভঃস্বীরণেই ন্যাই বাহিব।

বলি ভাষার পথে শেখনীর ন্যার মঞ্চরগোগে

চলিতে হর চলা বিধের, थिनामान समस्य রোক্দা-मान नद्यत्न राहेर्वः।

জঙ্গীকার করিয়াছি, যদি কোন দিন এই শোকের অবসান হয় তবে কবিতা পড়িতে গড়িতে, হাসিতে হাসিতে মদিরালয় পর্যাপ্ত ঘাইব।

তাঁহার প্রেমানুরোবে বালুকাক্থার ন্যার দাচিতে নাচিতে প্রদীপ্ত স্থ্যমণ্ডলের,পার্মে ঘাইব।

যথন বন্ধিগণের অবস্থা দেখিরা ক্সর পুক্ষ-দিগের ছংগ হয় না, মহাজনেরা সাহায্য ক্সন ভাহা হইলে ক্সপে ও আরামে যাইব।

তোমার মুখের ভার নেত্রত্বপ কার্যালয়ে আক বৰ করিয়াছি, তোমার কান্তির অভ্রুপ আমি কোন কান্তিমান্ প্রুবের কান্তি দেখি নাই ও জনি নাই ঃ প্রভূত্বের আশা ছিল তোষার দাসত করিলাম,রাজ ত্বের আকাজন ছিল তোমারসেবার সম্মত ইইলাম। বিদিচ তোমার অমুসরানে আমি উদীচা প্রভঞ্জনের তুলা গতি লাভ করিয়াছি, কিন্তু তোমার স্থলর গতি সর্বত্ব পার্বে উপ-নীত ইইতে পারি নাই।

অপান্ত স্থাতি তুমি আমার কত হদরে কি বাণ্যকল বিদ্ধ করিয়াছ, তোমার পলীতে কি ক্লেশ ভার সকল বংন করিয়াছি।

প্রভাত সমীরণ! বন্ধুর গম্যবন্ধ হুইতে কিঞ্চিৎ ধূলি আনরন কর, আমি সেই ধূলি মধ্যে কত হাদরের শোণিতের গন্ধ আছাণ করিয়াছি।

তাঁহার নিবাস পরী হইতে সমীরণ আসিয়া আমার মন্তক শর্শ করিয়া চলিল, আমি তাঁহার অহুরাগে শৃশকোরকের ন্যার হঃধ সঙ্চিত্ মুদ্যের আবরণ ছিল করিলাম। তোরার পদধ্লীর শপধ করিরা বলিতেছি বে ভূমি হাকেজের চকুর জোতিঃ তোরার বদন ব্য-জীত আমি নেত্রদীপে আলোক দেখিতে পাই না।

নরনোদ্যানে যথন তোমার মুখের ভাব সঞ্চা-রিত হয়, মন তাতা দেখিবার জ্বনা চক্র ছিড দিরা বাহির হইরা থাকে।

এন তোমার পদার্পণে মণি মুক্তা উৎসর্গ করিব, ক্ষদর ভাঙার হুইতে তাহা নেত্রকোষে সঞ্চর করিয়াছি।

উঠ, মদিরামন্দিরের ছারোনোচনে যত্ন করি, সুধার ছারে বসির, অভীট বিষয় নাচ্ঞা করিব। সধার নিকেতনে গমনের পাথেয় নাই, কিড জ্বাল্যের ছারে পাথেয় ডিক্ষা করিব।

ৰণি ভূর শোকের উৎপীড়নে সামি বিচারগণী ক্ই, তরে ভোমার শোকাবারেডর মিউতা হইতে বেন বঞ্চিত থাকি। চল আমরা স্থানীর বৈরাগ্যবন্ধ স্থরালয়ে লইরা যাই, মিথ্যা প্রবঞ্চনা বাজারে রাষ্ট্র করিয়া দি।

হাফেজ! বিদ্যালয়ের ছারে আর কত কাল বসিরা থাকিবে? উঠ, মদিরামন্দিরের ছারোম্মো-চনের চেষ্টা করি।

কীশ্বর যথন আমার ভাগ্যে স্থরালর রাথিয়া দিয়াছেন, তাহাতে বল হে দরবেশ ! আমার অপ-রাধ কি ?

জনাকালেই যাহার ভাগ্যে স্থরার পাত্র ঘটি-য়াছে, বিচারের দিন কেন তাহার অপরাধ সম্বন্ধে প্রায় হইবে ?

কপট বৈরাগ্যবস্থারী সন্নাসীকে বল বে ভাহার কপটতার হস্ত দীর্ঘ ও আন্তিন ধর্ম। ভূমি নীচ অভিসন্ধিতে বৈরাগ্যাবরণে আছোদিভ হইনাছ যে ঈশ্বরের ভ্তাদিগকে ভূলাইয়া পথভাত করিবে।

[88]

আমি উচ্ছুখল প্রমন্তদিগের সংসাহদের দাস, যেহেতু তাঁহাদের রিকটে শ্বর্গ মর্ত্তাতুল্য।

যখন মদিরালয়ে আমার অভীষ্ট সিদ্ধ হইরাছে, তথন বিদ্যালয় ও ধর্মালয় হইতে আমার মন বিরাগী হইরা পভিয়াছে।

যাও হাফেজ। তুমি প্রত্যেক ভিক্তকের হারে ফাইরা ভিক্ক হও, ভোমার এই কামনা পূর্ব হইবে না উপরের ইচ্ছা বাতীত।

ব্রাক্ষরযোর তান্তান।

"সক্ষার প্রমন্তিবাং কর্মন অন্ধ নিচবাং কুশ্যার শ্রমনিতবাম।" ''শবং চব। থে। পেরং নাজি। ধর্মঃ মধ্যোং ভূতানাং ধরু।"

'সুতীয় সংসরণ।

क्लिकां जा।

ইতিয়ার ক্ষিত্র ক্ষিত্র প্রীন্তিনাহন রক্ষিত্র হার। - ইতিক জান্ত কাশিত। : • ইত ক্ষেত্র ক্ষেত্র ।



ব্রাহ্মধর্মের অনুষ্ঠান।

উপাসনা।

- (১) প্রতিদিন অন্যুন ছুই বার ঈশ্বরের ভিপাসনা করা বিধেয়।
- (২) যে স্থানে অপবিত্র ভাব মনে উদয় ছইতে পারে, বা একাগ্রতার ব্যাঘাত ছইতে পারে: সে স্থানে উপাসনা করা উচিত নদে।
- (৩) নির্জনে বেমন নির্মিত রূপে ঈশ্বরো-পাসনা করিবে, সেই রূপ ব্রাহ্ম জাতাদিনের সহিত প্রীতি-রসে মিলিত হইয়া নির্মিত রূপে নামাজিক উপাসনা করিবেক।

- (৪) শান্ত সমাহিত ও একাজে-চিত হইর। সর্বাসাকী সূর্বান্তর্যামী পুরুষকে অন্তরে দাক্ষাৎ দেখিরা তাঁহার উপাদনতে প্রবৃত্ত হইবেক।
- (৫) উপাসনার তিন অঙ্গ-- প্রার্থনা, ক্লডছাত্তা ও আরাধনা। পাপ হইতে মুক্ত হইবার
 ছান্য ও ঈশ্বরকে প্রাপ্ত হইবার জনা প্রার্থনা;
 আমাদিশের উপর ঈশ্বরের অসদৃশ ও অপার
 কহণার জন্য ক্লডছতা; এবং হৃদরে সেই
 নিহ্নদঙ্ক সত্য-মরপকে দর্শন করিয়া ভক্তি
 পূর্বক ভাঁহাতে আত্ম-সমর্পন করা ভাঁহার
 আরাধনা।
- (৬) কাল-সহকারে প্রণালী-বন্ধ উপাসনা মেবিক হইরা উঠিতে পারে। কতক গুলিন শব্দ বার্মার উচ্চারণ করিতে করিতে তাহা কঠছ হইরা বার এবং উচ্চারণের সময় তাহা-শেষ অযুর্থ ভাব মনে উদর না হইতে পারে। বাহাতে উপাসনা এক প্রকার মৌবিক না হয়,

এমত টেফ্টা করিতে কদাপি অবৈহেলা করি-বেক না।

(৭) কখন কখন উপাসনা করিতে গারা ঈশ-রের স্মাবির্ভাব দেখিতে পাওয়া যায় না এবং আলা নিৱাশ ও নিৱানক হইয়া কিরিৱা আইনে। যদিও বিষয়-চিন্তা হইতে নিরুত হইরা আত্মাকে সভ্য-শ্বরূপে সমাধান করিতে সাধাাতুদারে চেফা করা যায়, তথাপি হয় তো চিত্তের একাগ্রতা জন্মে না ও ঈশ্বরের প্রেম-মুখ সন্দর্শনের আমন্দ লাভে বঞ্চিত হইতে হয়। এ প্রকার ভাবের কারণ কি? ন। শরীর মন বা আত্মার অসুস্থাবস্থা; অর্গাৎ শরীর-বের রোগ, মনের শোক বা আত্মার পাপ-ৰিকার। রোগ ও বিপদের উপর আমাদের কর্ত্ত নাই; কিন্তু পাপাদক্তি নিরাক্ত করিয়া একাগ্রা-চিত্তে ঈশ্বরের পথে আত্মাকে লইরা

উপাসনার ক্ল-লাভে অবশ্যই অধিকারী e কুতকার্য্য ছইবেন।

(৮) যে পাপ হইতে নিক্ষৃতি পাইবার জন্য ঈশ্বরের নিকটে প্রার্থনা করা যার, ডাছা পরি-হার করিবার ইচ্ছা ও প্রতিজ্ঞা যেন বলবতী খাকে; নতুবা সে প্রার্থনা কথন সিদ্ধ হইতে পারে-না।

আত্ম-পরীকা।

- (১) সমরে সমরে আত্মানুসন্ধান করিরা দেখা উচিত, আমাদের কত উরতি বা কত চুর্যতি হইতেছে; কত পুণা ও কত পাপ সঞ্চিত হইরাছে? সংসারের কোলাছল মধ্যে অন্তর্গ বি জাঞ্রং রাখা অত্যন্ত আবশ্যক।
 - (২) আত্মাকে পরীক্ষা করিবার সময় এই

সকল বিষয় আলোচনা করিবেক—কৈ রূপে সময় ক্ষেপণ করিরাছি; ত্যাগ স্বীকার করিতে কি পর্যান্ত সক্ষম ছইরাছি; যে যে পাপ করি-রাছি, তাহার পূর্বে সাবধান ছইরাছিলাম কি না, ও তাহার পরে অক্তরিম অনুশোচনা করি-রাছিলাম কি না; যাহা কিছু সৎকর্ম করিরাছি ভাহা অপেক্ষা অধিক কিছু করিতে পারিতাম কি না; যে পর্যান্ত ক্ষমতা সে পর্যান্ত ধর্মের জন্য চেষ্টা করিরাছি কি না।

(৩) ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র পাপ অবহেলা করিবেক না।
আত্মাতে একটা ছিত্র থাকিলে অন্মরেরা আদিরা
তাহা অধিকার করে। কোন পাপকে লঘু মনে
করিলে তাহার আর লমুছ থাকে না। জতএব
সর্বাদা প্রহরীর নাার সতর্ক থাকিবেক। "ইন্দ্রিরাণাস্ক সর্ব্বোহ যদেকেং ক্ষরতালিরম্ তেনাসা
করতি প্রজ্ঞা দৃতেঃ পাত্রাদিবোদকং" "সকল
ইন্দ্রিরের মধ্যে বদি এক ইন্দ্রিরের স্থালন হর,

তৰে তাহাতেই লোকের বুদ্ধি জংস হয়; বেমন চৰ্ম্মর পাত্রের এক মাত্র ছিন্তে ছারা সমুদর জল নিঃসত হইয়া যায়।"

- (৪) আপনার গুণকে অপ্প ও দে, বকে রহৎ করিয়া দেখিবেক।
- (৫) যে টুকু উরতি হইরাছে, তাহার জন্য
 দস্ত বা অভিমান করিবেক না। যেনন হওরা
 উচিত তাহার সহিত তুলনা করিলে আমাদের
 উরতি যৎসামান্য বলিয়া প্রতীরমান হর। অধম
 লোকদিগের সহিত তুলনা করিলে মন আত্রগৌরবে স্ফীত হইতে পারে; কিন্তু আমরা
 বতই সাধু হট না কেন, এক বার অনস্ত উরতির দিকে লক্ষ্য করিলে কে না আপনার অংক্থা
 ভাবিয়া লক্ষ্যিত হয় ?
 - (৬) আপনার যথার্থ অবস্থা জ্ঞাত হইবার জনা ঈশ্বরের প্রতি দৃষ্টি রাখিবেক, তাঁহার কত নিকটবর্থী হইতে পারিয়াছি তাহা আলোচনা

করিবেক, ভাঁহার ভাবের সহিত আপনার ভাব তুলনা করিবেক, তাহা হইলে উন্নতির সঙ্গে নত্রতা ও বিনয় সর্বাদা থাকিবে। অত্যুক্ত পর্বাত-তলে প্রকাণ্ড হন্তীকে একটী ক্ষুদ্র মেষের ন্যায় বোধ হয়।

(৭) পাপ জন্য অনুশোচনার সময় ঈশ্বরের করুণা স্থারণ করিবেক। মনে করিবেক যে যদিও তাঁহার আদেশ লজ্জ্বন করিয়াছি, যদিও তাঁহার স্নেহময় উপদেশ বার বার হেলন করিয়াছি, তথাপি তিনি আমার উপর করুণা বর্ষণ করিয়াছেন; আমার ক্ষুধা তৃষ্ণা শান্তি করিয়াছেন; আমারে ক্ষুধা তৃষ্ণা শান্তি করিয়াছেন; আমাকে পরিধের বন্ধ দান করিয়াছেন এবং জননী হইতেও অধিক স্নেছে আমাকে লালন পালন করিয়ানালা প্রকার স্বংখ স্থী করিয়াছেন। সরল মনের পক্ষে এই চিন্তা আত উপকারিণী।

- (১) ব্ৰধা আমোন হইতে বিৱত থাকিতে মুজুবান ছইবেক।
- (২) অসং সঙ্গে, অসং গ্রন্থ পাঠে, পাঠি আদি ক্রীড়ায়, অনর্থ পরিহাসে ও পরনিন্দায় আমোদ করিবেক না।
- (৩) ব্রাক্ষের সকলই ঈশ্বরেতে সমর্পণ করিতে ইইবেক, ভাঁহার জীবনের কোন কর্ম ভাঁহা হইতে বিচ্ছিন্ন নহে।
- (৪) অত এব আমোদকে ক্রমে ধর্মের পথে
 নিয়োগ করিতে হইবে। যাহাতে কেবল ঈশুরেতেই আনন্দ হয়, তাঁহার শ্রবণ মনন নিদিধাসন ও
 তাঁহার কার্য্যসূষ্ঠানে আনন্দ হয়, এ প্রকার
 যত্ন আবশ্যক। আনন্দ এবং পবিত্রতা, কর্ত্বর
 এবং ইচ্ছা যথন সন্মিলিত হয়, তথনি আত্মা
 সর্কেৎক্রফ ভাব ধারণ করে। '' আত্মক্রীড়

আত্মরতিঃ ক্রিরাবানের ব্রহ্মবিদাং বরিষ্ঠঃ" "ইনি পরমাত্মাতে ক্রীড়া করেন, ইনি প্রমাত্মাতে রমণ করেন এবং সংকর্মশীল হরেন; ইনিই ব্রাহ্মদিগের মধ্যে শ্রেষ্ঠ"।

- (৫) বাহারা আমোদ প্রমোদে অধিক আসক্ত, তাহাদের আত্মার গান্তীর্য অপ্স, সত্যের ভাব শিথিশ এবং ধর্মের কঠোর চিন্তা ও কঠোর অসুষ্ঠানে তাহারা অশক্ত।
- (৬) সংসারের অনিভাতা স্মরণ করিলে রর্থ।
 আনোদের প্ররত্তি আপনা হইতেই চলিরা বার।
 আনাদের সমর অতি অপা; কখন মৃত্যু হইবে
 ভাহা কিছুই ছির নাই।

অর্থব্যয়।

(>) ঈশ্বরের প্রির কার্য্য সাধনোন্দেশে অর্থ

উপাৰ্চ্চন করিবেক ও তাঁহার আদেশানুসারে ভাহা বার করিবেক।

- (२) স্বেচ্ছাচারী ছইরা অর্থ বার করিবেক না; ইহার জনা আমরা ঈশ্বরের নিকটে দারী। তিনি বাহাকে বত অর্থ দিরাছেন, তাহার নিকট হইতে সেই পরিমাণে ধর্মোরতি সাধন চান।
- (৩) সাংসারিক প্রয়োজনীর ব্যর সমাধা করিয়। বে ধন উদ্ভ ছইবেক, তাছার ষষ্ঠাংশ ধর্মোন্নতি সাধনের জন্য প্রদান ক্রিবেক।

অভ্যৰ্থনা।

- (১) অভ্যর্থনা যদিও সামাজিক নির্ম ম জ,
 ভ্রণাপি ইছাংযন সভা ধর্মের বিক্লে না হর।
- (২) পিতা মাতা আচাৰ্য প্ৰভৃতি গুৰু লোক ভিন্ন কাছাকেও প্ৰণাম করিবেক না। সমানে

সমানে নৃষ্ঠার করিবেক। জাতিভেদ গুৰু লমু মনে করির। প্রণাম নম্কার করিবেক না।

সময়।

- (১) সমর অমুলা ধন, ইহা সকলেই জানেন।
 সমমের উপর ধর্মাধর্ম নির্ভর করিতেছে। অর্থ
 বারে যে প্রকার বিবেচনা ও যতু করা বিধের,
 সমর ক্ষেপ্ণ বিষয়েও তজ্ঞপ।
- (২) সমর আর জীবনে কোন ভেদ নাই,
 ইহা বলিলেও বলা যাইতে পারে। যেহেতৃক
 সমর লইরাই আমাদিগের জীবন। যতটুকু
 সমর ভাল রূপে কেপণ করা যার, ততটুকু
 আমারদের জীবন, আর যতটুকু আলসা বা
 কুৎসিত কর্মে গত হয়, ততটুকু মৃত্যুর প্রতিরূপ মাত্র। যিনি এক শত বৎসর জীবিত

- খাকিয়া কেবল পাঁচ বংসর সংকর্মে ক্ষেপণ করেন, তাঁহার আয়ু পাঁচ বংসর বলিয়া নির্দিষ্ট হয়। অতএব সময়কে নফ্ট করা এক প্রকার প্রাণকে আহাত করা হয়।
- (৩) আদ্স্য সকল পাপের মূল। সর্ব্ব প্রয়ত্ত্ব ইহাকে পরিত্যাগ করিবেক।
- (৪)- আমাদের জীবন ক্ষণস্থায়ী। "কোহি জানাতি কমাদ্য মৃত্যুকালোভবিষাতি।" "কে জানে অদ্য কাহার মৃত্যুকাল উপস্থিত হইবে।" অতএব যে কয় দিবস এখানে থাকিতে হয়, তাহা সাধু কর্মে সাধু চিন্তায় ক্ষেপণ করিতে কদাপি অবহেলা ক্রিবেক না; নতুবা মৃত্যু-শ্যায় সন্তাপ করিতে হইবে।
- (৫) যিনি সর্বাদা এ লোক ছইতে অবস্ত ছইতে প্রস্তুত রহিয়াছেন, তিনিই উত্তম রূপে সময় কেপণ করিতেছেন।
 - (৬) কখন মনে করিবেক না যে আমার কর্ম

নাই, আমি কি করিব? **ঈশ্বর বাছার লক্ষ্য,** আকাণের ন্যায় অনস্ত তাছার ক**শ্ব।**

(৭) সর্বাদা কর্ত্তবা-জ্ঞানকে জাগ্রাৎ রাখিবেক ও নধ্যে মধ্যে মৃত্যুকে স্মরণ করিবেক।

সত্যবাক্য।

- (১) সভ্য কথা কছিবেক। কোন বিষয় বর্ণনা করিবার সময় এ প্রকার ভাবে বলিবেক, যদ্ধারা অন্যের মনে ভাছা বর্থারূপে প্রভিডাভ হয়।
- (২) সহসা কথন প্রতিজ্ঞা করিবেক না।
 কোন গুৰুতর বিষয়ে "এ কর্ম করিব" না
 বলিরা "ইছা করিতে চেন্টা করিব"—"আমি
 ঠিক জানি" না বলিয়া "আমার এ প্রকার
 বোধ হইতেছে" ইছা বলা বিধেয়; কি জানি
 মদি সে কর্ম করিয়া উঠিতে না পারি, মদি
 সে বিশ্বাস ঠিক না হয়।

(৩) ত্রাক্ষের কাম-মনো-বাক্যে এ প্রকার ব্যবহার করা উচিত, যাহাতে তাঁহার কথাতেই সকলে বিশ্বাস করে। তিনি এক বার যাহা বলিবেন, তাহা সত্য কি মিখ্যা যদি কেহ সন্দিগ্ধ হইরা পুনর্বার জিজ্ঞাস। করে, তাহা তাঁহার পক্ষে অপমান।

নিউর ।

- (১) অন্যের উপর সম্পূর্ণ নির্ভর করা উচিত নছে। ঈশবের উপর নির্ভর করিবেক, অন্য লোকের নিকট সাহায্য লইবেক এবং আপনাকে ধর্ম্মবলে বলীয়ান্ করিবেক।
- প ২) অন্যের বলের উপর আপনার উরতি ছাপিত করা বালুকার উপর গৃহ নির্মাণ করা বা বীর্যাহীন শীর্ণ শরীরকে লেছি কবচে আরভ করার সমান। অতএব যাহাতে আলা নিজ

বলে **দ্ব্যারের** দিকে গমন করিতে পারে, সেই রূপ চেফা করিবেক।

্ ২) যে কোন জ্ঞান উপাৰ্চ্ছন করা যায়, ভাহা চিন্তা দ্বারা আপনার আয়ত্ত করিতে ·হইবে ৷ মনকে কেবল উপদেশের গৃহীতা না করিয়া উপদেশের ভাবুক করিতে হইবৈ; নত্বা উপাৰ্চ্ছিত সতা সঞ্চলত পুলের নাাৰ ক্ৰমে শুষ্ক হইয়া যাইবে। ধ্ৰন আলোচনা ও চিন্তা হারা সভাকে আত্মতে বন্ধ-মূল করা যার, তথন তাহা নীরস হইতে পাৰে না, ভাহা হইতে অনস্ত কাল পৰাত্ত নৰ নৰ সতা-কলিকা প্ৰস্তুত ছইতে वादक 4

কৰ্তৃত্ব।

২০ বনর প্রবৃত্তি সকল অন্ধ্র শক্তির ন্যার
 কার্যা করে। অতএব তাছাদিগকে আবারদের

কর্মের প্রবর্জক না করিয়া কর্ত্তব্য-জ্ঞানুকে ধর্ম-বুদ্ধিকে স্বীয় পদে প্রতিষ্ঠিত্ত করিতে ধতু করিবেক।

- (২) প্রবৃত্তির বশাভূত হইলে জড়পদার্থের ন্যায় কেবল বাছ-আকর্ষণ হারা পরিচালিত হইতে হয়; আপনার উপরে কোন কর্তৃত্ব থাকে না। কিছ ধর্মের আদেশের অনুগামী হইলে কর্তৃত্ব সহকারে সমুদ্র বৃত্তিকে ঈশ্বেরর পথে নিয়োগ করিতে পারি f
- (৩) কৰ্ত্তব্য জ্ঞানের আধিপত্য হৃদয়ে সংস্থা-পিত করিলে কর্ত্তব্য ভাব প্রস্কৃতিত থাকে।
- (৪) কর্ত্তব্য-জ্ঞানের জ্ঞাদেশ ষত অবছেল।
 ত শতিক্রম করিবে, ততই কর্তৃত্ব শক্তির হু।ল
 হুইবে, তত্তই আত্মা ইন্দ্রির নিপ্রাহে অসমর্থ
 হুইবে; আর যত ইহার অনুগামী হুইবে, তত্তই
 আত্মা তেজ্ববী ও পরাক্রমশালী হুইরা সকল
 কুপ্রবৃত্তিকে পরাজ্য করিবেক।

(৫) অতএব ইছার আদেশ থালন করিতে
সর্বাদা যত্ত্বীন্ থাকিবেক। যে কোন কর্ম উচিত
বলিয়া বোধ ছইবে তৎক্ষণাৎ তাঁহার অনুষ্ঠান
করিতে চেন্টা করিবেক; সকল আকর্ষণ অতিক্রম করিবেক, সকল তাাগা স্বীকার করিবেক,
কোন যন্ত্রণাকে যন্ত্রণা বোধ করিবেক না। যদি
চেন্টা একবার বিফল হয়, যদি একবার পাতিত
হঙ, পানর্বার উল্থিত হইয়া নব উদ্যমের সহিত
অগ্রসর হইবে। আলসা ও উপেক্ষা সর্বাদা দুরে
রাখিবে।

কোতৃহল।

(১) বেবিন কালে কেভিছল প্রবল হয় এবং

স্তন স্তন বস্তার প্রতি অনুসাগ জন্ম। অত
এব আলোচনা করিয়া দেখা উচিত, আমরা
কেভিছল-পরবল হইয়া ধর্ম কর্ম করি, না সত্য
ভাব দারা পরিচালিত হই।

- (২) ধর্মের ভাব কখন কখন বাছা বিষয়ের উপর নির্ভর করে, দেই সকল বিষর্ম উপস্থিত হইলে তাছা উদিত হর এবং অন্তরিত হইলে তাছা অবসর হয়। স্থান বিশেষে, কাল বিশেষে ও সঙ্গ বিশেষে প্রীতি, পবিত্রতা, আনন্দ এবং উৎসাহ উদায় হইতে পারে। কিন্তু সে সকল ভাব স্থায়ী নহে। অভএব তাহাতে সম্ভর্ম হইয়া নিশ্চিম্ভ ধাকিবেক না। ধর্মের ভাব ক্রেমে ক্রমে মনের স্বাভাবিক অবস্থা করিয়া আনিতে হইবে।
- (৩) ধর্মের ভাব পর্বতের নার অটল। ধর্মের সহায়ে চঞ্চল যৌবন কালেও আত্মাকে বলীভূত করিবেক।

পোত্তলিকতা।

(১) ঈশ্বরকে স্মরণ করিয়া পুত্তলিকাকে
আর্চনা করিলে ব্রাহ্মদিগোর যে দোষ হয় না

ইহা কপটের বাক্য। কোন ব্রাহ্ম এ প্রকার । গার্হিত কর্ম করিবেন না।

- (২) কপটতা পরিজাগ করিবেক। কপট বাক্তি ক্ষর অপেকা ক্ষুদ্র মমুষাকে অধিক ভর করে এবং লোকদিগকে প্রভারণা করিতে গিরা আপনার আত্মাকে সত্য হইতে বঞ্চিত করে। "বোনাধা সন্তমাত্মানমন্যথা প্রতিপদ্যতে। কিং তেন ন ক্বতং পাপং চৌরেণাত্মাপহারিণা।" "যে ব্যক্তি এক প্রকার হইয়া আপনাকে অন্য প্রকারে জানার, সেই আত্মাপহারী চোর কর্ত্ত্বক কি পাপ না ক্বত হর?"
- (৩) পৌত্তলিকভার সহিত কিছু মাত্র সংশ্রব রাথিবেক না। পৌত্তলিক-ক্রিয়া-কলাপে নিম-স্ত্রণ রক্ষা করিবেক না, পৌত্তলিকভার কোন চিহ্ন ধারণ করিবেক না, পৌত্তলিক ভাবে কা-হারও সহিত আলাপ করিবেক না।
 - (৪) বাক্ষধর্মের ব্যবস্থা মতে জাত-কর্ম,

নাম-করন, উপনয়ন, ধর্ম-দীক্ষা, ব্রাছ, অ-ভ্যেক্টি-ক্রেয়া মাবতীয়, গৃহ-কর্ম সমাধা করি-বেক। উপনয়নের সময়ে উপবীত গ্রেছণ করি-বেক না।

(৫) কেবল বাহ্নিক পৌত্তলিকতা ব্রাক্ষণ বি নিষেধ করিতেছে, এমন নহে। ইহা পরিছার করা তো সহজ। আধ্যাত্মিক পৌত্তলিকতা অতীব ভরানক। বিষয়স্থাভিলাব, বানাকাণ্ড্, কান, কোন, লোভ, দ্বেন, দ্ব্র্যা প্রভৃতি মানসিক প্রবৃত্তি সকলের শরণাগত অনুগত দাস হইরা তাহাদের সেবাও উপাসনা করাকে 'আধ্যাত্মিক পৌত্তলিকতা বলে। এ

সংসার।

() अक मिटक मश्मात्र,चात्र अक मिटक मेचेत्र ।

সংসার হইতে মুক্ত হইরা ইশ্বরের নিকটে বাওরাই আমারদের জীবনের উদ্দেশ্য।

- (২) আমরা কি সংসার পরিভাগে করিব ? কোন জন-শূন্য অর্ণো গিয়া কেবদ খ্যান-পরায়ণ হইয়া থাকিব ? ডাভা নহে। ব্রাক্ষণর্যের আদেশ এই; সংসারে থাকিবে, কিছু তাহাতে অনাসক্ত হইয়া মোহেতে আবদ্ধ হইবে নাঃ সংসার সাগারের উপরে ধর্ম-পোতে আরোহণ क्रिया क्षेत्र महायु नहेत्र इलिया याहेत्व. ইহাতে নিময় হইবে না; অমৃত ধামের যাত্রীর नात्र मश्माद्य विषय कदित्व, विव विद्यातीन ন্যায় বিষয়-সূথ লক্ষ্য করিয়া ইহাতে বদ্ধ খা-কিবে না।
- ্ (৩) স্বার্থপিরতা হইতে মুক্ত হওরাই সংসার হুইতে মুক্ত হওরা। "যদা সর্ব্বে প্রভিদ্যন্তে হুদর্গ্যাহ গ্রন্থার। অথ মর্ক্তোহ্ন্যুতোভ্ব-ভ্যেতদেবামুশাসনং।" "বে সময়ে এখানে হুদর

গ্রন্থি ভগ্ন হয়, তথনই জীব অমর হয়েন; এতা-বন্মাত্র উপদেশ জানিবে।"

- (৪) যথার্থ বৈরাগ্য অন্তরে। মনে দদি
 বিষয়াসজ্জি প্রবল রহিল, তবে শরীরকে অরগো
 লইয়া গোলে কি হইবে গেই বাজিই সংসারী,
 বে ঈশ্বরকে ভূলিয়া সাংসারিক স্থথে লিশু
 রহিয়াছে। সেই বাজিই বৈরাগী, যাহার
 অমুরাগ ঈশ্বরেতে, যে কেবল ঈশ্বরের প্রির
 কার্যা সাধনের উদ্দেশে সংসারে থাকে।
- (৫) যথন আমাদের সম্দর রাজ ও সকল
 শক্তি কেবল আপন আপন আর্থপরতা চরিতার্থ
 করিবার জন্য নিয়োজিত হর, তথন আমাদের
 জীবন সাংসারিক জীবন। এই সাংসারিক জীবন পরিতাগা করিয়া ধর্মেতে ঈবরেতে পুনজীবিত হইতে হইবে। বাঁহারা এই প্রকার
 সূতন জীবন ধারণ করিয়া ব্রহ্মাসুরাগো দীও
 হইয়া সংসার-ধর্ম পালন করেন, ভাঁহারাই

ব্রাক্ষ। তাঁহাদিগের নিকটে সংসার যে রূপ ভাব धात्रण करत, विषत्री लाक्षिरणत निकटि म প্রকার প্রতীত হয় না । যেমন শরীর মৃত হইলে বাহা বিষয়েতে অসার হইয়া পড়ে, ভজপ সাংসারিক জীবন অতিক্রম করিলে সংসারের সুৰ হুঃখে সম্পদ বিপদে, আশা ভয়ে, আজা আর বিচলিত হয় না। "অধ্যাত্মযোগাধিগমেন দেবং মতা ধীরোহর্বশোকো জহাতি।" ধীর ব্যক্তি অধ্যাত্মযোগ দারা সেই পরম দেবতাকে জানিয়া হর্ষ শোক হটতে মুক্ত হয়েন।" সুধীর ব্রাক্ষ সংসারে 'নানা প্রকার কর্ম্মে নিযুক্ত খাকেন, নানা প্রকার অবস্থাতে বিচরণ করেন: কিন্তু ভাঁহার লক্ষ্য, আশা, আমন্দ, সক্লি পর-(मश्राद्य कित तिहताहा । जेवरतत क्रमा मश्मात. ज्यास कारमद कमा कीवन, कीवराद नका नेचंद्र; ইছা মনে রাখিয়া জীবন বাত্রা নির্ব্বাহ করিবেক।

প্রাতি।

- (১) ঈশরের উপর প্রীতি স্থাপন করিবেক; ভাষা হইলে সকল মনুষ্যের প্রতি ভাতৃ-সৌ-হার্দ্ধ হইবেক।
- (২) ঈশরেতে প্রীতি স্থাপিত হইলে সন্ত্যের প্রতি প্রীতি হইবে। তাঁহার সত্য স্থলর মঙ্গল ভাবের উপর প্রীতি করিলে তাঁহার পবিত্রতা আমারদের নিকটে জাজ্মলামান প্রকাশ থা-কিবে। ঈশ্বর-প্রীতি কি? না অপাপবিদ্ধ নিষ্কলঙ্ক সত্য-স্বরূপের প্রতি প্রীতি। 'সত্যে কর প্রীতি পাইবে পরিত্রাণ"।
- (৩) সভাের প্রতি প্রীতি হ^টলে যে স্থানে ও যে সমরে যে ব্যক্তিতে ও যে পুস্তকে সভাের ভাব বিশেষ-রূপে প্রকাশিত হর, তাহাতেই প্রীতি প্রবাহিত হইতে থাকিবে। যথা, বাদ্ধ-সমাজ, উপাসনার সমর, ব্রদ্ধ-পরারণ ব্যক্তিন্ র্মা-প্রতিপাদক গ্রন্থ।

- (8) এ প্রকার নিয়মে যাহার প্রীতি নিয়মিভ না হয়, তাহার প্রীতি অপ্রশস্ত।
- ় (৫) ঈশ্বরের প্রতি প্রীতি কি রূপে জানা বার ? না প্রথমতঃ তাঁছার সহবাসের ইচ্ছা, দ্বিতীয়তঃ তাঁহার সহিত যাহা কিছুর সম্বন্ধ আছে তাহাতে প্রীতি স্থাপন করা, তৃতীয়তঃ তাঁহার জনা ত্যাগা স্বীকার করা।

মোহ।

- (১) প্রীতির বিকার মোছ।
- (২) অর্থ, শারীরিক স্থপ, যশ মান সন্তম, দ্রী পুত্র পরিবারের প্রতি আমাদের যে স্বাভাবিক অনুরাগ, তাহা যদি ঈশ্বরের প্রতি প্রীতিকে অতিক্রম করে, তবে তাহাই মোহ। এই মোহ আমারদিগকে সংসারের পাশে আবদ্ধ করে, এজন্য ইহা আত্মার উন্নতির এক প্রধান প্রতি-বন্ধক।

- (৩) পরাৎপর সত্তস্ত্রপে প্রীতি স্থাপন করাই মোহ প্রতীকারের এক মাত্র ঔষধ।
- () সংসারের ক্ষুদ্র অনিক্তা পদার্থ সকল আন্তার কদাপি প্রীতির আস্পদ নছে।
- (৫) স্থাধের জন্য, স্বার্থপরতা চরিতার্থ করি-বার জুন্য, সংসারকে কখন প্রীতি করিবেক না; ক্রমরের মন্ত্রলাভিপ্রায় সম্পন্ন করিবার ক্ষেত্র বলিয়া সংসারকে প্রীতি করিবেক।

ভাতদোহাদ।

(১) ঈশ্বরকে যেমন পিতা বলিরা প্রীতি করিবেক, সকল লোককে তাঁহার সন্তান বলিরা প্রাতৃ ভাবে দেবিবেক। এ ছুই ভাব যথন সন্মিলিত হুইরা হৃদর-রাজ্ঞা অধিকার করে, তথন পবিত্রতা ও আনন্দ সহক্রেই উপলব্ধি করা হার; তথন ধর্মের কঠোর ভাব আর

(২) ভাড় দৌহার্দের প্রধান প্রতিবন্ধক স্বার্থপরতা, অভিমান, দ্বেষ ও পরমিনা। স্থার্থপরতা থাকিলে কেবল আপনার লইয়াই ব্যস্ত থাকিতে হয়; আপনার সুধে, আপনার मर्शामार्टि पृथि जत्य। इनरत्रत वह कृष्टिन গ্রাম্থি স্বার্থপরতাকে ছেদন করিয়া ঈশ্বরের মঙ্গল ভাবের অনুকরণ করিবেক। আপনার যদিও গুণ থাকে, জ্ঞানা কদাপি অভিনান कदिर्वक मा ; आमाहमा कदित्रा मिथल জানিতে পারা যার যে আপনার বিশুরও দোষ আছে এবং অনেক বিষয়ে অন্যোরা আমা অপেকা শ্রেষ্ঠ। বিনয় অবলম্বন করিবেক: विमशी ७ मछ ना इहेटन जैबंदार निकार कि যাইতে পারে না। অন্যের দেখি দেখিলে एवर अथवा मृगा शांकित्वक मा। (वव व मृगा शार्भत्र श्रावि धावि इहेरव, भाभी मारकत প্রতি নছে। কি সাধু কি অসাধু, সকলেই

ভাতা। সক্লকেই প্রীতি করিবেক। ভাতার দোষ ক্ষমা করিবেক। দোষ করা মৃত্যোর শ্বভাব, ক্ষম করা দেবতাদের ধর্ম। "ক্ষমা ৰশীক্ষতিলোকে ক্ষমা হি পরমং ধনং। ক্ষমা **ওণোহাশক্তানাং শক্তানাং ভূষণং ক্ষমা।** "ক্ষমা দ্বারা লোক বশীভূত হর, ক্ষমা পর্ম धन ; क्रमा अनंकिमिरात्र श्रुन, नंकिमिरात्र ছুষণ।" কৰুণাৰ্ড হইয়া অন্যের দোষ সংশে-ধন করিতে যতুবান হইবেক; সেই দোৰ পরিত্যক্ত হইলে দ্বেষের বা স্ণার আর কারণ থাকিবেক না। মনুষাকে প্রীতি করিতে হইবে, व्यथक शाशिक मुना कविएक इवेट्न। श्रादाक भविनमा अछास प्रगीत। याहावा **अहे** नीह প্রবৃত্তির অমুগামী হর, তাহারা মন্যকে প্রীড-নয়নে দেখিতে পায় না, এবং লোক-সমাজে विषय ७ रेवद्र-छाव मश्चार्थन करत। रव হ্মদরে পর-নিন্দা রাজা, সে হদরে প্রীতি বাস করিত্তে পারে না। ছল বিশেষে হিতের নিমিত্তে অন্যের বদি দেশ্ব দেখাইতেও হর, ছাহার হণও কেন না মুক্ত কঠে স্বীকার কর? "জনান্ পরিবদন্ সাধুর্যথা হি পরিজ্ঞাতে। তথা পরিবদন্দান্ তৃষ্টোভবতি হর্জনং"। "জনোর পরিবাদ দিয়া সাধু ব্যক্তিবেসন সম্বর্গ হরেন, তৃর্জন ব্যক্তি ভজ্ঞপা

- (৩) অসমরে অন্যকে সাধ্যমতে সাহাব্য দিক্তে চেক্টা করিবেক। স্নেহ, দরা, পরোপ-কার, এ সকল প্রীতির ভিন্ন তির রূপ মাত্র।
- (৪) সকলেই ঈশ্বরের অমৃত ধামের বারী,
 অভএন ভাতভাবে সকলের সহিত মিলিড
 হইরা ভাল ধর্ম ও প্রীতি দারা পরক্ষারকে
 সাহাব্য করত সেই অমৃত থামের প্রতি অপ্রসর হইতে হইবে।

পবিত্রতা।

- () আত্মাকে পৰিত্ৰ করাই আমাদের সমুদর কার্যোর লক্ষ্য থাকিবেক। কর্ম দারা পাপ্
 পূণ্য আত্মা ছইতেই জ্ঞামে, আত্মাই সকল কর্মের
 মূল। অতএব আত্মার প্রতি সর্বাদা দৃক্তি রাখিবেক।
- (২') কেবল বাহ্যিক অমুষ্ঠানের গুন্য বাস্ত থাকিবেক না। আত্মাকে পবিত্র করিলে অমু-ষ্ঠান আপনাপনি বিনিঃস্ট্ড ছইবেক। ব্লক্ষের মূলে জল সিঞ্চন কর, তবে নিশ্চরই ইছা সারবান্ হইয়া ফলে ফুলে স্থগোভিত ছইবে।
- (৩) বধনই কোন অপবিত্র কামনা মনে উদর হইবে, তৎক্ষণাৎ ঈশ্বরের শরণাপর হইরা ভাঁছার নিকটে প্রার্থনা করিবে যে তিনি ভোমাকে সে পাপ হইতে রক্ষা করেন। যদি ভর্মলভা বশতঃ পাপে পতিত হও, অক্তরিম

অনুশোচনা করিবে ও পুনর্বার উথিত ছইতে প্রাণ-পণে চৈষ্টা করিবে।

- (৪) **আত্মার বিকৃত অবস্থাতে** কথন কথন যথার্থ অমৃতাপ হয় না। যদ্রপ শরীর অসার হংলে কোন আঘাতের যন্ত্রণা জানা যায় না, ভজপ আত্মার চৈতন্য না থাকিলে আত্মপ্রানি অমুভূত হের না। যে বাজির কর্ত্বা-জ্ঞান জাত্রাৎ থাকে ও স্ক্রারপে সকল বিষয় আলো-চনা করিতে সমর্থ হয়, তাহার একটা লযু পাপের জন্যও হঃসহ যন্ত্রণা উপস্থিত হয়। অতএব ধন্ম বুদি জাতাৎ রাধিবেক। তাহা হইলে পাপের সংস্পর্ম মাত্র আগ্রামানি উপ-স্থিত হইবে, এবং সেই পাপের প্রতীকারের জনা চেষ্টা করিতে পারিবে।
 - (৫) ইন্দ্রিরদিগকে দমন ও আত্মাকে বিশুদ্ধ করা মনের আলোচনা ও অভ্যাদের উপর অনেক নির্ভর করে। পাপ-প্রলোক্তনের দিকে

ৰত মন:সংকোগ করা যায়, তত্ই পাপের

আসক্তি রন্ধি হয় এবং যত পাপ অভ্যাস

করা যার তত্ই ধর্ম-বলের হ্যাস হর ও পাপের

পরাক্রম রন্ধি হয়। অতএব অভ্যাস দারা

অপে অপে মনকে পাপের বিষয় হইতে

অভ্যাস-জনিত পাপ অভ্যাস দারাই নিরাক্রত

হইবে। অনেক দিনের পাপ এক নিমেষে কি

(৯) কুসংসর্গ বিষবৎ পরিত্যাগ করিবেক।
সভ্য-শ্বরূপ পাবনের পাবন পরমেশ্বরের ও
সভ্যপরায়ণ সাধাগিগের সহবাসে থাকিয়া দিন
দিন আত্মাকে বিশুদ্ধ ও পবিত্র করিবেক। সেই
সর্কেসাকী পুরুষ সর্কাদা নিকটে রহিয়াছেন,
ইঙা শ্বরণ করিবেক। "একোহমন্দীত্যাত্মানং
বৃত্বং কল্যাণ মন্যসে। নিতাং স্থিতন্তে
ক্রান্যবপ্রাপাপেক্তিতা সুনিঃ।" "হে ভক্ত!

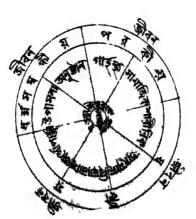
জামি একাকী আছি, তুমি যে মনে করিতেছ, ইহা মনে করিবে না। এই পুণাপাপদনী মক্ত্রিজ পুরুষ ভোমার হৃদরে নিতা স্থিতি করি-তেছেন।" "মোহজ্ঞালদা যোনির্হি মুট্টেরেব সমাগমঃ। অহন্যহনি ধর্মদা যোনিঃ সাধু-দ্মাগমঃ।" "মুঢ় বাক্তিদিগের সহবাদে দ্মুছ মোহের উৎপত্তি হয়, এবং প্রতিদিন সাধু সংস্থানিকত ধর্মের উৎপত্তি হয়।"

(৭) আপনার প্রতি যদি সদর ছইতে চাহ,
তবে নিষ্ঠুর ছইরা আপনার ইন্দ্রিরদিগকে
নিগ্রেছ কর। যদি আত্মাকে মহৎ করিতে
চাছ তবে বিনীত ও নম্র ছও। যদি জ্ঞানী
ছইতে চ'ছ, আপেনার অজ্ঞতার পরিচর
লও। যদি অন্যকে ধার্মিক করিতে চাহ অপ্রে
আপনি ধার্মিক ছও। যদি বাহ্নিক অমুষ্ঠান
করিতে চাছ, অন্তর বিশ্বদ্ধ কর।

জীবনের লক্ষ্য।

- (১) জীবনের কর্ম্মানা প্রকার, অবস্থানানা প্রকার, কিন্তু ইহার লক্ষ্য এক—ঈশ্বরকে প্রাপ্ত বঙ্গা।
- (২) বিনি সকল কার্যোতে এক মাত্র ঈশ্বরকে
 লক্ষ্য করেন ও সমুদর জীবন তাঁছগতে সমর্পণ
 করেন, তিনিই বাকা। সংক্রেপে বাক্ষের এট
 লক্ষ্য জানিবে।
- (৩) ব্রাক্ষ যিনি তিনি কি আমোদ করেন না, না বিষয় কর্ম করেন না? করেন, কিন্তু তিনি বিষয়ী লোকের নাার আমোদের জন্য জামোদ বা অর্থের জন্য বিষয় কর্ম করেন না; তাঁহার, লক্ষা দিগ্দশনের শ্লাকার ন্যায় অহো-রাত্র কেবল ঈশ্বরের দিকে স্থির রহিয়াছে।
- ' (৪) গ্রেছগণ ষেরপ্ সূর্ষোর চতুর্দিকে পরিভ্রমণ করে এবং ভাছাদের স্থীর স্থীর নির্দিষ্ট
 পাশ কথনো অতিক্রম করে না, সেইরপ ব্রাক্ষের

क्षेत्रस्य लक्षा ।



জীবন ঈশ্বেকে মধ্য ছলে রাধিরা তাঁছার চতুদিনে বিচরণ করে ও দিন দিন সমূলত হয়।

(৫) যখন এই লক্ষাটি জীবনের মধ্য-দেশে থাকে,
তথন সকল কার্যাের সহিত ঈশ্বরের সঙ্গে যোগা
গাকে, সকল কার্যাঃ একীভাব ধারণ করে, কিছুই
বিচ্ছিল্ল বা বিশ্র্জাল থাকে না। আমাদ ও ধনসংগ্রাহ এমন যে নীচ কার্যা, তাছা অবধি আর
ঈশ্বরের উপাসনা ও ধর্মানুষ্ঠান পর্যান্ত একই
কর্তব্যের মধ্যে আইসে।

(৬) জীবনের কর্ম তিন প্রকার, শ্বকীর পরকীর, এবং ধর্ম সম্বন্ধীর। আপনার জন্য যে সকল কার্য্য করি, তাহা সামান্যতঃ চারি প্রকার, শারীরিক কর্ম, আমােদ, বিদ্যাভ্যাস ও অর্থোপার্জন। অন্যের জন্য যাহা করি তাহা, গৃহকর্ম বা সামাজিক কর্ম, এবং ধর্ম সম্বন্ধীর কার্য্য, উপাসনা ও ধর্মাস্কান। এই সমুদ্র কর্মের লক্ষ্য কেবল ক্ষরকে প্রাপ্ত হওয়। এই লক্ষ্যটি মধ্য বিশ্

ঞুবং জীবনের সকল কার্য্য ইছার পরিধি-স্বরূপ ইইয়া ইছাকে আবেষ্টন করিয়া থাকিবেক।

কর্ত্তব্য শ্রেণী।

অ'মাদের কর্ত্তব্য ডিন প্রকার। ঈশ্বরের প্রতি.
আপান'র প্রতি ও মনুষোর প্রতি।

প্রথমতঃ ঈশ্বরের প্রতি। যিনি আমাদের অষ্টা, পাতা, সর্ব্ধ-দুখদাতা; থাহার প্রীতিতে আমরা, লালিত পালিত হইতেছি: আমরা বাঁহার প্রদাদে জ্ঞান ধর্ম লাভ করিয়াছি. অমৃতের অধিকারী হইরাছি: তাঁহার নিকট কুভজ্ঞত' প্রকাশ করা কর্ত্তব্য। যিনি ধর্মের आवड, शांवरनत्र शांवन, मकन मक्तलत्र आं-म्लाम, अमल महारिक आधात: यिम आमारमत পিতার পিতা এবং গুৰুর গুৰু; ভক্তি ও শ্রহা সহকারে ভাঁহার আরাধনা করা কর্ত্ব। আবার আমরা যধন পাপ করিয়া ভাঁহার নি-कहे अभवामी हहे, छैंहा हरेट मृद्र পতिड हरे, डाँशांत अमहका जांत (म अकांत अपू- ভব করিতে পারি না; তথন সেই পাপের কন্য অকৃত্রিম অনুতাপ করা কর্ত্তবা। কিন্তু আমরা আপন কুদ্বলে শাপের স্কৃতিত সংগ্রোম গরিতে পারি না; পুণা সঞ্চর করিতে গারি না, ঈশ্বরকে লাভ করিতে পারি না; গামরা পাদে পদে আপনার দুর্বলিতা অনুভব করি; এই ছেতু ঈশরের নিকটে সাহায়া পার্থনা করা আর এক কর্ত্ববা।

বিণি এই চারি প্রকার; ক্তজ্জতা, আরাধনা, মুতাপ, প্রার্থনা।

প্রতিষেধও চারি প্রকার।

'১। ঈশ্বরের বিষয় লইয়া উপহাস নাকরা, গৈছার পবিত্র নাম রখা উচ্চারণ নাকরা।

ং। মনে অবিশ্বাসকে স্থান না দেওরা, কেন
না "সংশ্বাজা বিনশাতি"।

্র। কপটতা পরিতাগে করা। কণ্টতা হু^{নি} প্রকার; আমি আপনি ভাল কিন্ত লো- কের মধ্যে তাছাদের মত আপনাকে দেখান, আর আপনি মন্দ কিন্তু বাছিক সাধুভাব প্রকাশ করা। এই উভয়ই পরিহার্য।

৪। বিষয়াসক্তি পরিত্যাগ করা। সংসার এবং ঈশ্বর এ উভয়কেই সমান রূপে সেবা করা যায় না।

দিতীরতঃ আপানার প্রতি। শরীর ও মনকে রক্ষা করা।

)। মন। মনের সমুদর র্ত্তিকে চালনা ও উন্নত করা। জ্ঞান ধর্ম ও ঈশ্বরের ভাব স্কল সামঞ্জসা রূপে উন্নত ও বিদ্ধিত করা।

২। শরীর। রোগের নিবারক,—হৃত্বতার সময় নির্মিত আহার পরিপ্রম ও বিপ্রাম; প্রতীকারক,—রোগের সময় ঔষধ সেবন।

তৃতীয়তঃ মহবোর প্রতি। সাধারণ মমু-বোর প্রতি এবং বিশেষ বিশেষ সময় জনিভ বে সকল কর্ত্তবা। ১। সাধারণ মনুষ্যের প্রতি । সভা বাব-হার এবং 'ন্যায় ও হিতৈষণা এই তিন প্রকার কর্ত্তবা।

সতা ব্যবহার তিন প্রকার; সতা যথার্থ রূপে নির্ণয় করা, অন্যের নিকট যথার্থ রূপে তাহা বর্ণনা করা এবং প্রভিজ্ঞা পালন করা।

নার ও হিতৈষণা। পরের কোন আনম্ভ না করা, নাায়; পরের হিত সাধন করা, হিতিষণা। এই নাার ও হিতেষণা চারি বিষ-রের প্রতি প্রযুক্ত ছইতে পারে।

- (ক) অন্যার বিষয়ের প্রক্তি। আন্যার বিষয় অন্যায় পূর্বেক গ্রেছণ না করা, ন্যায়; আন্যার সুখ সম্পত্তি রর্জন করা, ছিতিষণা।
- থে) মর্যাদার প্রতি। জন্যের মর্যাদার ছানি লা কঃা, নাার। অন্যের মর্যাদার ছানি ছইলে তাছা রক্ষা করিবার চেন্টা করা, ছিত্তৈ-স্বণা।

- (গ) শরীরের প্রতি। অনকে শারীরিক ক্লেশ না দেওয়া, নাগর। ক্লুধার্ডকে অর দিয়া ভৃষ্ণার্ডকে জল দিয়া, শীতার্ভকে বস্ত্র দিয়া রোগীকে ঔষধ প্রদান করিয়া শারীরিক ক্লেশ বিমোচন করা, হিতিষ্ণা।
- (ম্ব) মনের প্রতি। সুধ বর্জন করা ওংক্রে প্রেব্ত করা, হিটিহ্বণা।

তঃখ না দেওয়া ও পাপে প্রস্তুত না কংগ্র নাম।

অন্যকে ছুই প্রকারে পাণে প্রব্রত কর।

মাইতে পারে, আদেশ দ্বারা, উপদেশ দ্বারা
লোভ দেখাইরা এবং সাহায়। প্রদান করিয়া
লোভ দেখাইরা এবং সাহায়। প্রদান করিয়া
লোভ কেথাইরা, অন্যকে পাপ কর্মে সম্বতি দিয়া
অথবা ভাহার সপক্ষ হইয়া কিছা সে বিষয়
দেখিরাও না দেখা এই প্রকারে উপেক্ষা করিয়া
বাচ রূপে প্রব্রত করা মাইতে পারে।

সাধারণ মনুষ্যের প্রতি সতা ুব্যবহার এবং নাগর ও হিতৈষ্ণা এই তিন প্রকার কর্ত্য ।

া বিশেষ বিশেষ সমস্ত্র জনিত আর আর কর্ত্তরা আছে। উপকারীর প্রতি উপক্রতের: প্রদাতার প্রতি গৃহীতার কর্ত্তরা ভাব বে ক্লত-জ্ঞতা. বন্ধু বন্ধুতে যে বিশেষ কর্ত্তরা, দেশের প্রতি যে বিশেষ কর্ত্তরা, দাস প্রভু, ঋণী উভ্তমর্ণ ইহাদের পহস্পারের মধ্যে কর্ত্তরা; পরিবাবের প্রতি যে কর্ত্তরা, পিড় ভক্তি; পুত্রস্বেহ, জ্রী পৃক্ষধের পরস্পার প্রাত্, ভাতৃ সৌহার্দ্র, ইহার মধ্যে এ সক্লই আইসে।

লোক-ভয়!

(১) আমরা লোক-ভরে ভীত হই, তাহা এ কারণে নহে বে সংসার অতি বলবান্; ভাছার কারণ কেবল আমাদের ভীকতা এবং ভাগা-স্থীকারে কাতরভা। সভোর বল, জামের বল, ধর্মোর বল অপেক্ষা সংসারের বল কি কখন অধিক ছটভে পারে?

- (২) আমরা যত লোক-ভরে ভীত ছইরা ধর্মের আদেশে কর্ত্তন্য কর্মা করিতে সক্কৃচিত হইব তত্তই সকলে আমাদিগকে পীড়ন করিবে। আবার আমরা যত সাহস করিরা অগ্রাসর ছইব, তত্তই সকলে ভীত ও নিরস্ত ছইবে।
- (৩) কোন ব্যক্তি ব্যোম-যানে আকাশ পথে উড্ডীন হইরা অনেক উচ্চ দেশে গিরা হন অন্ধকারে এমন অন্ধীভূত হইলেন যে, তাঁহার বাধ হইল যেন এক হস্ত ব্যবধানে ক্লঞ্চর্প কঠিন শুস্তরের প্রাচীর দ্বারা তিনি পরিবেটিত হইরাছেন। তাহাতে তাঁহার মনে অভ্যস্ত আশঙ্কা উপন্থিত হইল যে, যদি বায়ু-বেগে তাঁহার ব্যোম-যান সঞ্চালিত হইরা সেই

প্রাচীরে লাগে, তাহা ছইলে জাঁহার শরীর **अट्रक्वाटत हुर्व इहेन्रा यहित।** कि**रु यथन (महे** ব্যোম্যান বায়ু সহকারে চলিতে লাগিল, সেই অন্ধকারের প্রাচীরও অগ্রসর হইতে লাগিল; তাঁহার গাতেতে তাহা স্পর্ণও হইল না। এই প্রকার ধর্ম-পদবীতে আরোহণ করিতে গোলে দুর হইতে যে সকল বাধাকে অনভিক্রম-ণীয় বোধ হয়, সাহস পূর্ব্বক তাহাদের প্রতি-কলে অথাসর হটলে ভাছারা পরাস্ত হয়; সম্প যুদ্ধে তাহার। অক্ষম। অতএব ধর্ম-পথে পর্বতাকার বিশ্ব দেখিরাও ভীত হইও না। ''সভামেব জয়তে নাতৃতং।'' ''সভোরই জয় হয়; মিধার জর হয় না।"

(৪) একদা এক জন ত্রক্ষ-পরারণ যোর বর্ষা কালে শরদার মোহানার পদ্মা নদী পার হ বার উপক্রম করিতেছিলেন। সে সমরে ঘন র্ষটি সহকারে প্রবল বাজা বহিতেছিল, তাহাতে

ভীষণাকার তঃক্ষ সকল তাল রক্ষ সমান উপিত হটতেছিল। নেকি। সকল স্থায় রক্তাতে তীরে আফো ছিল; 'তথাপি তাহারা তঃজ-বলে আন্দোলিত হইতেছিল। বেলার অংসার্নে ব্লক্টি ও বাষুর কিঞ্চিৎ উপশম হইল, কিন্তু নদীর আন্দোলন তেমনি রহিল, এই অবসরে যেমন সেই সাধু পরপারে যাইবার নিমিত্রে আপনার নেকা খুলিয়া দিলেন, অমনি তীরস্থ ভয়-ভীত নাবিকেরা সকলে এক স্বরে বলিয়া উঠিল "নেকা এখন খুলিও না ;" ইহাতে তাঁছার হৃদয়ে আঘাত লাগিল: কিন্তু ঈশ্বরের প্রতি নির্ভন্ন করিয়া তাহা হইতে নিরস্ত হই-লেন না; ভাঁছার নৌকা বায়ুর সহায়ে বাজ্-পোতের ন্যার ধাবমান হইল। কিছু দূর গিয়া **শেই সাধু দেখিলেন যে পরপার হইতে** আর একটি कूछ उदी घडा। कहा महकाद শাসিতেছিল ও নিকটবর্তী হইলে তাহার নাবিক

উক্তৈ'শ্বরে কহিল, 'ভর নাই চলিরা যাও।" ইহা শুনিয়া তাঁহার মনের সাহস ও উৎসাহ শত গুণ বৃদ্ধিত হুইল, এবং তিনি ঈশ্বর প্রসাদে তীরে উত্তীর্ব ছটলেন। সংস্থোপর পার ছট-বার সময়, যাহারা সংসারের মোহশৃথলৈ বদ অ'ছে, তাহারদিগের নিকট হইতে উৎসাহ পাওয়! দুরে থাকুক, ভাগারা ভর প্রদর্শন করিয়া বিরঙ করিতে চেক্টার ক্রটি ক'র না। এ প্রকার শত সহস্র লোক যদি বাধা দের, তথাপি তাহাদের কথা গ্রাহা হইতে পারে নাঃ কিন্তু একটা সাধু সজ্জন, যিনি সেই সংসার সমুদ্রে সাহস পূর্বক বিম্ন বিপত্তির প্রতিকলে গিরাছেন, তাঁহার উং-সাহ-জন্ক কথাই আদরণীয়। ভাঁহারি উপ-দেশের উপর নির্ভর করিবেক; যেকেতু ভিনি অপেন চেষ্টা আপন পরীকা দ্বারা যথার্থ উপদেশ দিবার উপযুক্ত হইয়াছেন।

ত্যাগম্বীকার।

- (১) ঈশবের জনা স্থামারদের বাহা কিছু সকলই ত্যাগ করিতে প্রস্তুত থাকি:বক। ত্যাগই বাক্ষধর্মের প্রাণ।
- (২) ঈশ্বকে লাভ করা আমারদের জীবনের উক্ততম্ লক্ষ্য। তাঁহাকে পাইলেই আমাদের সমুদর কামনার সমাপ্তি হয়। তিনি য'দ বিষয় বিভব দেন ভালই, কিন্তু তাহা আমারদের প্রার্থনীয় নহে। তাঁহার আদেশে তাহা গ্রহণ করি-নেক, তাঁহার আদেশে তাহা পরিত্যাগ করিবেক।
 - (৩) ভ্যাগ স্বীকার করা ঈশ্বর-প্রীতির নিদর্শন ভাছাকে প্রীতি করি অধচ তাঁহার জন্য বিষর-সূথ ভ্যাগ করিতে পারি না, ইছা অভ্যন্ত অসঙ্গতকথা। ভাঁছার প্রতি যথার্থ প্রীতি থাকিলে অবশাই ভাঁহাকে সর্বাধ্য দেওয়া যায়।
 - (৪) ঈশবের জন্য কত শত লোক প্রাণ দিয়া-ছেন, আমরা কি একটুকু শায়ীরিক ক্ষথ বা ধন

ৰা মুৰ্য্যাদা ত্যাগ করিতে সঙ্কৃচিত হুইব ? তাঁছাকে সকলি দেওয়া যায়। "যদি এ প্রাণ যায় কি তাহে, কি এমন যা অদের তাঁয়।""

(৫) আমরা ষ্থন ব্রাক্ষর্য-ব্রত গ্রেহণ করি-য়াছি, তখন আর ত্যাগ স্বীকার করিতে কেন কৃঠিত হইব ? আমাদের প্রাণ মন শরীর সমু-দর ঈশ্বরকে অর্পণ করিয়:ছি, স্কলই তাঁছার হস্তে দিয়াছি, তবে কেন আর তাঁহার কার্য্যে বিমুখ ছটব ? তিনি যেখানে যাইতে বলি-বেন, সেখানে যাইব; যাহা করিতে বলিবেন, তাহাই করিব; তাঁহার ইচ্ছাতে যোগা না দিয়া কেবল আমার ইচ্ছাতে কোন কর্ম করিতে পারি না; থেহেতু আমার বলিতে আর কিছুই নাই; তাঁছাকে পাইবার জন্য সকলই ভাঁহাকে বিক্রয় করিয়াছি। ভয় করিব না, ক্রেন্দন করিব না, নির্ভয়ে অক তরে ভাঁছার আজ্ঞা পালনে কায়ম-নোবাকো যতু করিব। যদি আমার প্রাণ পর্যান্ত

দিতে হয়, তাছাতেই বা কি ? আমরা ধর্ম-য়ুদ্ধে প্রান্তত হটয়ছি; তিনি আমারদের দেনাপতি হইরাছেন; অকুতোভরে অপ্রাসর হইতেই হইবে, বিমুখ হটয়া গমন করিতে পারিব না, উমধ্যের আজ্ঞাপালনে সকল কন্ট সকল যম্বা। অপরাঞ্জিত হদবেশ্সন্থ করিতে হইবে, ত্রাহ্মাধ্যের মহিমাপতাকা উদ্দীন করিতে হইবে, ত্রাহ্মাধ্যের মহিমাপতাকা উদ্দীন করিতে হইবেই হইবে। "শির দিয়াতো রোনা কেরা?" ইহা বলিয়া সকল তাগা জীকার করিতে হইবে।

RECENTAGE LOCAL

THE TRANSPORT



দরবেশদিগের ক্রিয়া।

একদা রোমীয় স্মাটের এক জন দৃত মদিনা নগরে উপনীত হইয়া নগরবাসীদিগকে জিজ্ঞাসা

করেন, "রাজপ্রাসাদ কোথায় বলিয়া দেও, আমি সেখানে যাইব।" তাহারা বলে যে "এই মদিনার অধীশর মহাত্মা ওমর। তাঁহার প্রাসাদ নাই, তাঁহার প্রাসাদ তদীর উজ্জল জীবন। যদিচ তিনি অধিরাজ বলিয়া জগতে খ্যাত, কিন্তু তাঁহার চরিত্র দরবেশদিগের ন্যায়। ভ্রাতঃ। তুর্মি চক্ষুকে আরত রাথিয়া কেমন করিরা তাঁহার প্রাদাদ দর্শন করিবে ? হাদয় ও চক্ষুকে পরিষার কর, ভাঁহার ্রীসাদদর্শনের চকু ধারণ কর। যাহার জীবনে নীচ ভাব নাই সেই শীঘ্র পুণ্যমন্দির ও প্রাসাদ দর্শন করে। মহাত্রা মহমদ যথন অগ্নি ও ধুম হইতে

মুক্ত হইলেন (অগ্নির উপাসনা পরিত্যাগ করিলেন) তখন তিনি সর্বল দিকে স্বীশ্বরের মুখ দর্শন করিতে লাগিলেন। অগুভকরী নিরুষ্ট বুত্তির অনুগত থাকিলে তুমি ঈশ্বরের মূথ কেমন করিয়া দেখিবে ? যাঁহার হৃদয়ের দার উন্মুক্ত হইয়াছে, তিনি প্রত্যেক ্ধূলি কণায় স্থ্যমণ্ডল দর্শন করেন। ঈশ্বর স্ট বস্তুর মধ্যে বিরাজমান। ছই নেত্রের উপর ছই অঙ্গুলি স্থাপন করিয়া বল দেখি জগতের কিছু দেখিতে পাও কিনা? যদি না দেখিতে পাও তজন্য জগতের অস্তিত্ব মিধ্যা হইল না, তোমার অঙ্গুলির দৈষি ব্যতীত কিছুই নয়। তাহাই তোমার দর্শনের অন্তরায় হইয়াছে। নিরুষ্ট ভাব সম্বন্ধেও এই কথা। তুমি নেত্ৰ হইতে অনুদ্ৰি অপসারিত কর, অতঃপর যাহা দেখিবার ইচ্ছা দেখ। অবশুঠনাবৃত হইলে চকু বিদ্যমানেও তদ্বারা কোন ফল হয় না। ব্যক্তি দর্শন করে,

ত্বাতীত যাহা কিছু স্বগাদি মাত্র। তাহাই প্রকৃত চক্ষ্ যাহা বন্ধুকে দেশন করে। স্থার দশন না হইলে অন্ধ হওয়া শ্রেয়ঃ!"

রাজদূত এই সকল জীবস্ত কথা শ্রবণ করিয়া হজ্রত ওমরকে দেখিবার জন্য ব্যগ্র ইইলেন, যান বাহনাদি পরিত্যাগ করিয়া ওমরের অন্বেষণে নেত্রকে নিযুক্ত করিলেন, তিনি উন্মত্তের ন্যায় নানাদিকে ধাবমান হইয়া তাঁহার সংবাদ জিজ্ঞাস। क्रिटिंग मार्गिलन। धक क्र्यीयलनात्री अभन्नरक দেখিয়াছিল, সে বলিল ঐ খোশা তরুমূলে যাইয়া দেখ সেই মহারাজ তরুছায়ায় একাঁকী শয়ান আছেন। রাজদৃত সেখানে আসিয়া দূর হইতে তাঁহাকে নিরীক্ষণ করিয়া কম্পিতকলেবর হই-লেন; সেই নিদ্রিত মহাপুরুষ হইতে এক প্রকার ভয় আসিয়া তাঁহার অন্তরকে স্পর্ণ করিল, এদিকে প্রেমেরও সঞ্চার হইল। প্রেম ও ভয় এ হই

পরস্পর বিরুদ্ধ পদার্থ, আশ্চর্য্য যে এই ছুই বিপ-রীত ভাব তাঁহার হৃদয়ে সন্মিলিত হইল। দৃত মনে মনে বলিতে লাগিলেন, আমি অনেক বাদশা দেখিয়াছি, কোন বাদশাকে দেখিয়া আমার আতঙ্ক উপস্থিত হয় নাই। কিন্তু এই ব্যক্তির ভয়ে আমার চৈতন্য হরণ করিল। আমি অরণ্যে গমন করি-য়াছি, শার্দ লাদি হিংস্ত জন্ত দেখিয়া ভয়ে আমার মুখ বিবর্ণ হয় নাই। আমি সংগ্রামক্ষেত্রে সংগ্রাম করিয়াছি, শত্রু দৈনা দ্বারা আক্রান্ত হইয়া সাহস-শুনা হই নাই। এই ভূমিতলে নিজিত নিরস্ত বাক্তিকে দৈথিয়া আমার সর্বাঙ্গ কম্পিত ২ইল কেন ? বস্তুতঃ ইহা পরমেশ্ব কৃত ভয়, মনুষ্য কৃত নহে। যে ব্যক্তি ঈশবকে ভয় করেন. বৈরাগ্য অবলম্বন করিয়াছেন, তাঁহাকে দেখিয়া অমর নর সকলেই ভীত হয়। দৃত এইরূপ আলোচনা করিয়া ওমরের প্রতি সম্মান প্রদর্শনের

জনা অঞ্জলিবদ্ধ হইলেন। ইহার কিঞ্জিৎ কাল পরেই ওমর গাত্রোখান করিলেন। তথন রাজদৃত যথোচিত সম্বর্জনাপূর্বক নমস্বার জানাইলেন। ওমর প্রতিনমস্বার করিয়া তাঁহাকে নিকটে আহ্বান করিলেন, এবং স্নেহ প্রসন্ন বদনে তাহাঁর চিত্তকে স্থান্থির করিয়া আপনার সম্মুথে বসাইলেন।

অতঃপর বৈরাগী ভূপাল হজ্রত ওমর তরুমূলে বিসিয়া সেই রাজদ্তের সঙ্গে কণোপকথনে প্রবৃত্ত হইলেন। তিনি স্বযোগ্য গুরু ধর্ম পিপাস্থ শিষ্যের অন্বেষী ছিলেন, এইক্ষণ দৃত্ঠিক তথামুস্কায়ী স্থারূপে পাইলেন। যথন দেখিলেন যে দুতের জীবনরূপ উর্বরা ভূমিতে উৎকৃত্ত বীজ নিহিত আছে, তথন তিনি তাঁহার প্রশ্লাম্পারে ঈশ্রের করুণা, সৃষ্টি প্রক্রিয়া প্রত্যাদেশাদি গভীর তত্ত্বের হার উন্তুক্ত করিলেন। প্রথমতঃ করুণা-

জনিত ভাব ও করুণার স্থিতি সম্বন্ধে এইরূপ বলিলেন। ভাব করুণারূপ স্থানরী নব বধুর প্রকাশে হয়, সেই নব বধুর সঙ্গে একত্র বাসকে স্থিতি বলা যায়। বধুর প্রকাশ বর এবং বরের আত্মীয় কুটুম্বগণ লাভ করে। কিন্তু একত্র বাস বর ব্যতীত অন্য কাহার সঙ্গে হয় না। বধু সাধারণ এবং বিশেষ সকল লোকের নিকটে স্বীয় সৌন্দর্য্য বিকাশ করেন বটে, কিন্তু তাঁহার অবস্থিতি কেবল বরের সঙ্গে হয়। দরবেশদিগের মধ্যে ভাবুক অনেক আছেন, কিন্ত স্থিতিশীল চূর্লভ। ভাবুক লোকেরা মূহর্ম হঃ শুন্য হস্ত হুইয়া পড়েন, স্থিতিতেই লোকে ভাগ্য-वान इत्र।

ঈশর মন্ত্র পড়িলেন, আর অসং সং হইল।
শরীরের উপর মন্ত্র পড়িলেন, তাহার প্রাণ হইল।
স্বর্গোর প্রতি একটা বচন পাঠ করিলেন সে

জোতিয়ান হইল: পরে কি ভীতিজনক কণা বলিলেন, তাহার মুখ গ্রহণযোগে মলিন হইয়া গেল। পুষ্পের কর্ণে কি বলিলেন, সে হাস্য করিতে লাগিল। রত্বকে এক কথা বলিলেন, সে फेब्बन कांखि धांत्रन कतिन। शृथिवीत कर्त कि কথা জানাইলেন, তাহাতে সে স্থির স্তম্ভিত হইয়া রহিল। মেঘকে কি কথা বলিলেন অমনি সে অশ্রু বর্ষণ করিতে লাগিল। চঞ্চলপ্রকৃতি লোকেরা ঈশবের বাণীকে সন্দেহ করে, ও তাহা-কে প্রহেলিক। বিশেষ বলে। তিনি যাহা বলি-য়াছেন তাহা করিব, না তাহার, বিপরীত পথে চলিব, এই হুই চিস্তা দারা তাহারা আক্রাস্ত হয়। , তথাপি ঈশবের নিকট হৈইতে এই পথে চল, এই পথ পরিত্যাগ কর, এই উত্তেজনা বাকা আইসে। দৈতাবাণীরূপ কার্পাস কর্ণবিবর হইতে উন্মোচন क्र. रिववानी कर्ल श्वान शहिरव । তाहा हहेत

প্রহেলিকার অর্থ হৃদয়স্বম করিতে পারিবে, গৃঢ় তত্ত্ব প্রকাশ পাইবে। ঈখানাদেশের ভূমি আত্মার কর্ণ, আদেশ ইন্দ্রয়াববোধের অতীত। আত্মার চক্ষ আত্মার কর্ণ ইন্দ্রিয়জ্ঞান সম্পর্ক শ্না, তাহাতে বৃদ্ধির কর্ণ ও অনুমান দৃষ্টিরও অধিকার নাই।

প্রকৃত স্বাতন্ত্রা চক্রজ্যোতিঃ সদৃশ, উহা এখবিক। ঈশ্বর যাহাদের অস্তশ্চকু বিকাশিত করিরাছেন সেই দরবেশ লোকরাই স্বাতন্ত্র্য তত্ত্ব বৃথিতে
পারেন। আধ্যাত্মিক পুরুষদিগের স্বাতন্ত্র্য এক
প্রকার, বাহিকে লোকদিগের অন্য প্রকার।
মৌক্তিক জনক রস বিশেষ, বাহিরে সাধারণ রস
মাত্র, কিন্ত ভাক্তিকোষে তাহাই মুক্তা কলে পরিনত হয়। বহির্দেশে ক্ষ্তু বৃহৎ রসবিন্দু, গুক্তি
কোষে স্থূল স্ক্র মুক্তাকণা। মহা পুরুষদিগের
প্র কৃতি মৃগনাভি সদৃশ, বাহিরে যে শোণিত

বিন্দু তাহা নাভিগর্ভে কগুরিকা। 'নিকৃষ্ট ধাতৃ তাম আক্সিরনামক দ্রব্যবিশেষের অভ্যন্তরে স্থবর্ণ হয়। স্বতম্রতা কর্তৃত্ব তোমার আমার মম্বন্ধে উপকারী নয়, কিন্তু সাধুলোকদিগের অন্তরে তাহা সুনির্মল জ্যোতিঃ সদৃশ। পাত্রস্থিত অর অচেতন ভৌতিক পদার্থ মাত্র : কিন্তু মানব দেহে সেই অন্নের সঞ্চারে প্রাণের স্ফর্ত্তি হয়। পাত্র-গর্ভে অন্নের ক্রিয়া প্রকাশ পায় না, কিন্তু পাক-স্থলীতে ক্রিয়া হইয়া থাকে। সেই ক্রিয়ায় প্রাণের বল হয়। দেহ মাংস খণ্ড মাত্র, কিন্তু বুদ্ধি ও প্রাণের বলে পর্বত সমুদ্র অতিক্রম করিয়া বায়।

্রু, ১ ইনফ্ বেরল্ হোসেন্রি দেশের লোক ছিলেন। জীবনের প্রথম অবস্থায় তিনি মিসর দেশনিবাসী দেশপূজ্য দরবেশ জোল্যুনের নিকটে ঈশবের মহা নামে দীক্ষিত হইবার জন্য উপস্থিত

হয়েন। জোল মুন অনেক কাল তাঁহার সঙ্গে বিশেষ কোন কথা বলেন না, তিন চারি বংসর পল্পে জিজ্ঞাসা করিলেন "যুবক! আমার নিকটে তোমার কি প্রয়োজন ?" ইসফ্ বলিলেন, "প্রভুর মহানাম আম্মুকে শিক্ষা দিন্, আপনার নিকট আমার এই প্রার্থনা।" ইহা শুনিয়া কিয়ৎকাল জোলতুন किছू रे तिल्लन ना । शत्र अकिन अकी नाक्रभय कोठी हेमरफब इस्ड व्यर्भण किंग्री विनातन, "নীল নদের অপর পারে অমুক স্থানে অমুক ব্যক্তিঃ আছেন, এই কোটাটী তাঁহাকে দিয়া আইস।" ইসফ কোটা হতে করিয়া যাত্রা করি লের্ন, কতক দুর পথ যাইয়া ভাবিলেন, ভাল এই পাত্রটির ভিতরে কি নড়িতেছে, কাপুার্টা কি একবার খুলিয়া দেখা যাউক। এই বলিয়াই তিনি কোটার মুখ মুক্ত করিলেন, ভিতরে একটি ইন্দুর,ছিল, কোটার আবরণ উদ্ঘাটন করিবামার্ত্র

(म भनारेग्रा (गन। रेमक् अक्षेत्र करेतन। বলিলেন "এ কি কাও। এইক্ষণ আমি কি করি, সেই ব্যক্তির নিকটে যাইব কি. মহর্ষির নিকটে ফিরিয়া যাইব ?" পরে নানা প্রকার ভাবিয়া চিস্তিয়া জোল্মনের নির্দেশিত লোকের নিকটে শূন্য কৌটা হস্তে করিয়া উপস্থিত হইলেন। সেই ব্যক্তি এই ব্যাপার জানিয়া হাস্য করিয়া জিজ্ঞাসা করিল, "তুমি কি মহর্ষি জোল্মুনের নিকটে প্রনেশবের মহানামের প্রার্থী হইয়া-**ছिলে ?" ইসফ্ বলিলেন হাঁ। পরে সেই পু**রুষ বলিল "মহর্ষি তোমাকে অসহিষ্ণু দেখিয়া থাকিবেন, এজন্য একটি ইন্দুর তোমার इत्द्र-नियाहित्नन, शय । जुमि त्मरे रेन्द्रति दका করিতে পারিলে না, বল, মহানাম ভূমি কি প্রকারে হৃদয়ে রক্ষা করিবে ? " ইসফ্ লজ্জিত হ্ইরা জোল্মুনের নিক্টে প্রত্যাগমন করিলেন।

তখন মহর্ষি বলিলেন, " কল্য রজনীতে তোমাকে মহানাম শিক্ষা দিব কি না সাত বাব প্রভর নিকটে অফুজ্ঞা প্রার্থনা করিয়াছিলাম, তুমি চঞ্চল বলিয়া আদেশ করেন নাই, একটি মৃষিক দারা পরীক্ষা করিতে অমুমতি कत्रिग्रों हिलन, भत्रीका कतिनाम छारारे वरहे। এইক্ষণ তুমি স্বদেশে চলিয়া যাও, সময় হইলে আসিবে। মহানামে দীক্ষিত হওয়ার তোমার সময় হয় নাই।" তথন ইসফ্ বলিলেন, "আৰ্য্য! অগত্যা আমাকে দেশেই ফিরিয়া যাইতে হইন. কিন্তু আপনি আমার মঙ্গলের জন্য কিছু উপদেশ দান করুন।" মহর্ষি বলিলেন, "আমি তিন্টি -उभारतम निट्छि, वकी महान, वकी मुधाम, একটী সামান্য। মহান্ উপদেশ এই, লেখা পড়া যাহা শিক্ষা করিয়াছ, সমুদায় ধৌত করিয়া ফেল, ভুলিয়া যাও, আপনাকে মূর্থ বলিয়া জান, তাহা

ছইলে ঈশ্বর এবং তোমার মধ্যে যে আবরণ আছে উঠিয়া बाইবে।" इन्ह्य वनित्नन, " वैह উপদেশটি পালন করিয়া উঠিতে পারিব না।" মহর্ষি বলি-लেन, মধাম উপদেশ এই, " আমাকে ভুলিয়া যাইবে, কাহার নিকটে আমার নাম করিবে না; ঋষি এইরূপ উপদেশ দিয়াছেন এই প্রদক্ষও कतिरव ना।" रेमक् विलालन "रेशे भातिया উঠিব না। " অনন্তর জোল্মুন বলিলেন "আমার সামান্য উপদেশ এই যে লোকদিগকে ধর্ম্মোপ-(मन नित्त, क्रेश्वत्रत नित्क आस्तान कतित्त।" এই कथा छनिया हेमक् छेरमारहद महिल वंनितन, ''ঈশবেজায় ইহা পারিব।" জোল্ফুন আবার विनित्न "এই ভাবে কিন্তু উপদেশ দিতে इहेर्त, আপনার কোন ভাব তাহাতে থাকিবে না।" ইসফ্ বলিলেন "তাহাই করিব।"অনস্তর স্বদেশে চলিয়া আসিলেন। তিনি রিদেশের একজন সম্ভান্ত লোক ছিলেন। নগরবাসিগণ তাঁহাকে সাদরে অভ্যর্থনা করিয়া গ্রহণ করিল। পরে ইসফ্ সভা আহ্বান করিয়া উপদেশ দিতে আরম্ভ করি-লেন, শ্রোতবর্গ ছই এক দিন গুনিয়াই বিরক্ত হইয়া গেল। যেহেতু তাঁহার উপদেশে কোনরূপ নৃতনত্ব ও স্বর্গীয় আকর্ষণ ছিল না। পরে এই প্রকার হইল যে, আর কেহই তাঁহার উপদেশ শুনিতে আসিত না। ইসফ্ একদিন ভজনালয়ে বক্তা করিতে গিয়া দেখেন একটাও শ্রোতা উপস্থিত নাই। কি করেন, ভাবিয়া চিন্তিয়া ব্যাকুল হইয়া পড়িলেন। দয়াবান্ পরিতাতা ঈশ্বর পরে এক অলৌকিক ঘটনা দারা ইসফের জীবনে ধর্মের স্বর্গীয় আলোক প্রকাশ করেন ও তাঁহাকে আপনার অনুগত ভক্ত করিয়া লন। সেই অলৌকিক ঘটনাটী এই :--

এবাহিম খওয়াদ্ নামে একজন ধর্মগাধক

ছিলেন। এঁকদিন রাত্রিতে তিনি এই প্রত্যাদেশ শ্রবণ করেন, "যাও ইস্ফকে বল বে তুমি ধর্ম-ভ্রতী।" এবাহিম বলিয়াছেন "বে আমার নিকট এই কথাটী এরপ কঠিন বোধ হইল, যদি পর্বত ভাঙ্গিয়া আমার মন্তকে পড়িত ইহার তুলনায় তাহাকেও আমি সহজ মনে করিতাম। যিনি আপনাকে ঋষি বলিয়া পরিচিত করেন আমি কেমন করিয়া তাঁহাকে এই কঠোর কথা বলিব ভাবিয়া অন্থির হইলাম।" এবাহিম প্রদিন রাত্রিতেও পুনর্কার ঐরপ ধ্বনি শ্রবণ করিয়া মহা চিত্তিত হইয়া বদিয়া খাঁকেন। তৃতীয় রজনীতেও এই কথা ভূনিতে পান যে "তাহাকে যাইয়া বল সে ধর্মজন্ত যদি তাহা না কর তুমি আঘাত পাইবে।" এবাহিম বলিয়াছেন যে "এইরূপ দৈববাণী ভূনিয়া আমি তৎক্ষণাৎ উঠিয়া যাত্রা করিলাম। মনজি-

দের নিকটে যাইয়া দেখি ইসফ্ দারে বসিয়া আছেন। আমাকে দেখিয়াই তিনি বলিলেন, 'কোন শাস্ত্ৰীয় বচন তুমি বলিতে পার?' আমি বলিলাম, হাঁ, একটি আরবী বচন বলিতেছি, পরে দেই কথাটা বলিলাম। ইসফ্ তাহা শ্রবণমাত্র वााकून हरेया आमात्र हत्रतन পতिত हरेतन, অঞ্জলৈ প্লাবিত হইয়া গেলেন। কতক্ষণ পরে মন্তক উভোলনপূর্বক আমার প্রতি দৃষ্টি করিয়া বলিলে, এবাহিম! প্রাতঃকাল হইতে এ পর্যান্ত আমার নিকটে কোরাণ পঠিত হইয়াছিল এক বিন্দু छन हकूं इहेट निर्शठ इय नाहे, मन जब हय नाहे, এইক্ষণ যে একটি বচন গুনিলাম তাহাতে দেখ আমার কেমন অবস্থা ঘটিল। চকু হইতে অশ্রু ঝড় বাহির হইল, লোকে আমাকে ধর্মলন্ত যৈ त्रात, हेरा गृथार्थ कथा। প্রভুর নিকট হইতেও আজ এই উপাধি লাভ করিলাম। প্রকৃত পক্ষে আমি তাঁহাই বাট।" এই বালিংবের গর হইতেই ইসফের তীবনে পরিবর্জন উনছিত হয়, দীনতা ও বিনষের নবীন দীপ্তি প্রকাশ পাল, নব জীবনের অভাদম হইতে থাকে। ১২পর তিনি অনেক উন্নত নাধ্যের সহবাসে থাকির। কঠে ব সাধনা করেন ও একজন পরন থাতিব দরবেশ। হইয়া লোভের একান্ত ভক্তির আপ্রেদ হরেন।

0 5 0 ---

ত। আবৃহেত্ত বোদান দেশের আবিনারী ছিলেন। প্রথম অবহায় তাঁখার চরিত্র আনত্ত কলুষিত ছিল। এক সময়ে তিনি এনটা বুলানিব প্রতি বোরতর আনত কইয়া প্রিয়াট্টেনেন। সেই জীলোকটাকে নানা উপায়ে বনীভূত করিতে নাপারিয়া ক্তিপ্রের নায় হইয়াছিলেন। এফলা কেহ তাঁহাকে এই পরামর্শ দেয় ্ল, ,,নেশাল্যর এক জাত্বর ছিহনী আছে তাহার

निकरं गांड, जाइवरन तम टामान मरनाइप সিদ্ধির উপায় করিয়া দিবে।" , আবৃহেফ্জ তাহাই করিলেন। সেই মিছদীর নিকটে যাইয়া স্বীয় অবস্থা জ্ঞাপন পূর্ব্বক তাহার সাহায্য প্রার্থী হইলেন। তথন রিছদী বলিল "আমি করেকটী 'নিমম বলি, তাহা সম্পূর্ণরূপে পালন করিলে তোমার ভাতী ই বিদ্ধ হইবে। চলিশ দিন ভূমি धर्म कर्म डेशाननानि कतिरव ना, मत्नत मर्था द्यान সাধু ক**ষ**ল্ল রাখিবে না, তাহা হইলে আমি জাতু করিব ও ঐক্তরালিক বিদ্যার প্রভাবে তোমার মনোর্থ পূর্ণ করিয়া দিব।" আবৃহেফ্জ তাহাতে স্মত হয়েন। চলিশ দিন সের্প করিয়া আবার মিছদীর নিকটে আগ্যন করেন। তথ্ন মিছদী मात्राथिला। अधिका नदन कतिन, किंद्र कुछकीरा इहेन ना। त्म जाननोत्र विमा विकल प्रिश्न আরুহেফ্রকে বলিল"এই চলিশ দিনের মধ্যে নিশুর

তুমি কোন 'পুণা কর্ম করিয়াছ, উত্তমরূপে চিন্তা করিয়া দেখ। তাহা না হইলে আদার জাত কখন [•] নিক্লল হইত না।" আবুহেফ্জ বলিলেন, "এই চল্লিশ দিনের মধ্যে আমি কোন ধর্ম কর্ম করি নাই। কিন্তু এক দিন চলিয়া যাইতেছিলাম. পথে একটা পাথর পড়িয়াছিল উহা পায়ে লাগিলে . কেহবা ব্যথা পায় এই মনে করিয়া সরাইয়া রাথিয়াছিলাম এই মাত্র জানি।" য়িত্দী বলিল "প্রভুকে আর আ্ঘাত করিও না। চলিশ দিন তুমি তাঁহার আদেশ অগ্রাহা করিয়া চলিয়াছ, তথাপি দেখ তাঁহার কত দয়া! তুমি যে একটী সংকর্ম করিয়াছ, তাহা তিনি বিফল হইতে দেন নাই। সেই একটা পরোপকালের জন্য তেমিকে মহা পাপে পতিত হইতে বাধা দিলেন।" बिहमीत এই कथाब चात्रक्राजत क्रमाब चक्-তাপের শিখা জনিয়া উঠিল। তিনি আর কর্থনী।

ত্রুকর্ম করিবেন না বলিয়া দুঢ়সকল হইলেন। সেই হইতে তাঁহার জীবনের স্রোতঃ স্বর্গের দিকে ধাবিত হইল। তিনি লোহকারের ব্যবসায় করিতেন. তথনও সেই বাবসায় করিতে লাগিলেন। প্রতি দিন দিবাভাগে লোহার কায করিতেন, তাহাতে প্রত্যহ প্রায় তিন টাকা লাভ হইত, উহা তিনি मीन शःशीमिश्रदक विठत्रण कतिराजन, **এवः** शःथिनी অনাথাদিগের বাহায্যের জন্য তাহাদিগের গ্রে মুদ্রা এরূপ গোপনে রাখিয়া আসিতেন তিনি যে উহা দান করিয়াছেন কেহ জানিতে পারিত না। প্রতিদিন (রাজা (উপবাস ত্রত) পালন করিয়া সন্ধাকালের উপাসনাম্ভে স্বয়ং ভিক্ষা করিতে गरिएक, जिका नक रप्तामाना अब खाकन कतियां कीवन तका वितिष्ठन। वहकान धरे ভাবে গত হয়। এক নিন এক জন অন্ধ বাজারের नथ नित्रा याहेट्ड याहेट्ड এकটी भंडीत छाब পूर्व

ধর্মলোক স্থর করিয়া পুড়িতেছিল, আবৃহেফ্জ সেই শ্লোক শুনিয়া তাহার ভাবে এমন মগ্ন হইয়া গিয়া-ছিলেন যে তাঁহার বাহু জ্ঞান ছিল না। তিনি গাঢ় অন্যমনম্বভাবে উত্তপ্ত লৌহ খণ্ড হত্তে গ্রহণ করিয়া হাতৃড়ী দারা পিটিবার জন্য সহকারী কর্ম-কারদিগের নিকটে ধারণ করিয়াছিলেন। তথন সহ-কারিগণ তাঁছাকে এ বিষয়ে চৈতান্য করিয়া দেয়। এই ঘটনার পরেই আবৃহেফ্জ দোকান উঠাইরা দেন। প্রকৃত প্রভাবে সন্ন্যাসধর্ম অবলম্বন করেন ও একজন পরম যোগী হইরা পরমেশরের সেবাতে निया तकनी नियुक्त शाकन। हैनि धकैकन खूश-গুত ও সহকা ছিলেন। শেব অবস্থায় আবৃহেফ্ল (मध्याना (धर्माकिश) हरेबा **ए**टिन । धाराज সেই কিপ্ততার মধ্যে অনেক মাধুর্য্য ছিল। **मिर्शाहादात इरे धकी छेनाइत्र अन्छ** হইতেছে।

এক দিন আবুহেফ্জকে তাঁহার বন্ আৰ্ওসম্ন বলিয়াছিলেন যে "আমি সভাডে উপদেশ দিব, মন. বড উৎসাহিত হইয়া পড়িয়াছে।" আবৃহেফ্জ জিজ্ঞাসা করিলেন "কিসে তোমাকে এরূপ উৎসা হিত করিল ?" ওস্মান বলিলেন "লোকের প্রতি ফারা।" আবৃহেফ্জ পুনর্কার জিজাসা করিলেন "তোমার সেই দয়ার সীমা কত দ্র ?" ওস্মান ৰলিলেন " এত দূর যে যদি ঈশ্বর আমংকে ৰরকে প্রেরণ করেন দেই মানব জাতিব প্রতি দ্বার অনুরোধে আমি তাহা সম্ভ করিতে প্রস্তুত আছি ।" আবুহেফ্ল বলিলেন " ভাল, উপদেশ मान कत्।" आयू अम्मान উপদেশ मिवात कना মভাতে উপস্থিত হয়েন। তথন আবৃহেফ্জ উপনীত হইয়া এক পার্শ্বে গুপ্রভাবে বসিয়া থাকেন। উপদেশ শেব হইলে এক জন ভিক্ক আসিয়া সভাতে বন্ধ প্রার্থনা করিল, ওস্মান তৎকণাৎ

আপন গাত্রীবরণ তাহাকে প্রদান করিলেন। ইহা দেখিয়াই আবৃহেফুজ উঠিয় বলিলেগ "মশ্বর হইতে (বেদী বিশেষ) অবতরণ কর, তুমি মিধ্যা কথা বলিরাছ।" ওদ্মান বলিলেন " কি মিথা। বলি-য়াছি ? " হেফজ বলিলেন," তুমি অগ্লার করিয়া বলিয়াছিলে যে লোকের প্রতি আমার অসীম দ্যা, কিন্তু দানের বেলায় তাহার বিপরীত 'আচরণ করিলে। অন্য লোককে তুমি দানের পুণ্য হইতে বঞ্চি রাবিলে, তোমার এই সত্তর দানের জনা আর কেহ এই ছঃখীকে দান করিবার অবকাশ পাইল না। এটা ধর্ম বিক্রকাষ হইয়াছে। এজনা তুমি মিথ্যাবাদী, বেদীতে মিথ্যাবাদী স্থান পাইবার উপযুক্ত নহে।

সবলি রোধ নামক এক জন ধার্মিক চারি মাদ কাল অতিথি রূপে আবু হেফ্জকে আগন আলয়ে রাধিয়া প্রতিদিন ন্তন ন্তন অর ব্যঞ্জন মিটারাদি

যোগাইনা সেবা করিয়াছিলেন। হেফ্জ বিদায় रहेशा राहेवाव नमद रिलाल "नद्लि! এक সময় নেশাপুরে আমার আলরে গমন করিও, পুরুষকার কিরূপ ও আতিথ্য সংকার কি প্রকারে করিতে হয় আমি তোসাকে শিকা দিব।" সবলি কিঞ্চিৎ অপ্রস্তুত হইনা বলিলেন "আমি কি **अन्याद्य क्रियाहि ?" आ**र्ट्यूज वनित्नन ''अन्याद्य আর কি, কট স্বীকার করিরাছ। এরপ ক্লেশ-বহন পুরুবকার নহে। অতিথি সংকার এ প্রকার ক্রিবে, যেন অতিথির আগমনে আপনার উপব কোন ভারু বোধ না হয় ও তাহার গমনে আহলাদ না হয়। যদি অতিথি ভশ্রবাতে ক্লেশ স্বীকার কর, তবে তাহার উপস্থিতে তোমার ভার বোধ্ও গমনটা আহলাদের কারণ হইবে। অতিথি দছয়ে বাহার এই প্রকার অবস্থা হয় তাহার পুরুষকার নহে। অভঃপর সব্লি একদিন নেশাপুরে বাইর।

আবৃহেফ্জের আলয়ে আত্থ্য স্বীকার করেন। সেই দিন এক চল্লিশ জন অতিথি, উপস্থিত ছিল। আবৃহেফ্জ এক চল্লিশটী দ্বীপ জালিয়া ছিলেন। সব্লি বলিলেন "অদ্য তুমি কষ্ট স্বীকার করিয়া এত গুলি দীপ জালিলে কেন ?" তিনি বলিলেন "সব্লি! তোমাদের জন্য বট্ট স্বীকার করি নাই, অতিথি ঈশ্বরের প্রেরিত, ঈশ্বরের প্রিয় দান. এই এক চরিশ জন অতিথির জন্য এক চরিশটী কৃতজ্ঞতার দীপ আলিয়াছ।" আবুহেক্জের ক্ষেক্টী উপদেশ এ স্থানে উদ্ধৃত করিয়া দেওয়া গেল-(১) যে ব্যক্তি সকল অবস্থাতে আপনার মধ্যৈ ঈশ-দ্বের দয়া দর্শন করে আশা করি সে মৃত্যুর অধীন হইবেনা। (२) পরমেশরেতে নির্ভয় হইবে, অসি আছে বলিয়া নির্ভন্ন হইবে না।(৩)সেবাতে শরীরের জোতি: বিশাসে প্রাণের জোতি:। (৪) এক · ছারের উপযুক্ত হও, সকল ছার ভোষার জন্য

উন্মৃত্ত হইবে, এক প্রভুর সেবক হও দকল প্রভ্ তোমার নিকটে মন্তক নত করিবে। (৫) বাধ্যতা কি ! বাহা কিছু তোমার তাহা পরিত্যাগ করিবে বাহা তিনি আদেশ করিবেন তাহা পালন করিবে, ইহাই বাধ্যতা। (৬) দীনতা কি ! তথ্য হৃদ্যে প্রাথী থাকা। (৭) জিজ্ঞাসা করিল তুমি কি ভাবে ঈশ্ব-রের নিকটে আসিয়া থাক ! বলিলেন ভিক্ক বে ভাবে ধনীর দারে আসিয়া থাকে।

৪ দরবেশ ফলিল অয়াজ প্রথম অবস্থার কতকভলি দীস্থার দলপতি ছিলেন। সেই সময়ে ও
তিনি দরবেশের ধিকা ও টুপি, জপমালা
ধারণ করিতেন, উপাসনাও ব্রত নিষ্ঠায় অনেক
সমর যাপন করিতেন। অরণ্যে পটমগুপে অবস্থিত
ছিলেন। সহকারী দক্ষাগণ লুঠনসামগ্রী আনিয়া
জীহার নিকটে উপস্থিত করিত, তিনি ভাহা

সকলকে ভাগ করিয়া দিতেন এবং নিজেও এক অংশ গ্রহণ● করিতেন। নিয়মিত রূপে সামাজিক উপাদনা করিতেন, যে সকল দস্তা উপাদনায় যোগ দান করিতনা ভাহাদিগকে দল হইতে দূর করিয়া দিতেন। তাঁহার এরূপ নিয়ম ছিল যে যে সকল পথিক বণিকের নক্ষে স্ত্রী লোক থাকিত তাহাদিগের প্রতি আক্রমণ করিতে সহচরদিগকে অনুমতি দান করিতেন না, যাহাদের সঙ্গে ধন অল্ল থাকিত তাহা-मिश **इटेर**७७ किছু গ্রহণ করিতেন না, যাহা-দিগের সম্পত্তি অপহরণ করিতেন সেই সম্পত্তির অমুরপ তাহাদিগকে কিছু কিছু দান করিতেন। তিনি একজন স্ত্রীলোকের প্রতি আসক্ত ছিলেন, স্বীর চোরিত দ্রব্য তাহার নিকটে রাখিয়া দিতেন। একদা একদল বণিক্ দস্থাগণের সারা পাইয়া ব্যন্ত সমস্ত হইলেন। তাহাদের মধ্যে এক-

জনের প্রচুর মুদ্রা ছিল, তিনি তাহা লুকাইবার জন্য বনের ভিতরে প্রবেশ ক্রবেন, তথায় যাইয়া উক্ত পট মণ্ডপ দেখিতে পানও সেথানে একজন দরবেশ বসিরা তদ্বি জপ করিতেছে দেখেন, ইহা অবলোকন করিয়া তিনি তাঁহার হস্তে মুদ্রা সমর্প করিবার জন্য নিকটে উপস্থিত হওত: স্বীয় অবস্থা জ্ঞাপন করেন। সেই দরবেশ বেশধারী ফজিল গুহে মুদ্রা রাখিয়া দিবার জন্য ইঙ্গিত करतन । विनक्छ जनस्यात्री कार्या करतन । धिनितक मञ्जार्ग विकिमार्गत यांश किছ हित मस्मन नुर्शन করিরা গইল। অতঃপর পূর্ব্বোক্ত বণিক্ গক্ষিত মুক্তা প্রতিগ্রহণ করিতে গেলেন 1 পটমগুপের ঘারে বাইয়া দেখেন দহাগণ অপহত সামগ্রী বিভাগ করিতেছে, তখন তিনি আক্ষেপ করিয়া विनातन कि "हाइ! श्रामि श्रह छ मञ्चाहरू पूर्वा समर्थन कतिबाहि। क्षिन मृत हरेट प्रविधा- তাঁহাকে ডাকিলেন। তিনি ভরকম্পিত কলে-বরে নিকটে উপস্থিত হইলেন, ফজিল জিজাসা করিলেন "কি জন্য আসিয়াছ?" তিনি বলিলেন "গক্তিত ধন পুন্র্রাহণ করিতে।" ফ**জিল বলিলেন** "বে স্থানে তাহা রাথিয়াছ সেথানে আছে, লইয়া যাও।" বণিক মুদ্রা প্রতিগ্রহণ করিয়া আপন সঞ্চী-দিগের নিকটে চলিয়া গেলেন। ফজিলের ব্দ্ধুগণ ফজিলকে বলিল "এই বণিকৃদলে কিছুমাত্ত মুদ্রা পাওয়া যায় নাই, তুমি এত গুলি টাকা কেন কিরাইরা দিলে।" ফজিল বলিলেন "এই বাক্তি আমার প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করিয়াছে আমিও ঈশবকে বিখাস করিয়া তাহার বিখাস সম্পূর্ণ করিরাছি, ঈশর আমার বিশাস পূর্ণ কবি-বেন ।"

তৎপর এক দিন রঙ্গনীতে একজন বশিক্ একটী কোরাণোক্ত প্রবচন উচ্চারণ পূর্বক "এইকণও কি

সময় উপস্থিত হয় নাই যে তোমার এই নিদ্রিত মন জাগরি**ত হয়"। এই কথা ুবনি**তে বলিতে সেই পঠমগুপের নিকট দিয়া যাইতেছিল। এই উক্তি বাণ সদৃশ হইয়া ফজিলেয় প্রাণকে বিদ্ধ করিল । সেই প্রবেচণ ফ্রিলকে আক্রমণ করিয়া যেন বলিল "কত-কাল আর প্রিককে মারিবে তোমাকে মারিবার সময় উপস্থিত হইরাছে"। ফ্রিল আর্ত্তনাদ করিতে লাগিলেন এবং বলিলেন ''শর কঠিন রূপে বিদ্ধ হইয়াছে।" তিনি অতীব লচ্ছিত ও আকুল ছইরা অরণ্যের এক দিকে চলিবা গেলেন। দে স্থাকে কত**ক্**গুণি বণিক্ উপস্থিত ছিল, তাহারা : পরস্পার বলিতেছিল স্বস্থা ফজিল অদুরে আমা-দের গ্মাপথে উপস্থিত আছে, আমরা যাইতে সক্ষম হইব না।" ফ্জিল ভানিয়া বলিলেন "ভোমাদিশকৈ স্থসংবাদ দান করিতেছি যে ফুজিব अकुराभिक इरेबाए, अहा जागानिश रहेट ज

পলার্মন করিতেছে, এই বলিয়া তিনি ক্রন্দন করিতে করিতে অনাদিকৈ চলিয়া যাইতে লাগিলেন। তথন ^জপথে এক ব্যক্তিকে পাইয়া नेयरतत ताहारे निया विनातन, त्य " आभारक বন্ধন করিয়া দওদাতা বাদশার নিকটে লইরা যাও, তিনি আমার প্রতি দণ্ড বিধান করুন " নেই •ব্যক্তি তাহাই করিল। বাদশা তাঁহার ष्यवश (मिशारे क्रमयक्रम क्रियान (य विश्वश्रक्ति তাহাকে দণ্ড দিয়াছেন, জীবনের পরিবর্ত্তন হইয়াছে। এই ভাবিয়া তিনি আর শান্তি দান করিলেন না। সম্বানে তাঁহাকে • স্বদেশে পাঠাইয়া দিলেন। পরে তিনি অনেক নাধুসঙ্গ ও धर्म खात्नत यात्नाहना ७ गाधना करतन, এवः मका নগরে বাইরা ধর্মোপদেশকের পদে আর্চ্ছন। মকায় তাঁহার উপদেশ এবণের জন্য অত্যন্ত জনতা হইছ। তাঁহার ভীবনের জিয়া অনেক

আছে। এ হলে আর তাহার উল্লেখ না করিয়া কেবল তদীম কয়েকটা উপদেশ উক্তি অমুবাদ করিয়া দেওয়া গেল। (১) সংসারে প্রবেশ করা সহজ, কিন্তু প্রবেশ করিয়া তাহা হইতে বহিৰ্গত ও মুক্ত হওয়া কঠিন। (২) সংসাব কিপ্তানম বরুপ, প্রত্যেক মহুব্য তাহাতে কিপ্ত मनुनें, किथानाय किथिनिरगत रास्त्र ७ भनुरमान বন্ধন থাকে। (৩) যিনি আপনাকে উপযুক্ত মনে করেন, তাঁহাতে বিনয় নাই। (৪) লোকের জনা অমুষ্ঠানপ্রিয় হওয়া কপটতা, লোক উদ্দেশ্যে অভুষ্ঠান করা লোকের পূজা, যথন ঈশ্বর ভোমাকে এই গুইভাব হইতে রক্ষা করেন, তথনই মুক্তির অবস্থা। (c) যিনি ঈশ্বরকে সভ্য দৃষ্টিতে দর্শন করেন, তিনিই তাহাকে সতাভাবে পূজা করেন। (🕶) ইবর ব্যতীত অন্য কিছতে আশাৰিত না হওৱা দীৰ্বৰ ব্যতীত কাহাকে ভৰ मा कतारे वर्षोर्व निर्कत, निर्कत छारारे त केवत ঘটন থাকা, দিখায়ে কোন কাৰ্য্যে তাঁহার প্রতি मायादान ना कता ७ छाहात्र निका ना कता. অন্তর বাহির তাঁহাকে সমর্পণ করা। (१) অনেক শোক অভদ্ধ স্থানে বাইরা ভদ্ধ মনে ফিরিয়া খালে, খনেক লোক তীর্থে বাইরা খণ্ডর হইরা প্রত্যাগত হয়। (৮) মুর্থের সঙ্গে মিটার ৰাওয়া অপেকা পণ্ডিতের সকৌ, বিবাদ করা বরং ভাল। (১) তোমাদের হুইটা মূর্বের স্বভাব খাছে, এক আশ্চর্যা কিছু না,দৈধিয়া হাস্য কর, আর নিজে না করিয়া উপদেশ দান কর।

৫ 1 দরবেশ হয়ান বলিয়াছেন বে "আমি মঁহায়া আবেল কয়ণীকে দর্শন করিবার জন্য কুফা অকলে সমন করি এবং তথার উপনীত হইয়া অস্থ্যক্তার অসিতে করিতে প্রেথি বে এক জন বয়বেশ য়য়ায় নদীর তীরে বসিয়া বস্তু ধৌত ও অজু করিতেছেন। আমি পূর্বেই আবেদের মন্তবের কথা শুনিয়া-ছিলাম, ইনিই আবেসকরণী চিনিতে পারিয়া নমস্কার করিলাম, তিনি প্রতিনমস্কার জানাইলেন এবং আমার প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেন। আমি তাঁহাদ্ম কর স্পর্শ করিতে চাহিলাম, কিন্তু তিনি হস্ত সঁহুচিত করিয়া রাখিলেন। আমি বলিলাম ''আবেস! আপনার প্রতি ঈর্ম্বর সদয় থাকুন আপনি কেমন আছেন ?" এই কথা বলিয়াই তাঁহার দৈন্য ও শীর্ণাবস্থা দেখিয়া আমার মনে খতাস্ত কঁট্ট হইল,তাঁহার প্রতি অনুরাগের উচ্চাুুুুেন আমি কাঁদিতে লাগিলাম, তিনি ও কাঁদিলেন এবং প্লিলেন, 'চিরজীবী হও হে হরমের পুত্র হ্যান! আমার ভাই! তুমি কেমন আছ? আমার অহুসন্ধান তোমাকে কে বলিয়া দিলে ?' আমি ব্যালাম আপনি আমাকে এবং আমার পিছ

দেবকে কেমন করিয়া চিনিলেন, আপনি আমাকে কথন দেখেন নাই ৷ তিনি বলিলেন 'দেই ঈশ্বর আমাকে সংবাদ দিয়াছেন যাঁহার জ্ঞানের অগোচর কিছুই নাই। আমার আত্মা তোমার আত্মাকে চিনিয়াছে। না দেখিলে ত্ত এক সাধকের আত্মা আর এক সাধকের আত্মাকে চিনে ও পরম্পপরের প্রতি অনুরাগী হয়।' আমি বলিলাম আপনি মহাত্মা মহম্মদ সম্বন্ধে কিছু বলুন যাহা আমার নিকটে স্মরণীয় হইয়া থাকিবে। তিনি বলিলেন 'আমার দেহ প্রাণ মহাপুরুষ মহম্মদের চরণে উৎ-দর্গিত হউক, আমি সেই মহাত্মার পদচ্বন রূপ সোভাগ্য লাভ করিতে পারি নাই, আমি তাঁহার মহাবাক্য অন্যের মুথে শ্রবণ করিয়াছি। 'আমি ইচ্ছা করি না যে সেই বাক্যের বক্তা হই, আমি ব্যবস্থাপক,উপদেষ্টা বা বক্তা হইতে কুঠিত।' আমি বলিলাম কোরাণ সরিফের কোন একটা বচন

আপনি আমার নিকটে পাঠ করুন, আমি তাহা আপনার মুখে প্রবণ করিব এবং আমার জন্য আশীকাদ করুন ও আমাকে কিঞ্চিৎ উপ-দেশ দান করুন, যেহেতু আমি অপনাকে ধর্ম-বন্ধু বলিয়া জানি এবং আপনাকে অত্যন্ত প্রেম-করি। ইহা ওনিয়া তিনি ফরাত নদীর কুলে আমার কর গ্রহণ করিলেন ও একটা আশী-कांक वहन विनश क्नन कविए नाशिलन। পরে বলিলেন 'আমার প্রভূ এই আদেশ করি-য়াছেন, তাঁহার বাক্য দত্য ও অভ্রান্ত। এই বলিয়া क्लाबार्णंब इरेंगे वहन छेक्रावन कबिरनन। उथा প্রেমে এরপ বিহবল হইয়া উঠিলেন, হয়ান বলেন বে আমার বোধ হইল যেন তিনি মৃদ্ধিত হইলেন। পরে সংসারের অনিত্যতা সহক্ষে কিছু বলিয়া खरे डेशरमम मिरमन त्व 'अर्चातक शह ७ महा-অনদিপের পথ অবলম্বন করিয়া চলিও, এক কণ্ড মৃত্যুমরণে উপেক্ষা করিও না, যথন মঞ্চাতির নিকটে যাইবে সফ্রাদেশ দানে বিরঁত হইও না, সমধর্মাবলম্বীদিগের মণ্ডলী ছইতে পদ বাহিরে স্থাপন করিও না, তাহা করিলে তৃমি অধার্মিক হইবে ও এমত তাবে নরকে পড়িবে যে টের পাইবে না।' ইহা বলিয়া আশীর্কাদ করিয়া এক গলির ভিতরে প্রবেশ করিলেন, আর তীহাকে দেখিতে পাইলাম না। আমার ইচ্ছা ছিল আরো কিছুকাল তাঁহার সক্ষ করি, হঃবিত হইলাম ও রোদন করিতে লাগিলাম।"

ছুই বালকপণ এই আবেস করণীকে ক্ষিপ্ত জানিদ্বা পথ দিরা চলিদ্বা যাইতে তাঁহার প্রতি পাধর ছুড়িরা আমোদ ক্রিত। তিনি মার খাইরা শাস্তভাবে বলিতেন "বালক বৃন্দ। কুদ্র কুদ্র পাথর মারিও,বড় পাথরের আঘাতে আমার পা ভাঙ্গিরা বাইবে,তাহা হইলে আমি নমাজের জন্য দাঁড়াইতে পারিব না।»

৬। একদা কোন দরত্বেশ স্থানান্তর হইতে আসিয়া স্বীয় বন্ধুর কুটির দারে আঘাত করিলেন। বন্ধু, জিজ্ঞাসা করিলেন "কে বট ?" তিনি বলিলেন আমি, বন্ধু বলিলেন "চলিয়া যাও, যথন তোমার তুমিত্ব (স্বতম্বতা) তোমা হইতে বিদূরিত হয় नार, 'ज्यन जामारक विष्कृतानल नक्ष श्रेड इहेरव i" এই कथा अनिया मत्रदव विषश मरन চলিয়া গেলেন, সম্বৎসর কাল স্থানান্তরে থাকিয়া বন্ধুর বিচ্ছেদ যন্ত্রণা সহ্য করিলেন, ও তপস্যায় নিরত রহিলেন। পরে তপঃসিদ্ধ হইয়া পুনর্কার বন্ধুর দারে আসিয়া উপস্থিত হইলেন ও দারে করাঘাত করিয়া তাঁহার প্রশ্নের প্রতীকা করিতে লাগিলেন। বন্ধু জিজ্ঞানা করিলেন "হারে কে ?" আগন্তক উত্তর করিলেন 'ভারে তুমিই বট।'' ইহা শুনিয়া প্রদর বদনে তিনি বলিনেন"এইক্ষণ তুমি আমাতেপরিণত इहेंबाइ, जूबि वाबि এक इहेनाम, व्यदन कत्र।

এক গৃহে হুই আমির স্থান নাই, ষ্থান সকল এক হয় তথন আর ছই থাকে না। পরিগামে আমিত তুমিত হুই চলিয়া যায়। স্থাচির ছিদ্রে হুই বিভিন্ন স্ত্রাগ্র প্রবেশ করে না, যথন এক হইয়াছ স্থচি গর্ভে প্রবেশ কর। হুচির সঙ্গে স্থতের সম্বন্ধ, উষ্ট্রের সঙ্গে স্থানিজনের সম্বন্ধ নাই। সাধনা রূপ তীক্ষ ছুরিকা মহুষ্যের উট্টরূপ জীবনকে কাটিয়া স্ক্র করিতে পারে। বন্ধু! ঈশ্বরের শক্তির প্রত্যাশী হইবে, তাঁহার হস্তে প্রত্যেক ছক্ত কার্য্য সহজ হয়, তাঁহার ভয়ে সকল অনায়ত্ত আয়ত্ত হয়, তাঁহার কথার মৃত জীবিত হয়। জগৎ অসৎ ছিল, মৃত অপেকাও অধিক মৃত ছিল, তাঁহার সঞ্জীবনী শক্তিতে দেই অসৎ সৎ হইল। তাঁহাকে নিতা ক্রিয়াশীল বলিয়া বিশ্বাস করিও,তিনি নিষ্কিয় এরূপ मत्न कत्रिष्ठ ना। जिन मन रिमना होनना कत्रा তাঁহার প্রাত্যহিক সামান্য কার্য্য, এক দল জরায় কোৰে প্রেরণ করেন, অপর দল ধরায়ু হইতে वृष्यक्षत चारमन कर्तन, वृष्यक्षतक जी श्रक्रव পূর্ণ করেন। অন্য দল তথা হইতে পরলোকে পাঠাইয়া দেন। তাঁহার শুভক্রিয়া সকলেই দেখে. এ সকল কথার শেষ নাই।" অনন্তর সেই ঈশব . প্রেমিক বন্ধু বলিলেন "হে আমার অংশ! এস,ভূমি छेमानक भूष्म ७ क फेटकब नावि भवस्भव विद्याधी নও, স্ত্ৰ এক হইয়াছে, এইক্ষণ দোষমুক্ত। চুই বা বা চারি চরণ পথ গমন করুক না কেন ? কেঁচীর नाात्र विভिन्न भन यावात्र এक भन रहेबा थाएक। প্রত্যেক মহাপুক্ষ ও মহাজনের গভি বিভিন্ন, কিন্ধ ঈশবেতে সকলেই এক।"

 [।] দরবেশ হোদেন বনোরী আপনাকে এরপ নীচ অধম বলিয়া জানিতেন বে বাহাকে দেখিতেন তাহাকেই আপনা অপেকা শ্রেষ্ঠ মনে করিতেন।

একদা তিনি কোন নদীর তীর দিয়া যাইতে ছিলেন, এক কাফ্রিকে দেখিলেন যে একটা স্ত্রীলোকের সঙ্গে নদীকূলে বসিয়া আছে, এক বৃহৎ বোভন সমুখে, তাহা হইতে ঢালিয়া পান করিতেছে। হোসেন ভাবিলেন, এই ব্যক্তি কি আমা অপেকা শ্রেষ্ঠ ? না, এই ব্যক্তি আমা অপেকা শ্রেষ্ঠ নয়; বৈহেতু এ একজন স্ত্ৰীলোকের সঙ্গে ৰসিয়া স্থ্ৰা পান করিতেছে। তিনি চিম্বা করিতে করিতে এই ৰলিতে ছিলেন। ইতি মধ্যে এক খানা নৌকা ভথার উপস্থিত হইল, অকন্মাৎ নৌকা খানা তরকাকুল নদীতে নিমগ্ন হইরা গেল। তাহাতে সাত জন আরোহী ছিল, তাহাদিগকে উদ্ধার করিবার জন্য কান্তি তৎকণাৎ জলে ঝাঁপ ৰিয়া পড়িল, এবং অত্যন্ত সাহস ও বীরত্ব প্রকাশ भूर्कक एव बनाक छेदांव कविन, अवः शांतरातव थि । पृष्टि कदिशा विनन, "आमि इश सनत्क वीष्टाई-

শাম, তুমি এক জনের জীবন রক্ষা করঁ। হে মুসল-मानिएशत आहार्य। त्म द्वीत्नाक्षी आमात् জননী, সেই বোতল হইতে তুমি যাহা পান করিতে দেখিয়াছ তাহা জল। ইচ্ছা করিয়াছিলাম যে তুমি অন্ধ, না চকুত্মান তাহা পরীক্ষা কার। দেখিলাম যে তুমি অন্ধ।" ইহা গুনিরা হোসেন লজ্জিতভাবে নেই কাফ্রির চরণে পতিত হইয়া ক্ষমা প্রার্থনা করি-লেন, জানিলেন যে কাফ্রি তাঁহাকে শিক্ষা দানের জন্য ঈশ্বর কর্তৃক প্রেরিত। তথন তিনি বলিলেন "হে কাজি! এই লোক গুলিকে তুমি নদীতর হইতে রক্ষ করিলে আমাকেও অহন্বার নদীর আবর্ত্ত হইতে উদ্ধার কর।" কান্তি "তুমি চকুমান্ হও" विशा दशरमन्दर आगीसीन कतिन। अठःभव এই হইল বে হোদেন সভ্য সভাই আপনাকে কাহা অপেকা শ্রেষ্ঠ বলিয়া মনে করিতেন না। একদা এক কুকুর তাঁহার নিকটে উপস্থিত হয়। কেহ

জিজ্ঞাসা করিল"তৃমি শ্রেষ্ঠ, না কুকুর শ্রেষ্ঠ?" তিনি বলিলেন "যদি আফ্রার ধর্মজীবন রক্ষা পার, তবে কুকুর অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ, অন্যথা আমার ন্যায় একশত হোসেন অপেক্ষা একটী কুকুর শ্রেষ্ঠ।"

৮। পুরা কালে ধর্মপথের নেতা ভূতলে স্বর্ম · জ্যোতিঃস্বরূপ দিব্যোদ্যানের দ্বারোদ্যাটক পেগাম্বর (মহাপুরুষ) সদৃশ দেশপূজ্য এক দরবেশ ছিলেন । अक्ता मकानगदात अक वर्षीयनी नाती आनिश তাঁহাকে নিবেদন করিল "গুরো,তুমি এরূপ পার্বাণ-হাদর কেন? আমরা তোমার প্রভানগণের বিয়োগে ক্রন্দন বিলাপ করিতে করিতে অবসর হইয়াছি, তুমি কাঁদিতেছনা কেন? তোমার মৰে कि त्यर नारे ? खता! यनि তোমার इनत्य ক্ষেহ মমতা না থাকে, তবে এইক্ষণ তোমার নিকটে আমাদের কি আশা। হে অগ্রগামী নেতা। আমরা

আশা করিতে ছিলাম যে ছঃসময়ে তুমি আমা-मिशक পরিত্যাগ করিবে না, যখন বিচারের সিংহাদন প্রতিষ্ঠিত হইবে সেই দক্ষটের সময়ে তুমি আমাদিগকে সাহায্য করিবে। সেই নিরাশ্রয় অবস্থার জন্য আমরা তোমারই অতুগ্রহের প্রার্থী . হইয়া আছি, তখন তোমার বসনাঞ্ল আমাদের रुखन , अवनमन इरेटन धरे आना कति।" दमह মহাপুরুষ বলিলেন "বিচারের দিনে অমুভাপা-শ্রুবর্ষণকারী পাণীকে কি আমি কখন পরিত্যাপ করিব ? আমি প্রাণ পণে পাপিগণের পক্ষ সমর্থন कतियां किन मध श्रेटिक छेकांद कतिव।" माधु পুৰুষ এই দ্ধপ অনেক আশার কথা বলিলে, বৃদ্ধা श्नकींद्र· बिर्दान कदिल "श्रद्धां आयदा नकरन ভোষার নিকটে আশাহিত, তোমার কুপাক্ণার विजानी। किंद्र धक्त । **धरे यकन मर्द मर्द्र** ভোষার দরা নাই কেন! সন্তান সক্ষে ভূষি

কি কারণে এরপ নির্ব ? তোরার মন কি নিশ্চরই শোকদগ্ধ হইতেছে না ৮ এ বিষয়টী আমাকে পরিফার রূপে বুঝাইয়া দেও।"

षत्र त्य विलालन "कल्यानि। जुमि मान कृति । আমার স্বেহ মমতা নাই, আমার হৃদর নির্দর। সমুদার কাফেরের অর্থাৎ ধর্মদ্রোহীদিগের উপর আমার দয়া রহিয়াছে, যদিচ তাহাদের প্রাণ.পাষ্ত্র-তার পরিপূর্ণ। কুকুরের প্রতি ও আমার মমতঃ ও প্রদর্গ। যে কুকুর দংশন করে, আমি প্রার্থনা করি ঈশর! ইহাকে এই হঃমভাব হইতে মুক্ত কর, অপিচ ইহাকে লোকের অত্যাচনরে নিপী-ডিত হইতে দিও না। ঋষিগণ জীবের প্রতি দ্যা করুক এইজনাই পমেশ্বর তাঁহাদিগকে পৃথি-বীতে প্রেরণ করেন। তাঁহারা লোকদিগকে ঈশরের মন্দিরাভিমুখে আমন্ত্রণ করেন ও তাহা-म्बर भविकारणद कना क्षेत्रदरक व्यास्तान करवन।

সামান্য লোকদিগের প্রেম ব্যক্তিগত, অসা-মান্য দরবেশ পুক্ষদিগৈর প্রেম সার্বভৌমিক। বদ্ধ লোক সমুদ্র কি জানে না, প্রত্যেক সরো-বরকে, দে সমুদ্র মনে করে। যে জন স্রোত-স্বতীর পথ জানে না, সে স্রোতস্বতীতে জন্য লোককে কি প্রকারে আনয়ন করিবে।" প্রাচীনা বলিল "যদি নকলের প্রতি তোমার মুমতা রহিয়াছে, ও তুমি মেষপালকের ন্যায় সকলের সঙ্গে আছ, তবে সন্তানদিগকে শমন হস্তে পতিত मिथिया दिन कुन्तन विनाश कत ना, नयात निम-র্শন অঞ্-_তোমার নেত্র ক্রন্দনবিহীন অঞ্শুন্য কেন ?" মহাজ্ঞানী দরবেশ এই অনুযোগ শুনিয়া উষ্ণ হইলেন ও সেই নারীর প্রতি দৃষ্টিপাত করিয়া বলিলেন"রদ্ধে! শীত ঋতু কথন গ্রীম্ম ঋতুর প্রকৃতি ধারণ করে না। আমার সমুদর সন্তান মরিয়া থাকিলেও তাহারা জীবিত। তাহারা আমার

অস্তশ্ব অলোচরে নহে। আমি যথন তাহাদিগকে আমার নিকটে বিদ্যান গদেখিতেছি আমি কেন তোমার নায় বিষীল্পন হইব। তাহারা যদিচ এই পৃথিবীতে নাই, কিন্তু আমার সঙ্গে আছে ও আমার চতুপার্শে ক্রীড়া করিতেছে, ক্রেন্সন বিচ্ছেদ বিরোপে হয়, আমার স্নেহাম্পদের সঙ্গে সন্মিলন রহিয়াছে, তাহাদের স্বন্ধে আমি হস্তাপণ করিয়া আছি, আমি কেন কাঁদিব। লোকে স্বপ্ন যোগে মৃত আয়ীয়দিগকে দর্শন করে, আমি জাগরিত থাকিয়া তাহাদিগকে স্পষ্ট দেখিতেছি।"

১। আরবের কোন গিরিশিখরে এক দরবেশ তপস্যার রত ছিলেন। দৈবাৎ সেধানে কয়েকজন দস্থ্য
আসিয়। বাস করে। একদা তাহারা চোরিত দ্রব্য
সকল বিভাগ করিতে ছিল এমত সময়ে শান্তিরক্ষকের
অমুচর আসিয়া তাহাদিগকে বন্ধন করে, তাহাদের

मान मिर् माधु भूक्ष प्रशा विविद्यान्त्रकी राजन। শান্তিরক্ষক প্রত্যেক দহুগর বাম চরণ ও দক্ষিণ হস্ত ছেদনে অমুমতি করেন। দক্ষীদের সঙ্গে সাধুরও দক্ষিণ হস্ত ছিল্ল হইয়াছে, ঘাতক তাঁহার চরণ कांग्रिट छेमुछ এমত সময়ে এক জন অখারোহী আদিরা উপস্থিত হয়েন, তিনি সেই মহাপুরুষকে চিনিতেন, তাঁহার প্রতি এই ভয়ানক অত্যাচার দেখিয়া ক্রোধক্যায়িতলোচনে শোকাকুলমনে খাতককে বলেন "সর্জনাশ! রে ছরাআ! করিয়া-ছিস্ कि ? देनि य जैवद्रभदावन माधू, এই महाचात হস্ত ভুই কেনু ছিল করিলি ?" ঘাতক ইহা শ্রবণে সন্তম্ভ হইবা দৌড়িরা বাইরা শান্তিরক্ষকে সংবাদ षिन, भाखितकक छनिया राख मयख रहेवा भूना-পদে দৌড়িয়া আসিলেন এবং বিনীতভাবে ক্ষা আর্থনা করিয়া বলিবেন "ঈশ্ব সাকী আমি किहर कानि ना, ए नवान वर्गीव श्रुक्य !

আমাকে এই ছিছুয়ার জন্য অপরাধী পণ্য ক্রিবেন না।" দুরবেশ শান্তভাবে বলিলেন '' আমি এই হুর্যটনার কারণ জানি, আমি নিজের অপরাধ বুঝিতেছি, আমি ধর্ম বিশ্বাসের সন্মান না করি নাই, অতএব সেই প্রম বিচারপতি আমাকে হস্তচ্যত করিলেন। আমি তাহাঁর নিকটে নঙ্কল ভঙ্গ করিয়াছি তজন্য আমার হস্তে এই আঘাত আসিয়াছে, আমার হস্তপদ আমার মস্তিম্ব ও ত্বক প্রিয়তমের আজ্ঞার গৌরবার্থ বিনষ্ট হউক। আমি শপথ করিয়া বলিতেছি তোমার দোষ নাই, আমি তোমাকে মার্জনা করিলাম, তোমার অপরাধ কি 📍 বিজ্ঞ বিচারক পরমের্থরের সঙ্গে কাহার প্রতি যোগিতা। অনেক মৎস্য গভীর জলে থাকিয়া লোভ বশতঃ বর্ণিবিদ্ধ হয়, অনেক গগণবিহারী বিহঙ্গ লোভে পিঞ্জরবদ্ধ হয়, অনেক অন্তঃপুরস্থ অস্থ্যম্পশ্যা যুবতী কুপ্রবৃত্তির অধীন হইয়া পবি-

ত্রতা বিনষ্ট করে, অনেক সচ্চরিত্র অভিজ্ঞ ব্যবস্থাপক (কাজী) উৎকোচের লোভে আপনার মুখন্ত্রী
মলিন করে, অনেক তীর্থ্যাত্রিক প্রেমভাবে তীর্থে

যাইয়া তথা হইতে প্রত্যাগমন কালে কল্বিত হইয়া
আইসে। আমি সেইরূপ দোষী হইয়াছি।" এই
বলিয়া তিনি শান্তিরক্ষককে নির্দোষ বলিয়। মুক্ত
করিলেন। তদবধি সেই দরবেশের নাম আক্তা
হয়, আক্তা শব্দের অর্থ ছিল্ল হস্ত।

১০। দরবেশ আব্দলা থফিফের আহমদকা এবং
আহমদমা নামে ছইজন শিষ্য ছিল। অব্দলা
থফিফ আহমদকার প্রতি অধিক অন্তরক্ত ছিলেন।
তাহাতে আবদলার বন্ধুগণ কিছু বিরক্ত হয়েন।
কেননা আহমদকা অপেকা আহমদা অধিক
কার্যাদশী ও চতুর ছিল। দরবেশ আবদলা
ইহা বুঝিতে পারিষা বন্ধুদিগকে বলিলেন যে

'' আমি উত্যের গুণাগুণ তোমাদের নিকটে প্রদ-র্শন করিতেছি।" এই বলিয়া তিনি আহমদমাকে ডাকিলেন, সে উপস্থিত হইলে বলিলেন ষে " সেই উষ্ট্রটী যে কুটিরের দারে শরান আছে, তাহাকে যাইরা ঘরের ছাদের উপর উত্তোলন কর।" আহমদমা বলিল "গুরো। অত বড় উট আমি কেমন করিয়া ছাদের উপরে তুলিব, তাহা পারিব না।" গুরু বলিলেন " আছা ক্ষান্ত হও।" পরে আহমদকাকে ডাকিয়া সেইরূপ আজ্ঞা করিলেন. আহমদকা যে আজা বলিয়া তৎক্ষণাৎ ফুট হস্তে আন্তিন গুটাইয়া ও কোমর বাঁধিয়া বাহিরে চলিয়া আসিল এবং উষ্টের উদর দেশে হস্ত স্থাপন করিয়া ছাদে তুলিবার জনা যথা সাধ্য চেষ্টা করিতে লাগিল কিন্তু তাহাকে নারিতেও পারিল না। ইহা দেখিয়া আব্দরা বলিলেন " বুঝা গিয়াছে ক্ষান্ত হও।" পরে ধর্ম

ৰক্দিগকে বলিলেন "আহমদকা আমার আদেশ পালনে প্রাণপণে চেষ্টা করিহাছে, অবধ্যতাচরপ্ত ও আপত্তি উত্থাপন করে নাই, আমার অমুজ্ঞার সম্মানের প্রতি তাহার দৃষ্টি ছিল, কাষ সম্পন্ন করিতে পারিবে কি না তংগ্রতি নয়। আহদমা আপ্তিও তর্ক বিতর্ক করিয়াছে, এই বাহ্য ঘটনা-ভেই°উভয়ের অস্তর পরীক্ষা হইতে পারে।"

১১। দরবেশ আবদরা থফিফের নিকটে একজন বিদেশাগৃত লোক উপস্থিত হয়েন, তাঁহার উন্ধীর, অঙ্গাবরণ ও পারিধের বসন সম্দারই ক্ষণবর্ণ ছিল। ইহা আব্দরার মনে ভাল লাগে না, 'ছিনি' জিজ্ঞাসা করিলেন "ভাই! কাল কাপড় কেন পড়িভেছ?" আগস্তুক বলিলেন " আমার প্রভৃদিগের মৃত্যু হইরাছে, তজ্জন্য।" এস্থলে প্রভৃদ্বামক্রোধাদি রিপু। দরবেশ বলিলেন " এলোক-

টাকে এখান ইইতে দ্র ক্রিয়া দেও।" [শিষ্যগণ ,তাহাই করিল। ,প্নর্কার বলিলেন " ডাকিয়া আন।" তৎপর প্নরায় অপুমান করিয়া তাড়াইয়া দিলেন। আবার নিকটে ডাকিয়া আনিলেন। সত্তর বার এরপ করা হইলে আব্দলা তাঁহার অবিচলিত প্রশাস্ত ভাব দেখিয়া পাত্রোখান প্র্কক তাঁহাকে অভ্যর্থনা করিলেন ও তাঁহার শিরশ্চুমনাস্তর ক্ষমা প্রার্থনা করিয়া বলিলেন "এই কৃষ্ণবন্ত্র পরিধান• তোমার পক্ষে উপযুক্ত হইয়াছে।"

১২। একদা রজনীতে দরবেশ আহমদ্থেজরের কুটী রে চোর প্রবেশ করে, সে গৃহ তর তর করিয়া অফ্সন্ধান করিল চুরি করিতে পারে এমন কেশন দ্রব্য প্রাপ্ত হইল না। অগত্যা নিরাশ হইয়া ফিরিয়া যাইতে লাগিল। আহমদ্থেজর ইহা জানিতে পাইয়া চোরকে ডাকিয়া বলিলেন " যুবক! এই

জলের ভাও লও, হস্তপদাদি প্রশ্নালন করিয়া আমার সঙ্গে নমাজে প্রবৃত্ত্ও। আমি অঙ্গী: কার করিতেছি যে অদ্য রাত্রিতে আমার সঙ্গে উপাসনা করিলে, কল্য প্রাতে যাহা দান পাওয়া যাইবে তোমাকে দিব।" এই কথায় চোরের লোভ হইল। আহমদ্থেজরের কথামুসারে সে ফিরিয়া আসিয়া তাঁহার সঙ্গে উপাসনায় প্রবৃত্ত ছইল, তথন আহমদ থেজরের উপাদনার ভাব দেখিয়া, স্তুতি প্রার্থনা সকল শ্রবণ করিয়া তাহার মনে স্বীয় কুকর্মের জন্য অনেক অনুতাপ উপস্থিত হইল, সে[']ব্যাকুশ হইয়া ক্রন্সন করিতে লাগিল। প্রাতঃ কালে এক ব্যক্তি আসিয়া আহমদ্থেজরকে এক ্শত টাকা দান করে। তিনি দেই মুদ্রা চোরের হতে প্রদান করিয়া সঙ্গেহ বচনে বলিলেন, এই धन शहर कद ७ शहर हिना यो । को व रख হইতে টাকা ফেলিয়া দিয়া ঋষির চরণে পড়িয়া

[cc j

অনেক ক্রন্দন করিল, তদৰ্ধি সে চুরি পরিত্যাগ করিয়া তাঁহার এক জন শিষ্য হইয়া রহিল।

১৩। এক দিন মহর্ষি মারুফ কোন মস্জিদে স্বীর দ্রব্যজাত রাথিয়া স্নান করিতে গিয়াছিলেন। ইতি-মধ্যে একটা বৃদ্ধা স্ত্ৰী আদিয়া তাঁহার কোরাণ, জলপাত্ত নমাজের আসন চুরি করিয়া লইয়া যায়। মারুফ প্রত্যাগমন করিয়া দেখিলেন যে তাঁহার দ্রব্য সামগ্রী নাই, বহির্ভাগে দৃষ্টি করিয়া দেখেন যে এক বৃদ্ধা উহা লইয়া পলাইয়া যাই-তেছে। তথন মাকৃফ সত্বর গতিতে কুলার নিকটে যাইয়া বলিলেন, "ওগো! তোমার কি কোন পুত্র আছে যে কোরাণ পড়িতে পারে ?" বৃদ্ধা চকিত হইয়া বলিল, "না মহাশয়!" মারুফ বলিলেন, "যদি তাহা না হয় কোরাণ খানা রাথিয়া যাইতে পার, আমার বিশেষ উপকার

হইবে, আর সমুদায় বস্ত লইয়া থাও।" বৃদ্ধা
মারুফের মিষ্ট কথা প্রবণ এবং প্রেমপূর্ণ গন্তীর,
ভাব দর্শন করিয়া ব্যাকুল অন্তরে সমুদায় দ্রব্য
সামগ্রী হস্ত হইতে ফেলিয়া দিল ও দরবেশের চরণে
পড়িয়া অনেক ক্রন্দন করিল। মারুফ জলপাত্র ও
আসনু লইয়া যাও বলিয়া তাহাকে অনেক সাধ্য
সাধন,করিলেন কিন্তু বৃদ্ধা কোন রূপেই তাহা ভাহণ
করিতে সম্মত হইল না। অনেক ক্ষণ ব্যাপিয়া স্বীয়
পাপের জন্য রোদন করিল।

১৪। দর্থেশ জাফর সাদকের নিকটে কেছ আসিরা বলিরাছিল যে তুমি আমাকে ঈশ্বরদর্শনে সক্ষম কুর। তথন সাদক ঈশ্বরদর্শন ও তাহার সাধনা সম্বন্ধে তাহাকে উপদেশ দান করিলেন। সে তাহাতে মনোযোগ না করিয়া বার বাব বাধ্য করিতে লাগিল যে তুমি এইক্লণই আমাকে ঈশ্বর

দেখাও। তীহাতে মহর্ষি কোন শিষাকৈ আদেশ ু করিলেন যে ''ইহাকে বন্ধন করিয়া জলাশয়ে বিস-র্জন কর।" শিষ্য তদ্রপ করিলেন। একবার জলে নিমগ্ন হইয়া কিছু অস্থির হইলে তাহাকে উঠাইয়া শইলেন। তথন সে চীংকার করিয়া বলিতে[®] লাগিল "হে সাদক মহর্ষে। আমাকে বাঁচাও।" দাদক পুনর্কার বলিলেন যে "ইহাকে আবার জলে ডুবাইয়া দাও" সে পুনরায় বিসর্জিত 'হইল। গভীর জলে পৈড়িয়া হাবুড়ুবু খাইতে লাগিল। সাদক তাহাকে এইৰূপে কয়েক বার উঠাইলেন ও জলে ডুবাইলেন, আর সে বার বারই সাদকৈর আত্রয় প্রার্থনা করিল। পরে যখন শিষ্য একেবারে তাহাকে জলে ছাড়িয়া দিলেন, সে নিরাশ্য হইয়া নিমগ্ন হইতে লাগিল, তখন "হে পরমেশ্বর! বিপ-দের বন্ধো। এই বিপন্ন অশরণকে দেখা দাও"। এই বলিয়া আর্ত্রনাদ করিতে লাগিল।

ইহা দেখিয়া সাদক তাহাকে পারে তুলিয়া লই-লেন। কিরংক্ষণান্তে স্থান্থির হইলে জিজাসা क्रिलन, " नेश्वरक कि एिथिया १ " रम विलन, " যে পর্য্যন্ত অন্যের প্রতি নির্ভর করিয়াছিলাম, সে পর্যান্ত আবরণ ছিল, যখন অনন্যগতি হইয়া সর্ব্যক্তঃকরণে তাহার শরণাপন্ন হইলাম ও দীন ভাবে প্রার্থনা করিলাম, তথন হৃদয়ের দ্বার মুক্ত হুইল, অন্তরে দৃষ্টি করিয়া তাঁহাকে দেখিতে পাই-লাম, আর ভয় ভাবনা রহিল নাও আপনাকে নিক্রপায় দেখিলাম না।" সাদক বলিলেন, " যত-ক্ষণ তুমি আমার আশ্রম প্রার্থনা করিতে ছিলে ততক্ষণ তুমি মিখ্যাবাদী ছিলে, এই ক্ষণ যে বিশ্বা-সের আলোক পাইলে তাহা যত্বপূর্বক রক্ষা কর।"

>৫। আবু ওস্মান নামক দরবেশকে কেহ নিমস্ক্রণ করিয়াছিল। তাঁহাকে পরীক্ষা করাই নিমন্ত্রণ-

কারীর উদ্দেশ্য ছিল। যথন আবু ওস্মান নিমঞ্জে-্তার মারেতে উপনীত হইলেন, তথন সে তাঁহাকে ভিতরে যাইতে দিল না এবং বলিল "এই ক্ষণ আর ভোজনের কিছুই অবশিষ্ট নাই।" তিনি ইহা শুনিরা ফিরিয়া চলিলেন। কতক দূর পথ চলিয়া -গেলে আবার সেই ব্যক্তি আসিয়া তাঁহাকে ডাকিয়া নিল। পুনরায় যখন তিনি ছারে উপনীত হইলেন তথন আবার তাঁহাকে ভিতরে প্রবেশ করিতে দিল নাও "আর কিছুই অবশিষ্ট নাই চলিয়া যাও" বলিল। এই প্রকার কয়েক বার তাঁহাকে অহ্বান করিল ও পুনর্কার ভার ইইতে विलाय कविता निम । श्रीतांश्य निविष्त कविन " আর্য্য! আমি আপনাকে পরীক্ষা, কবিতে-हिलाम, এইकन मिथिलाम य आशनात हित्रक অত্যন্ত প্রশংসনীয়।" তিনি বলিলেন " এই যাহা ভূমি দেখিলে ইহাতো কুকুরের স্বভাব, কুকুরকে

ভাকিলে দৌড়িয়া আসে, তাড়াইয়া দিলে পলাইয়া ষায়।"

১৬। একদা ওমর পীডিত ছিলেন। তথন তাঁহার ভাজা মৎস্য থাইবার ইচ্ছা হয়। হজ্রত নাফা বলেন যে " দেই সময়ে মদিনাতে মংস্য অত্যন্ত ছর্ঘট ছিল। অনেক চেষ্টা অনুসন্ধানের পর কিছু মংশ্য তাঁহার জন্য ক্রন্ত করিয়া আনয়ন করি। উহা ভাজা করিয়া তাঁহার নিকটে উস্থিত করিলে এক জন ভিক্ক উপনীত হয়, তথন ওমর বলেন 'এই মংস্য⁴ভিকুককে দেও।' আমি বলিলাম ''তোমার মৎসা থাইবার অভিলাষ হইয়াছিল আমি বহু অমুসন্ধানে ইহা আনিয়াছি, ইহা থাকুক ভিক্ককে আমি মংস্যের মূল্য দান করিতেছি।" তিনি বলিলেন 'না মংসাই দেও।' আমি অগত্যা **মংশ্যই ভিক্ষুককে দিালাম** এবং তাহার পশ্চাতে

শশ্চাতে যাইর। মূল্য দিরা তাহা হইতে মংস্য কেরত লইরা আদিলাম এবং ওমরকে বলিলাম আমি ভিক্কককে মংস্যের, মূল্য দান করিরাছি। ওমর বলিলেন 'এই মংস্য ও তাঁহাকে দান কর মূল্য যাহা দিরাছ পুনগ্রহণ করিও না। মূহাআন' মহম্মদ বলিরাছেন যে যে বস্তুর প্রতি যাহার লোভ হর, সে যদি সেই বস্তু ক্রম্বর উদ্দেশ্যে দান করে জ্মার তাঁহার প্রতি প্রসন্ন, হ্রেন।'

১৭। আবৃহনিফা বলিরাছেন "বে যথন আমি
দাউদভারির ঘারে উপনীত হইলাম," তথন এই
ধ্বনি কর্ণ গোচর হইল যে তুই একবার গাঁজর
চাহিয়া ছিলি তাহা আমি তোকে দিয়াদ্বি, এইক্ষণ
থোরমা চাস ইহা কথন খাইতে পাবি না।
পরে আমি ভিতরে প্রবেশ করিয়া দেখি তাঁহার
নিকটে অন্য কেই নাই। তিনি আপনা আপনি

এই কথা বলিয়াছিলেন। থোরমা ফলের প্রতি তাঁহার লোভ হইয়াছিল।

১৮। ফকির আহনফ্কে কেহ গালি দিতে দিতে তাঁহার সঙ্গে সঙ্গে চলিয়াছিল। তিনি নীরব ছিলেন। বখন তিনি তাঁহার বন্ধুর বাড়ীর নিকটে পহছিলেন, তখন দণ্ডায়মান হইয়া বলিলেন "ভাই! যদি আরও কিছু গালি ভ্রবশিষ্ট থাকে, এখানেই শেষ করিয়া লও, আমার আত্মীয়ের বাড়ী নিকটে, তিনি জানিতে পাইলে তোমাকে আক্রমণ করিবনে। আরু গালি দিতে পারিবে না। ভ্রমিয়া সে অবাক্।

১৯। চারি জন দরবেশ কোন মস্জিদে নমাজে প্রবৃত্ত হইর। ছিল। প্রত্যেকে বিন্মুভাবে যথা-রীতি নমাজ করিতেছিল। ইতিমধ্যে এক ব্যক্তি আদিয়া আঁদা (ডাক নমাজ) করিতে লাগিল। ভাহাতে সেই চারি জানৈর এক্জন বলিয়া উঠিল যে "তোমার আঁজার সময় আছে, উহার এ সময় নয়।" তখন দিতীয় ব্যক্তি বলিল "এ কি করিলে, ন্মাজের সময় কথা বলিলে, নমাজ বে অসিদ্ধ হইল।" তৃতীয ব্যক্তি বলৈল। ''আড়ঃ! ইহাকে কেন অনুযোগ কর, নিজেকে নিজে ভর্মনাকর।" ত্রুন চতুর্থ বলিয়া উঠিল, ধনা ঈশ্বর! এই তিন ব্যক্তির অবস্থা আমার হয় নাই।" এইরূপ কথা বলাতে চারি জনেরই নমাজ অশুদ্ধ হইল। প্রস্পারের দোষবাদিগও অধিকতর প্রপ্রান্ত হইয়া গেল। যে জন নিজের দোষ দর্শন करत, त्मरे वाकि थना ! व्यत्मात्र मारवृत्र श्रिक যাহার দৃষ্টি, দে আপনার জন্য তাহার সেই দোষ ক্রের করে। যথন তোমার মন্তকে অনেক কত আছে, তখন তোমার নিজের প্রতি দয়া

করা কর্তব্য। ক্ষত রেপগের ক্লতি করাই তাহার 'প্রতীকার।' আহত ব্যক্তি দয়ার পাত্র। যদি তোমাতে সেরপ দোষ থাকে নিশ্চিন্ত হইও না। জানিও তোমার সে দোষ পরে ভোমানার প্রকাশ হটয়া পড়িবে। यদি ঈশ্বর হইতে তুমি অভয়বাণী প্রৰণ না করিয়া থাক, তবে কেমন করিয়া আপনাকে সুখী ও ৰিশিক্ত মূনে করিভে**ছে** ? যত কাল তুমি অভয় লাভ ন। কর, সে পর্যান্ত নিজ খ্যাতি অফুসন্ধান করিও না। অগ্রে ভর হইতে দূরে থাক, পরে শাস্তি বদন বলিও। তুমি নিজে পতিত হঁহও না, তাহা হইলে তোমার জীবনই অনোর क्ना लेशरम्भ इहेट्ब। त्म लाक्षी विष शान कतिन. ভাহা দেখিয়া তুমি বিষশান করিও না, তুমি শৰ্করা ভক্ষণ কর।

সিদ্পিৰোহন রকিত হারা মুক্তিত ও প্রকাশিত।

